॥ छ्यय श्रीनवकार मंत्र पारम्भः ॥

णमो व्यक्तिंताणं॥ णमो सिद्धाणं॥ णमो व्या यरियाणं॥ णमो उवज्जायाणं॥ णमो द्योप सबसा हूणं॥ एसो पंच णमुकारो॥ सब पावप्पणासणो॥मेग द्वाणं च सबेसिं॥ पढ्मं इवड् मंगवं॥ इति नमस्कार॥

॥ श्रीनवकार-मंत्र छद ॥

पढो मंत्र नवकार, सदा संकट उवारे। पढो मंः
नवकार, ताव तेजरो निवारे। पढो मंत्र नवकार, जाव जंकार होवे जरपूरा। पढो मंत्र नवकार, कायर जव्ह हवे सुरा। पढो मंत्र नवकार, क्रायर जर्र

पढो मेंत्र नवकार, दाती⊆ हर निवार ! पढो मंत्र न वकार, मोक्त मारगकुं नाते । पढो मंत्र न⊒कार, जूर ंक कुं टार्से । जपीये मंत्र जिनवर नखो, दिन दिर

ै , इभको चड़े । नवकार मंत्र पट्टीयां पठें, प्रार्ष व्योग मंत्र काट्टे कु पढ़े ॥ ? ॥ पिंगल पढ़ेजि पारसी तयोज नरक मर्बट । पंच पट नवकार थी, सद्दा करें सात सागरनो आउखो, पढ्त पाप सव जाय। काच सगपण कुटुंबका, मिल १ वीठक जाय। साची सगपण धर्मको, सो अविचल जेलो थाय। च्यारू शरणा ए सही, और न शरणो कोय जे नर नारी आदरे ते अंदर्ग अमर पद होय॥१॥

ळाणंद । सातुं अक्तर ए पढो, पढो पंच चितलाय

॥ इति नवकार मंत्र छंद समाप्तम् ॥

। ॥ अय आनुपूर्वी गुणनेरी विधि ॥

र है वहां णमो अरिहंताणं कहना।

२ वे वहां एमो सिद्धाएं कहना।

३ वे वहां एमो आयरियाएं कहना।

४ वे वहां एमो जवन्कायाएं कहना।

य वे वहां णमो लोए सबसाहणं कहना।

						नुपूर्व	
7	-13-63-	\$ emanded	BATTAN	Page 162	4	STATE OF	1
!	á	3	В	ų	9	₹	2

m.en.	15-61	₹	m.m.#	1.472.473	200	- m-m	
?	á	3	В	ય	9	3	

В Ų

ß

B ų ą B

9

3

u а

u

ą ą

3

a

3

ą

ą

Ę

ą

			3	d	
23	MEN'S	P439	3 TO 10	MOVE	2
			8		
			é		
_	_		- 7		

n	ध्रो	च्यानुपू र्वी
AL LANGE	W 23	ale man

11

ų

ų ų

₹

ą

Ę

? ų

ช

ą

ช

3

2

þ Я

8

Я হ

B

2 B

u ų

ų

ų

ų

॥श्री ञ्चानुपूर्वी॥

_	-					٠.,						
STE OFF.	ಹ ಕ	ന്ന	ų Į	బాబా	₽ ©	£	ಹಾಚ	TO CO	Ę	57°C	nene.	•
TENET.	3	8	ñ	ų	В	1	3	२	ų	3	В	
retrote	R	3	m⁄	य	В	MANTENTO ED	হ	3	ų	3	В	1
Pribat	3	'n	ā	ų	8		3	ų	হ	३	ਬ	1
Tower.	m'	3	হ	Ų.	В	S. CPACE	ų	3	হ	3	ਬ	1
September 1	ર	3	र	ų	В	Statesteres as steater	য	ų	. 3	३	В	Ì
Strott	३	হ	3	ų	8	byejese	ų	२	1	3	В	1
			$\overline{}$			-		4	•			-
Š	<u> </u>	S.CO.		T.O	CO.	೯೭	200	25.5	ATTACT.	G.G.	ಶಾಲ್	2
restated		363.5	9	æ	e e	E TAKE	2025	7676	G G	and a	ಶಾಶಾ	2
manuarahahaha	₹ 2/22.5	3		२	8	E TAKE	र व	3		3	8.	1
to the state of th			3			E TAKE			ច			
traterireterisateras/aterit	3	ą	9 ਪ	হ	8	E TAKE	হ	3	ए	₹	8	
individualisativativativital dividina	~ 3	₹ ?	य य	হ	8	E TAKE	ex m	अ	บ น น	<u> </u>	8	
apainan apainapanapahahanapanapahahahah nyapanapanapanahanapahahahahanahanakah	~ ~ ~	₹ ~ ¥	य य य इ	হ হ হ	8 8	೯೭	स ल स	m x z	ण य य श	<u>२</u> २	ਬ ਬ	

		ſй			ě			₹0		
3	२	8	4	3	0	?	य	4	8	3
য	1	ย	ų	3	4	হ	7	ų	В	3
~	ย	२	ų	n/	di-di-	3	ų	ર	В	3
ย	3	R	ય	æ	-	ч	?	श	В	3
হ	В	~	ય	æ	348348	খ	ų	?	B	3
B	२	3	ų	3	Designation of the	4	२	3	В	3
ADMID I	re en en	\$ \$	L STACE	AD-US	The state of	en en en	1	\$2 mm	ATTACES	ALAN-
₹.	В	ų	२	3	4	য	В	ų	1	₹
8	3	ų	२	3	0	8	ঽ	ų	2	æ
3	ų	8	२	3	2	२	ų	Я	?	ş

॥ श्री चानुपूर्वी॥

		१३ ·			ê			85		
3	३	В	ų	হ	1000	3	n	Ų	В	হ
३	3	B	ų	হ	distrib	197	₹	ų	æ	হ
3	ਬ	m	य	ম	was	3	ય	na/	ਬ	হ
8	3	na.	य	R	distribution of september of the septemb	ų	3	m	ਬ	হ
R	ีย	₹	य	थ	la fallefe	117	ų	3	ਬ	হ
ีย	13	1	य	হ	Partere!	ų	ঽ	?	ਬ	হ
-	ತಾರಾವ	****	ASSES!			J. C. C.			23.634	3 G
		रथ			2			१६		
1	8	रथ	ર	হ	2	3	ধ	१६	₹	হ
~ 8	8				2		ध		,	
2 8 2 C	8 र ए	ų	3	হ	2	R		14	₹	হ
~ 2 ~ 2	8 २ ५	<u>थ</u>	W 1W	হ	2	8	Ą	य	₹ ₹	হ
~ x ~ x x	8 2 4 2 4	ਪ ਪ ਬ	מי ומי ומי	र र र	2	m 20 100	ž Ž	य य ४	? ?	र र र
	8 2 Y Y Y Y Y Y Y	ਪ ਪ ਬ ਬ	מי ומי ומי ומי	र र र र	erner servers errette ersetts ersetts ersetts erretts erse erse	R 18 12	in zi in	ਪ ਪ ਲ ਲ	? ? ?	र । स । स । स

॥थी खानुपूर्वी॥ १७ 53 B ζ ą 8 ą ą ų ų a 8

c

0	В	ą	य	ų	3	TATE OF	ų	3	য	В	7
		LET-ATS	र्त	किन्छ <i>े</i>	249,4	6	100	€ 10°	50 20	200	Section 1
100	ı	ង	ų	₹	3	É	3	Я	ų	য	13
10	8	2	u	3	3	9	B	3	4	হ	₹.
100	२	ų	В	₹	2	6	3	Ų	В	2	3
us g	-	1-	1	-	1-	١ê	-	ー	1	-	

В

1

॥ खघ चौदीस तीर्घकरों का नाम खिल्पते ॥ र श्रीऋषंत्रदेवजी, **१३ श्रीविम**बनायजी, २ श्रीछजितनाघजी, ेरध श्रीखनन्तनायजी, ३ श्रोतंत्रवनायजी, रए श्रोधर्मनायजी, ४ श्रीचनितंदनजी, १६ श्रीशांतिनायजी, ५ श्रीसुमतिनाघजी, रष्ठ श्रोकुंघुनाघजी, ६ श्रीपद्मश्रज्जो. रुष श्रीखरनाघजी, ३ श्रीसुपार्श्वनाघजी, रए श्रीमद्वीनाघजी, ए भीचन्द्रप्रज्ञी, २० श्रोमुनिसुवतजी, ए श्रीसुविधिनायजी, ११ श्रोनमिनाघजो, १० भीशीतजनाघजी, १२ श्रीरिद्रनेमिनायजी, ११ श्रीश्रेवांसजी, २३ श्रवार्वनाघजी, १२ श्रोवासवूड्यजी, १४ श्रीमहाबीर स्वामीजं ॥ घप २० विहरमानों के नाम ॥

र धीसिनंपर स्वामी, ११ श्रीवज्ञधर स्वामी, २ धीपुगमंपरस्वामी, १२ श्रीवन्डानंदनस्य ३ श्रीवाहुस्वामी, २३ श्रीवंदाबाहुस्वामी,
४ श्रीमुवाहुस्वामी, १४ श्रीमुवाहुस्वामी,
१४ श्रीमुवाह स्वामी,
१४ श्रीमुवात स्वामी,
६ श्रीस्वयंत्रत्रस्वामी, १६ श्री नेमञ्ज स्वामी,
४ श्रीश्रपनानंदस्वामी, १७ श्रीवीरसेन स्वामी,
० श्रीश्रपनानंदस्वामी, १० श्रीमहानद्रस्वामी,
९ श्रीस्रुजन स्वामी, १७ श्रीदेवयस स्वामी,

॥ खद्य ११ गण्धरोंके नाम ॥

१० श्रीविशासघर स्वामी, २० श्रीखजितवीर्य स्वामी

१ श्रीइन्डज्तिजी 9 श्रीमोरीपुत्रजी २ श्री खिन्त्रित्ती ए श्रीखकप्रितजी ३ श्रीवापुत्तिजी ए श्रीखचडज्रतिजी ४ श्रीविगत स्वामीजी १० श्री मेतारजजी ५ श्रीमुचर्मा स्वामीजी ११ श्रीप्रजासजी ६ श्रीमंजीपुत्रजी

ा श्रघ-१६ सतियों के नाम ॥ र श्रीब्राह्मीजी : १० श्रीचेत्रणाजी 🧸 २ श्रीसुन्दरीजी . (चुलाजी) ११ श्रीशिवाजी (सेवाजी) ३ श्रीकौशखाजी ं शीखवती ४ श्रीसीताजी ११ श्रीपद्मावतीजी **५ श्रीकृन्तिजी**ः **१३ श्रीमृगावती**जी ६ श्रीडौपदीजी १४ श्रीसुलसाजी ७ श्रीराजमतीजी १५ श्रीदमयंतीजी ण्यीचन्दनवासाजी १६ श्रीप्रजावतीजी ए श्रीसुनदानी इति १६ सतियों के नाम समाप्तम् । यह १६ सतियों खोर उत्तम पुरुषों को हमारी

त्रिकास वारम्बार वंद्णा नमस्कार होजो ॥ ॥ व्यारूयान के प्रारम्न की स्तृति॥

वीरहेमाचलसे निक्सी, युरु गीतम के श्रुत कुंच दुसी है। मोह माहाचल जेंद चली, जगकी जमना

सव हर करी हैं॥ ङ्वान पर्याद्धि माय रखी, वह जंग

३ श्रीबाहु स्वामी, र३ श्रीचंदाबाहु स्वामी, ४ श्रीसुवाहु स्वामी, १४ श्रीचुजंग स्वामी, ५ श्रीसुजात स्वामी, १५ श्रीईश्वर स्वामी,

६ श्रीखर्यप्रच्यामी, १६ श्री नेमप्रज स्वामी, उ श्रीक्षपज्ञानंद स्वामी, १७ श्रीवीरसेन स्वामी, ए श्रीखनंतवीर्यस्वामी, १० श्रीसहाजझ स्वामी, ए श्रीस्रप्रजव स्वामी, १७ श्रीदेवयस स्वामी,

४० श्रीविशासधर स्थामी, २० श्रीखजितवीर्य स्थामी

॥ व्यय ११ गव्यधरें के नाम ॥
१ श्रीइन्डचूतिजी छ श्रीमोरीपुत्रजी
॥ श्री व्यक्तिचूतिजी छ श्रीव्यवस्त्रप्तिजी
३ श्रीवायुजूतिजी छ श्रीव्यवसद्गतिजी
४ श्रीविगत स्वामोजी १० श्री मेतारजजी
५ श्रीमुघर्मा स्वामीजी ११ श्रीवजातजी
६ श्रीमंजीपुत्रजी

1.1 ॥ अथ १६ सतियों के नाम ॥ र श्रीब्राह्मीजी . :

१ श्रीमुन्दरीजी ३ श्रीकोशव्याजी

ष श्रीराजमतीजी

ए श्रीसुन्नडानी

ण श्रीचन्दनवालाजी

११ श्रीशिवाजी (सेवाजी) शीलवती

११ श्रीपद्मावतीजी

(चुलाजी)

१० श्रीचेत्रणाजी -

४ श्रीसीताजी **५ श्रीकृन्तिजी** ६ श्रीडीपदीजी

१३ श्रीमृगावतीजी

१४ श्रीसुलसाजी

रए श्रीदमयंतीजी

१६ श्रीप्रजावतीजी इति १६ सतियों के नाम समाप्तम् ।

यह १६ सतियों और उत्तम पुरुषों को हमारी त्रिकाल बारम्बार बंदणा नमस्कार होजो ॥ ॥ व्याख्यान के प्रारम्ज की स्तुति॥ वीरहेमाचलसे निकसी, यह गौतम के श्रृत कूंन ढ़वी है। मोह माहाचल जेद चली, जगकी जम्ता सव इर करी है।। क्वान पयोद्धि माय रखी, वह जंग ३ श्रीवाहुस्वामी, 💛 १३ श्रीचंदाबाहु स्वामी, ष्ठ श्रीसुवाहु स्वामी, १४ श्रीजुनंग स्वामी, **५ श्रीसुजात स्वामी, १५ श्रीईश्वर** स्वामी, । ६ श्रीखयंत्रजस्वामी, १६ श्री नेमवज स्वामी, B श्रीऋपनानंद स्वामी, १९ श्रीवीरसेन स्वामी, श्रीखनंतवीर्य स्वामी, १० श्रीमहाजङ स्वामी, ए श्रोस्रप्रजब स्वामी, रए श्रीदेवयस स्वामी, र श्रीश्टबत्त्वतिजी २ श्री अभिन्नतिजी

६ श्रीमंकीपुत्रजी

१० श्रीविशासधर स्वामी, १० श्रीख्रजितवीर्ष स्वामी l) व्यथ ११ गण्धरोंके नाम ॥ ३ श्रीमोरीपुत्रजी ० श्रीद्यकम्पितजी ३ श्रीवायुजूतिजी ए श्रीयचन्नजृतिजी ४ श्रीविगत स्वामोजी १० श्री मेतारजनी ५ श्रीसुधर्मा स्वामीजी ११ श्रीप्रवासनी

र श्रीब्राह्मीजी रण् श्रीचेत्रणाजी २ श्रीसुन्दरीजी (चूलाजी) ३ श्रीकोशव्याजी ११ श्रीश्विजाजी (सेवाजी) ४ श्रीसीताजी शीलवती ५ श्रीकुन्तिजी १२ श्रीपद्मावतीजी ६ श्रीज्ञीपदीजी १३ श्रीमृगावतीजी

ा अय १६ सतियों के नाम ॥

७ श्रीराजमतीजी

प्रीचन्दनवासाजी

ए श्रीसुनज्ञाजी १६ श्रीप्रनावतीजी इति १६ सतियों के नाम समाप्तम् । यह १६ सतियों ख्रोर उत्तम पुरुषों को हमारी त्रिकाल वारम्वार वंदणा नमस्कार होजो ॥

१४ श्रीसुलसाजी

रूप श्रीदमयंतीजी

॥ व्याख्यान के प्रारम्भ की स्तुति॥ वीरहेमाचबसे निक्ती, गुरु गौतम के श्रृत कूंम ढबी है। मोह माहाचब चेद चबी, जगकी जमता सब हर करी है॥ ज्ञान पयोदिष माय रखी, बहु जंग णमी खंजली निज शीप धरी है।। झानसुं नीर जरी सिलला, सुरधेलु प्रमोद सुलीर निधानी। कर्म जी व्याधि हरन्त सुधा, खधमेल हरन्त शिवा करमानी॥ जैन सिद्धान्तकी ज्योति बढी, सुरदेव स्वरूप सुल

दायकनी। लोक श्रक्षोक प्रकाश जयो, मुनिराज व-खानत है जिन वानी॥ सोजित देव विषे मध्या, श्रक्ष्टुन्द विषे हाशी मंगलकारी। जूप समूह विषे वली, चक्रपति प्रगटे वल केशव जारी॥ नागीन में धराणीन्द्र वनो, श्रक्ष है श्रासुरीनमें चवनेन्द्र श्रय-

तारी । ज्युं जिनशासन संघ विषे, मुनिराज दीवे

श्रुत ज्ञान जएकारी ॥ इति खुजम ॥ क्रिक्ष्य कर्मा ॥ अथ श्रीसामायिक सुन प्रारंभ ॥ ॥ अथ तिक्खुतोरी पाटी खिरूपते ॥

ा अय ।तक्खुतारा पाटा खारूपत । तिक्खुत्तो खायाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि णमंसामि सकारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं

🔍 वयं चेड्यं ॥ पञ्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥१॥

॥ इप्रय इरिपावहिया की पार्टी लिख्यते॥ इहाकारेण संदिसह जगवन् ! इरियावहियं प-फिक्रमामि, इहं इच्छामि, पिक्कमिछं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणा गमणे, पाणकमणे, वीयक्रमणे,

ः हरियक्समणे, जंसाजतिंग, पणग दग मटी मकना, सं-।ताणा, संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, विदेदिया, तेईदिया, चलरिंदिया, पंचिंदिया, अजि-हिया, वित्तया, खेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परिया-ंविया, किलामिया, जद्दिया, ठाणाजठाणं संकामिया, द्भजीवियाज, ववरोविया, तस्स मिहामि डुकरुं ॥१॥ 🕯 ॥ छ्रथ तस्स उत्तरीनी पाटी जिरूपते ॥ तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसद्धी करणेणं, पावाणं कम्माणं णिग्घाय-णद्राए, ठामि काठस्तग्गं॥ अन्नत्य कससिएएं, नी-सिसएणं, खासिएणं, ठीएणं, जंजाइएणं, उद्गएगं, वायनिसम्मेणं जमलीए, वियमुहाए, सुहुमेहिं अंग-्रसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमोहिं दिट्ठि- संचालेहिं, एवमाइएहिं खागारेहिं, खनगों, खि वंताणं, णमुकारेणं न पारेमि, तावकायं ठाणेणं, मो योणं काणेणं ख्राप्पाणं, बोसिरामि ॥१॥

॥ ब्राय खोगस्स की पार्टी छिरूपते ॥

राहियो, हुक्त में काउस्तम्मो, जानव्येरिहतार्धं, जग

क्षोगस्त जङ्गोत्रगुरे, धम्मतित्वयरेजिये। स्र रिहंते कित्तइस्सं, चडवीसं पि केवली ॥ र ॥ उसर मजियं च वंदे, संजव मजिएं दएं च सुमई च ॥ पंड मप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ १॥ सुविधि च पुष्कदंतं, सीळल सिझंस वासु पुझं च॥ विमय मणंतं च जिलं, धम्मं संतिं च बदामि ॥ ३॥ कुं थ्यरं च मर्लि, वंदे मुणिसुबयं निमिजिणं च ॥वंदारि रिट्रनेमिं पासं तह वरूमाणं च॥ ४॥ एवं भए छ नियुद्या, विद्य रयमञ्जा पद्दीण जरमरणा ॥ चन्नवी संपि जिल्वस, नित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ए॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए खोगम्स उत्तमा सिद्धा ॥ श्रा े रेग बोहिखानं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेर

गंजीरा, सिष्ठा सिर्छि मम दिसंतु ॥॥॥ इति ॥ ॥ अथ सामायिक लेवण की पाटो लिख्यते॥ करेमि जतं सामाइयं, सावज्ञं जोगं पद्मकामि, जावनियमं (मुहूर्च) पद्मुवासामि, प्रविद्ं, तिविहेणं, न करेमि न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स जंते, पिक्झमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १॥ ॥ अथ श्रीनमुत्युणं की पाटी लिख्यते॥

नमुत्युणं अरिहंताणं, जगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सर्यसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससी-हाणं, पुरिसवर पुंकरीयाणं, पुरिसवर गंथहत्यीणं, बोगुचमाणं, खोगनाहाणं, खोगहियाणं, खोगपईवाणं, खोगपन्कोयगराणं, अनयद्याणं, चक्खुद्याणं, मगग द्याणं, सरणद्याणं, (जीवद्याणं) बोहिद्याणं, ध म्मद्याणं, धम्मदे सियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसार हीणं, धम्मवर चाउरंत चक्कवहीणं, दिवोताणं, सुर सबदरिसीण, सिव मयल मरुख मणत मरुख सद्वावाह मपुणराविचि, सिद्धिगड् नामधेप, वार्ष संपत्ताण, नमो जिणाण, जिळ्जवाण ॥ इति ॥

। छाथ सामायिक पारवा की पाटी जिरूयते। नवमा सामायिक व्रतना पैच खड़यारा जाणी यदा, न समायरियदा, तंजहा ते खालोडं, मणडुप्प णिहाणे, वयड्रप्पणिहाणे, काय ड्रप्पणिहाणे, सामा-इयस्त श्रकरणयाप्, सामाइयस्त श्रणबुद्रियस्त करः णयाप तस्त मिच्छामि इक्क ॥ सम्मायिक ने विषे दश मनना, दश वचनना, धारे कायाना, ए वर्तीस दोप माहेंसो कोई दोप लाग्यो होय तो मि॰ च्ठामि ५कमं॥ व्याहारसंज्ञा, जयसंज्ञा, मिहणसंज्ञा, ि. रूसंका, य चार संका माहेखी कोई संका करी डीय तो मिच्छामि इकनं॥ स्त्रीकथा, राजकथा, जक्त-

वित्रह, उजमाणं, जिषाणं,जावयाणं, तिलाणं, तार याणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोत्रगाणं, सदसूणं

णगइ, पइहाणं, ऋष्पितृहय, वरनाणं, दंसणधराणं विकार सन्द्रमणं जिल्लाणं जानगणं विकाणं तार



मनमें गुणनी (१) "नमी व्यख्तियाण" मनमें कहक् काउस्सम्म पारनी। पीठे "(१) क्षोगस्त" की पार्ट प्रगट कहणी। पीठे(१) "क्षेत्रिमन्ति" की पार्टी "जा नियम" सुपी कहीने व्यागत मुहूर्च घाताणा हुवे ति घाताणा, पीठे " पञ्जवासामि" से खेकर " व्यप्पार वोसिरामि" सुधी पोठ कहणो, पीठे नीचे वैठक

रयुणं की पाटी दोय बार कहाणी, दुजे नमुरपुणं श्रंतमें जहां 'ठाणं संपत्ताणं' व्यावे उस स्थानण " ठाणं संपाविञ्ञं कामस्स एमो जिलाणं जिव्रज्ञाणं पं" ऐसा वोल्ला, पीठे व्यासन माथे वैसीनें सामा

मावो गोमो ऊजो राख दोतुं हाथ जोम्कर "नष्ठ

करना, या शिखा हुट्या झान याद करना, या नव चोल चाल घोकड़ा सीखना, या चितारना। इसी त रहेंसे पर्म सम्बन्धी झान ध्यान करके सामाधिकर

यिकका काल पूरा ना हुवे जहां तक ज्ञान-ध्या

काल पूरा करना । गुरु महाराज विराजता होवे आ



" न जवइ तस्स मिच्छामि पुकरं "सुधी कहा तीन वखत नवकार मंत्र गुणके सामायिक विका

करे तो दोष।

यिक करे तो दोष। (त) सामायिक में नियाणों करे तो दोष। ्रो) सामाधिक में गुम्मो, रीस, क्रोधादिक करे तो

दोष ।

करना।

॥ इति सामायिक पारने की विधि समाप्तम्॥ ॥ ब्राय सामायिक के ३२ दोप जिल्यते॥ ॥ १० मन के दोप॥ (१) विना अवसर से तथा अविवेक से साप्रायि

(२) जहा की चिं के छार्थे सामाधिक करे तो दोप। (३) व्यापरे साज व्यथें सामायिक करे तो दोप। (ध) गर्न (छहंकार) सहित सामायिक करे तो दोप (प) नरतो, जयसे पूजतो सामायिक करे तो दोप (६) संशय सहित फल प्रते संदेह रखकर सामा

-- S

(ए) सामाँचिक में देवगुरु धर्म जपगरणकी खविनय असातना करे तो दोप गं <u>.</u> (रण) नेगारी री परे समायिक करे तो दोष। ॥ १० चचन के दोष ॥ (११) सामाचिक में जुरु बोझे तो दोष। रे (११) सामायिक में विना विचारी नापा बोले तो दोप। (१३) सामायिक में गाल गीत ख्याल, इत्यदि संसार r F ं सम्बन्धी गालो करे तो दोष। (१४) सामायिक में घणे जोर से इसरे का मन इसे हें वेसा वोचे तो दोप। । (१५) सामायिक में कबह करे तो दोप। ें (१६) तामायिक में च्यार प्रकार की विकथा करे हें तो दोप। ८ (१९) सामायिक में हांसी, मश्करी, बहुा करे तो दोप। (१६) सामायिक गरुवन करके उतावडो उतावडो धगुड बोंडे. पटे. गुषे नो दोष । १९(१ए) मामायिक में खयोग्य वचन, खयुक्ति जापा बोझे नो दोष।

(२०) सामायिक में व्यवती को सत्कार, सन्मान देवे अ (व्यवती ने व्यावो, पधारों कहें) तो दोप। ॥ १२ का अस होप॥ (२१) सामायिक में व्यजोग व्यासन से बेठे, जैसे वि ठासणी मारीने, पाँच पर पाँच राखी ने, पेस व्यक्तिमान का व्यासनसे बैठे तो दोप।

(११) सामायिक में छहियर छासन वैवे तो दोप। (२३) सामायिक में विषय सहित हुए। जोवे तो दोप (१४) सामायिक में सावच तथा घर का काम के तो दोप। (१५) सामायिक में विना कारण खोटो क्षेकर तर्थ 'इसरे को आधार खेकर बेर्जे तो दोप। (२६) सामायिक में थंग (शरीर) मोर्फे तो दौप। (२९) सामायिक में शरीर बार बार संकोचे या पर्सा नो दोप। (रिG) सामायिक में हाथ पाँवरा कड़का काढ़े (मीटें

तो दोष ।

(३०) सामायिक में शरीर रो मैख जतारे तो दोप। (३१) सामायिक में विना पुंज्या खाज खुणे, या विना पुंच्या हाले चाले तो दोप। (३१) सामायिक में विना करण इसरे के पास वैया-वच करावे तो दोप। ॥ इति सामायिक के वत्तीस दोप समाप्तम् ॥ ॥ ष्र्यथ चोराञ्ची लाख जीवायोनि पारंजः॥ सात खाख पृधिवीकाय, सात खाख अप्काय, सात साख तेनकाप, सात साख वानकाय, दश साख प्रत्येक वनस्पति काय, चउदे खाख साधारण वनस्प-ति काय, ये लाख वेइंडिय, वे लाख तेइंडिय, वे साख चौरिं दिय, चार साख देवता, चार साख ना-रकी, चार साख निर्येच पंचें द्विय, चछदे साख मनुष्य, एवं चौराशी लाख जीवायोनि मांहे. महारे जीवं जे कोई जीव हुम्सो होय, हुमायो होय, हुमता प्रत्ये

(१ए) सामायिक में निष्ठा खेवे तो दोप ।

खनुमीयो हूर्य, ते सर्व मने वचने कार्योप करी ह गरे खाल बीवीस हजार एक सोवीशे (रेटरेशेर्रेश अकारे तस्स मिच्छामि खक्क ॥ इति॥

॥ ध्रथं छातारहं पापस्यान प्रारन्।। पहले प्राणातिपात, इजे नृपाबाद, तीजे अर

त्तादान, चौथे मैंथुन, पांचमें परिधह, उद्वे कीपे, त तमें मान, आठमें माया, नवमें क्षोज, दशमे रा इंग्यारहमें द्वेप, घारमें कलह, तेरमें व्यच्याच्या चौदमें पेशुन्य, पत्तरहमें रित व्यरित, लीलहमें पर रिवाद, सत्तरहमें माया मोतो, व्यठारहमें मिष्यार इाल्य। यह व्यठारह पाप स्थानक माहि महारे जी जे कोई पाप सेन्युं होय, सेवरान्युं होय सेवता प्र व्यजुमोर्युं होय ते सर्व मने वचने कायाप करी तह मिन्नामि इकमं॥ इति॥

॥ दिनकी छ्यास्तोयणा ॥ ; याज चार प्रहर दिन में जो कोई में जीव वि

राष्यां होय, पृथिवीकायं, ऋष्काय, तेजकाय, वाजकायं, वनस्पतिकाय, जसकाय, ये ठः काय विराध्या होय, हिंसा, जुठ, चोरी, मेथुन, परियह इन करी बतविपय श्रतिचार लाग्या होय, हास्य, रति, श्ररति, नय, शोक, इर्गना, कोध, मान, माया, लोन, राग, देप, मद, मत्तर, अहंकार किया होय, विकथा की हो, रेष पापस्थानक, १५ कर्मादान की छासेवना की हो, रस गौरव, रिक्डिगौरव,सातागौरव सेव्या होय,माया-शब्य, नियाणाशव्य, मिथ्यादर्शनशव्य किया हो, ं व्यार्तप्यान, रोडप्यान प्याया हो,कुस्वम पुस्वमदीला र हो, सात लक्ष पृथ्वीकाय, सात लक्ष अप्काय, सात वाल वाजकाय, सात लाल तेजकाय, दशलाल प्रतेक वाल वाजकाय, सात लाल तेजकाय, दशलाल प्रतेक वनस्पतिकाय, चवदह लाल साधार्ण वनस्पतिकाय, दो लाख वेन्ड्रो, दो लाख तेन्ड्रो, दोलाल चोरिन्ड्री, चारलाख देवता, चारलाख, नारकी, चारडान्त तिर्चन, पंचेन्डी, चवदह लाख मनुष्य की जात, ऐसे उध हार्य द्व, जीवयोनिमं जो विराधना की हो, तम्मिः

तना की होय, अन्य कोई पाप, परिनन्दा की हो, करों को अनुमोधा हो, सर्व मन, वचन, काय से मिद्यामि दक्षने।

॥ ध्रय खामेमि सब जीवेनो पाठ पारंजः॥ खामेमि सब जीवे, सबे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सबजूपसु, वेर मज्झ न केप्पर्ध ॥ र ॥ पवमहं खालोइख निटिच्च गरिह्च दुर्गठिखं सम्म

तिविद्देश पनिकंतो, वंदामि जिथे चन्नवीसं ॥२॥ गायार्थः, में सर्व जीवा को कमाता हूँ, मेरा अपराथ सब

में सर्व जीवों को कमाता हूँ, मेरा व्यपराध सव जीवों कमा करे, मेरा तो सर्व जीवों के उपर मेन्नी जाव है, किसी के साथ वेरजाव न हीं हूं। इसी प्रकार व्यक्ती तरह पाप की व्याखोचना कर, व्यादमसाले निंदा

व्यक्ती तरह पाप की व्यासाचना कर, व्यारमसाखे निंदा कर, युम्सान्वे ग्रृषा च्योग चुगंत्रा कर त्रिविधेश पिर कमतो यको चीवीस जिनवग्को सेंबंद्र्या करता हूँ १९११

्रिनिकी स्थित्व स्थिति है। श्रादयाकास्वस्य ॥

द्या करनी किस कूं कहते हैं ? ठकाय पृथ्वी-काय जाव त्रसकाय तक की हिंसा का खाग करनी,

गंच आश्रव-पहिला जीवकी हिंसा, इजा जूठ, तीजा बोरी, चोंघा मेथुन, पांचमा परित्रह, यह पांच आश्र-का लाग करेना इसी कूं दया कहते हैं।

।। दया करणे की संक्रेप विधि खिखते हैं ॥
 . . दया आठ पोहरकी या ज्यादा एक करण तीन

जोग से, अघवा दोय करण तीन जोग से करे।दया में कपने आदिकी पत्नेवणा करे। दयामें खीखोतीरा, स्रीरा,काचा पाणीरा, रातरा चार असनादिकरा, लाग करे। याने चार खंध पाले, रातका संवर करे, दिनको

सामायिक वन सके जतनी करे, ज्ञान ध्यान करे, बोख योकमा चितारे, नया ज्ञान सिखे, व्याख्यान वाणी के वय्वत में व्याख्यान सुणे, प्रमादमें समय नगमावे, द्यामें पोरसी विचासनो आंवित एकासनों वने जैसो

जिस भांगे से खेवे उसी जांगे से पाले । ऋोर दय

छी को संगटो न करे, सचित वस्तु को संगटोनकरे_।

भारता तेल प्रांतामिल स्ट्रांगाल हेन्स प्रियोश केर्ने त्या के तेले हैं से करें, दया में जर्षाने मूँदे न बोबें, पगरबी ने पहने

मांहि सावय काम तथा आरंज (समारंजी)न करे॥इति॥ ाराहर कर किल्क्सिस मिला की है। ॥ इन्यारमुं पड़ी पूर्ण पीपध लेखे की पाटी ॥ इग्यारम् पोपध वत, असर्षं पार्षं खाइमं साइमंड पद्यस्काण, अवंत्रनुं पद्यस्काण, अमुक मणि सुवर्णनु पश्चवलाण, माला वञ्चग विलेपण्तुं पश्चवलाण, सत्य मुसदादिक सावज्ञ जोगनं पचनवाण, जाव छहोर्त पञ्जवासामि इविहं, तिबिहेलं, न करेमिन कारवेशि मणसा वयसा कायसा, करते नाणुजाणह, मणस वयसा, कायसा, तस्स इति पिकक्तमामि निदारि

पड़ी पृण पोषा पारने की पाटी।

योपध वत के विष

पाछोडं, पोसा रे

गरिहामि खप्पाणं चोसिरामि,॥

ं इस ज्यारमा (छ

यनिचार



हाय तक काड़ी सल सकते हैं.

२ प्रथम जगा पुंज कर उपकरणों का पिरो हण करना.

र पार्रमें थिये विकार अपने ग्रेगा यह हैं पहनता.

४ पोपा में कृत ती खाना पीना नहीं चीहिंगे हच्छा हु ती नहीं सूंघना, चौविहार पास कार्य चाहिये.

ण वीतामें कियो प्रकार का शक्त नहीं रमती है कीतामें प्रकर या सोने बोदीके कोई ती की बन्दर मुखे जिला साख देना बचीवे बाते महि

स्थारा करीते. १ वटन विश्वत वा क्यामाना गोक्यमें सी

२ व्हरतः विश्वतः या वृध्यमाना गोक्य में महि व्हरतन मार्थक माभ्य वद ३ ४ १३ व्यक्ततः विज्ञास्य है

नाम पर १ व्याप्त विशास है इन न किना पर - ११००० समझ पूर्व देवी होती नाम ११वटर नाम १९९७ स्थान ए बंदनपूर्वक आज्ञा लेकर गुरु के पास अगर गुरु न होवे तो स्वतः ग्यारहवाँ वत का ग्रुरु का पाठ

ज्ञार कर पोपध वांधना खेना, तत्पश्चात् पूर्ववत् दोप 'नमोत्युणं' कहना, यहां पोपध वत वांधने का विधि पूरा हुआ.

१० पोपधकाल स्पोंदय से शुरुहोकर इसरे दिन स्पोंदय होने नहां तक आठ प्रहर का पोपा होने.
११ पोपामें दिनको सोना नहीं चाहिये, आर

११ पोपार्ने दिनको सोना नहीं चाहिये, आर कॉम विना हलचल नहीं करना चाहिये.

१२ सामाधिकमें वतलाये हुए कार्य ही पोपा में होसके पर इसरा कार्य नहीं करना चाहिये. १३ शामको या इसरे दिन प्रातःकाल को वमे

श्रावक की श्राङ्गा लेकर प्रत्येक उपकरण श्रीर वस्त्रों
 का पिनलेहण करनाः
 त्या स्वार स्वार स्वार प्रतिक्रमण करनाः
 त्या स्वार स्वार स्वार प्रतिक्रमण करनाः
 त्या स्वार स्वार स्वार प्रतिक्रमण करनाः
 त्या स्वार स

रिष्ठ सुबह शाम दाना वक्त प्रातक्रमण करना.
रिप पोषामें लघुनीत या वकीनीत का काम
पके तो निर्वय स्थानमें जाकर परठना; परठने

जाते समय "व्यावस्सिहिं कहनाः जमीन देसक "व्यक्षजाणह्"कह कर व शकेंडकी व्याका विकरणतन परंठ कर "तीनवार वोसिरेहः वोसिरेह" कहनाः हि

ष्ट्रंदर ध्याते हुए " निसीहि," शब्द कहना राति । समय बहार जाने की जरुरत हो तो शीरपर बक्र हैं कर्र जाना, पर खुल्ले मस्तक या खुल्ले शरीर नहीं जाने

्रिश्च पोपास बक्निनीतका कारण पर्वे ज्ञारूत हैं। क्री गरम जलका योग दिनचका रखना ्रे स् १७ पोपाके १० वा २१ दोप टाल कर ग्रुड्योण

करना. १० चलती हुई परंपरा के अनुसार ग्यार्ट् पोपधनत ज्यादेसे ज्यादे तीन प्रहर दिन चडे वहाँ त

पापधनत ज्यादस ज्यादे तीन प्रहर दिन चढ पहा । से सकते हैं, बाद में दशवां वत हो सकता है रए दशवां वत में जी बहुतती विधि ग्यारह वत के माफिक हें पोपधमें वस्त्र खोर छपकरएँ

वत के माफिक हैं पोषधमें बस्त खोर उपकर्ण मिन्न मर्यादा करना, की हुई मर्यादा से खर्षि या उपकरण कट्टेप नहीं स्थल खोर दिशाकी हुते से ही मर्यादा वांधना खोर उस मर्यादा के हार नहीं जाना.

... २० पोपा में प्रहर रात्रि जाने के वाद उंचे खरसे ॥ घहत जोरसे नहीं चोलना.

११ पोपो लेनेके पहिले चोवीसत्यो करना, पन्तेवणा करनेके बाद चोवीसत्यो करनो, खघुनीतिसें यायकर चोवीसत्यो करनो, निझासे उठकर चोवी-सत्यो करनो, खोर पोपो पारनेकी वक्त जी चोवीस- थो करनो।

विशेष श्री गुरुमहाराजसे धारजो.

संखेपणा ।

घट्जंते छपिछन मरणांतिय संसेट्णा क्तणा याराट्णा पोपधताला पुंडीने, जजार पासवण नूमिका मिनेडेटोने, गमणागमणे पिक्सिमने, दर्जादिक तेयारा संघारीने. टर्जाटिक संघारा पुरुद्दीने. पूर्व तथा उत्तर दिशी पत्रकाटिक खासन बसीने, 'करयक्ष सं-



तला, माणं चोरा, माणं दंसा, माणं मसगा, माणं ाहियं, पित्तियं, किफ्यं, संनीमं, सन्निवाहियं वहारोगायंका, परिसहोवसग्गा फासा, फुसन्ति वं पियणं चरमे हिं, ऊस्तात निस्तालेहिं वोसिरामि चेकट्टु। एम शरीर वोसराविने, कालं ऋणवकंखमाणे वेहरामि, एहवी सहहणा परूपणा तो है फर्सणाए हरीये तेवारे सिद्ध। एहवा अपितम मरणांतिय, संबे हणा, जुसणा, श्राराहणा, पंच श्रहयारा, पयाला जाणीयद्या, न समायरियद्या तंजहा,ते व्याखोऊं, इह बोगासंसव्पर्रगे पग्लोगासंसप्पर्रगे, जी वियासंसप्पर्रगे मरणासंसप्पर्टगे. काम जोगासंसप्पर्टगे, तस्स मिह्नामि

5ुक्क गं‼ २० ॥ इति ॥

ाणुएणं मणामं, धिझं, विसासीयं, समयं, ऋणुमयं ग्रुमयं, जंककरंक समाणं, रयण करंकगजूयं, माण रियं, माणं उन्हं, माणं खूहा, माणं पिवासा, माणं

॥ 'पोपेका १७ दोप खिरूयते॥

ग्य करे तो दोष १। पोषा निमित्ते सरस खाहारकरे तो दोप २। संयोग मिखाने तो दोप ३। केश नल मुपाँरे तो दोप ४ । पहिले दिन यस धोवाने तो दोप ५ । शारीरकी गुश्रुपा करे तो दोप ६ । व्याजरण पहिरे तो दोप 🛭 । मेख उनारे तो दोप छ । निज्ञा क्षेत्रे ती दोष ए। विना पुंजे स्वाज खुणे तो दोष १०। विकया कर नी दौष ११। पारकी निंदा करे तो दौष १ए। द्यनेरी मंमारकी चरचा करे तो दोष १३। जय करे तो दोष १४ । खंग छपांग स्त्रीना निरम्वे तो दोष १५। मंमार को नानों कर नो दोप १६। लुखे मुख बोलेती दौर्य १३ ! संसारकी बात करे तो दोच १० ॥ इति॥ *िज्ञाऽत हैं है हैं।* असंबर पद्मक्षणकी पार्टी ॥ <u> पुरुष देव काय, तार, स्थिरता प्रमाणे, पा</u> ि । वर्ष पर ना राव का का सम्म संग्योस है।

खुदे ब्यादमी की (ब्यसामायिकवंत की)वैयाः



पैया घोकादि । ए सयण-शब्यादि का प्रमाण । १६ द्विलेवण-विलेपण का प्रमाण जैसे नेत्राजनादि। !!

प्रेंज-प्रहाचर्य का धारण करना खत्रडाचर्य्य का स्पाप करना । १२ दिसी-दिशाखोंका प्रमाण। १३ न्हाण-

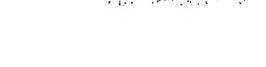
विना प्रमाण न महण करे ॥

मिद्रामि खप्यांगं योगिममि ॥

The said of the said of the second

स्तान का प्रमाण यथा एकवार द्विवार इत्यादिक। ए। चत्तेसु-सर्व वस्तु के वजन की मर्यादा अर्याट

जावार्थ-सूत्रमें यह वर्णन है कि एहस्यी नि समप्रति यथाशकि तृष्णा का निरोध करता हुआ विना प्रमाण कोई जी वस्तु घरण न करे ॥ ॥ चयदे नियम पद्मक्षणेरी पाटी ॥ दशमा देसायगासियं जबनोगं परिनोगं जितनी दिसि (भोमका) मोकसी राखी है तेह मांहे जे डर ब्यादिक री मुजादा कीनी वे ते अपरांत धारणा मुजव प्रवास्यास एकविहं तिविहं न करु मनसा वयमा कायमा नम्म जंने मिक्कामि निंशमि



. ३ साहपोरिस को पश्चवलाण ॥ :

जगाप सूरे साहपोरसि पचक्वामि चर्गा

पि व्याहारं व्यसणं पाणं खाइमं साइमं व्यव^{त्या} भोगेणं र सहसागारेणं श पच्छन्नकालेणं ३ दिसा ^ह हेणं ॥ साहवयणेणं ५ सबसमाहि वर्त्तियागारेणं

४ प्रिमद्द को पश्चक्लाण ॥ **उ**ग्गप सुरे पुरिमहं पश्चनतामि चग्रहिंह व्याहारं व्यसणं पाणं स्वाइमं साइमं व्यवस्यण। ^इ गेषं १ सहसागारेषं १ पच्छन्नकाञ्चेषं ३ दिसा मीहे ४ साहुवयर्षेणं ५ महत्तरा गारेणं ६ सबसमाहि चियागरेखं ३ वॉसिसमि ॥ इति ॥ ४ ॥ ५ व्यथ एकामना विवासनाको पश्चनहाण ॥ ठमग्र सूरे एगासणं वियासणं वश्वस्वासि च विहं पि खाहारं खमणं पाणं स्वाइमं साइमं खंबे स्यना जोगंन र महमागारणं २ सामारिश्रागारेणं रै द्भा टरणयमारेण । गुरुश्रदनुहालेलं ५ पापिहायणिय

योसिरामि ॥ इति ॥ ३ ॥



ए खय चन्नविहार नपवासको पश्चक्ताण ॥ 👆

जगाए सूरे अजनहं पश्चम्बामि चंजविहं[ि]

ब्राहारं श्रसणं पाणं खाइमं साइमं श्रन्नत्यणा जोगेणं १ सहसागारेणं २ पारिट्ठाविषयागारेणं ३ महत्तरा गारेणं ४ सबसमाहिवचियागारेणं ५ वोसिरामि।

ए खय तिविहार उपवात को पद्यक्शाण ॥ जगाए सूरे अजन्धे पद्यक्तामि तिथिहं ^{दि} ब्याहारं ब्यसणं लाइमं साइमं ब्यहरववा जोगेणं र सहसागारेणं २.पारिद्राविषयागारेणं ३ महत्तरागारेणं ४ सबसमाहिवतियागारेखं ५ पाणस्त खेबेण या श्यक्षेत्रेण वा, श्रच्छेण वा, वहुक्षेत्रेण वा, ससिरप्रेण वा, श्वसिरथेण वा, वोसिरामि ॥ इति ॥ ए ॥ १० खय चरम पद्मक्याण ॥ दिवसचिममं पचककामि चन्नविहं पि छाहारं द्यमणं पाणं माध्मं साध्मं खन्नत्यणा नोगेणं **१** स ्रमागारेणं २ महनगगारेणं ३ सबसमाहि वर्तिः

चागारेखं ४ बोसिरामि ॥ इति ॥ र० ॥ ं ११ अय अनिम्रह को पचक्वाण ॥ लगए सरे गंतिसहियं मुद्रिसहियं पश्चनवा-मि चर्राहिहं पि बाहारं बसएं पाएं खाइमं साइमं

ध्यप्तरवर्षा जोगेषं १ सहसागारेषं १ महत्तरागारेणं ३ सबसमाहिवसियागारेणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ११ ॥

१२ व्यथ निविगई को पचक्वाण ॥

जग्गए सुरे निविगाइयं पद्यक्वामि चडविहं पि ं धाहारं खत्रणं पाणं खाइमं लाइमं खन्नत्यणा जोगे-रिषं १ सहसागारेषं १ खेवाझेवेषं-३-गिहरयसंसटेषं इउ उभिवनविवेगेषं ५ पमुचमुक्तिलं ६ पारिहाव-द्वेरीषयागारेखं ७ महत्तरागारेखं ० सबसमाहिव(त्तया-गारेखं ए बोसिसमि ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ श्रय पांचपदारी वंदणा ॥

परिके पर थील रिलंगर्ड। ने बीस नीर्यकरती. , : ुस्टल्स्य प्रामी मिला देवाधिदेवता. ने माहि वर्न-

मान काले वीस विहरमानजी माहाविदेह खेत्र विचरे हे, एक हजार खात खक्तणना धरणहार, व तीस व्यतिशय, पेतीस वाणी करी विराजमान, वोस इन्छना वंदणीक, अठारे दोष यकी रहित, वारे १ करी सहित, अनन्तो ज्ञान, अनन्तो दर्शन, अन्त चारित्र, अनन्तो वख, अनन्तो सुख, दिवपणी जामएक्ख, रफटिक सिंहासण, अशोकश्क, इस

जानपन्त, स्फाटक तिहासण, खराजियक, १९६ पृष्टि, देवदुन्दुनि, तम्र घरे, चंवर विंने, जयन्य दोप क्रोज़ केवली, करकृष्टा नवकोन, केवली, के क्लान केवल दर्शनना धरणहार, सर्व इन्द्र चीम केवल प्राप्त स्वित जाणणहार ॥ सर्वेषा ॥ नर्सु देव च्यरिहं करमाको कीयो चन्त, हुवा सो केवलवन्त, कर

ज्ञष्मारी है। श्रतीसे चोतीसधार, पेंतीसवाणी छुचें समजावे नरनार, पर उपकारी है।। श्रारीर सुन्दरक सुग्ज सो कलकार, गुण हे श्रानन्त सार, दोष परिहा है। कहन निल्लोक ऋषि, मन बच काया करी, हीं २ बारेवार, बॅदणा हमारी है।। १॥ ऐसा श्रीस्टिं



सोग नहीं, दुःख नहीं, दाखिद्र नहीं, कर्म-न

काया नहीं, मोइ नहीं, माया नहीं, चाकर न ठाकर नहीं, जूख नहीं, तृपा नहीं, जोतमें जोत राजमान, सकल कारज सिक्ट करीने चवदे प्र

पनरे नेदे क्यनन्ता सिद्ध जगवन्त हुवा, श्वनन्त खांमें तलालीन, अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, ज्ञा समकित, निरावाद खटल खबगाहणा, अमूर्ती नन्तवीर्य्य व्याठगुणे करी सहित ॥ संवेया ॥ सं करम टाञ्ज, वस करलीयो काल, मुगतिमें रहां म व्यातमा को तारी है। देखत सकल जाव, हुवाहे ज राव, सदा ही खायक जाव, जये व्यविकारी है॥ चल घटल रूप, व्यांव नहीं जवकूप, घतुप स उप, ऐसे सिद्धधारी है। कहत तिखोक ऋषि, वता ए वास भन्न, सदा ही क्रमंते सूर, वन्द्णा हमारी utu ऐसा सिक्ष नगवंत्रज्ञी महाराज? खापकी खाँ नय व्यमातना कीथी होय तो (देविम संबंधि) हा ्रजोर्की, मान मोकी, काया संकोकी, वारंवार छाए

88

स्रमानं हुं, मत्यएण वन्दामि, नमस्कार करूं हुं रिष्ण यार "तिस्रोत्तो" जावत जवेजवे सरणो हो जो"।

इति बीको पद समाप्तप ॥

(३) तीजे पद खाचारजजी वत्तीस गुणेकरी विराजमान, पांच महाव्रत पाले, पांच व्याचार पाले, गंच इन्डी जीते, चार कपाय टाले, नववाम शुड व्रत्यचर्वना पालणहार, पांच सुमिते सुमता तीन गुप्ते गुप्ता, घ्यान संपदा सहित ॥ सर्वेया ॥ गुणहे न्त्रीस पूर, धरत धरम कार, मारत करम ऋर, सुमति वि-चारी है। शुरू सो खाचारवन्त, सुन्दर है रूपकन्त, प्राचीपा सबी सिष्ठान्त. वाचणी सुप्यारी है ॥ छ-धिक मधुर देख, कोई नहा क्षोपे केख, सकक्ष जीवांका सेच, कीरन ध्यवारी है। कहन निजोक ऋषि, हि-तरारी देन सीयः ऐसे आबारज नाकः, यन्द्रणा ह-मारी है ॥१॥ हमा छाचारज स्वायपद्यी जिल्ल परचामी, परम पृथ्य, कस्पनीक, खचित वस्तुका महाराज ? व्यापकी व्यविनय व्यसातना (देवसिप्तं षंधी) कीधी होय तो हाय जोनी मान मोनी काया संकोकी यारंवार व्यापको स्वमानुं हुं, मत्यएण बन्दामि, नमस्कार करूं वं १००० वार "तिखत्तो" जावत जरे

प्रहणहार, सचित्र का त्यागी, वेरागी, महाग्रंणी, ए एका श्रानुरागी, सोजागी ऐहवा श्री श्राचारजजी

नवे सरणो हो जो। इति वीजो पद समाप्तपः॥

(४) चोयो पर उपाध्यायजी पचीस गुणे करी

सहित है, ते पचीस गुण केहवा है? इगिपारा खंगना जणनहार श्री व्याचारंगजी, सुवगमांगजी, गाणांग[,]

जी, समवायांगजी, जगवनीजी, ज्ञानाधर्मकयाजी, ठपामकद्मांगजी, अन्नगम्दमाजी, अनुचरोपाइजी, प्रस्तव्याहरणजी, विपाकसूत्रजी । ए इन्यास खंगनी

द्यर्थ पान मम्पूर्ण जाले, खने (१४ पूर्व) जताद पूर्व 🌉ार्गोयपूर्वः यथिप्रयारपूर्वः, श्रम्निनास्निप्रवादपूर्वः,

ज्ञानप्रवादपूर्वः, सत्यप्रवादपूर्वः, खात्मप्रवादः, कर्मप्रवादः, विद्याप्रवाद, पञ्चखाणप्रवाद, प्राणप्रवाद, अवंध्यप्रवाद कियाविशालपूर्व, खोकविन्डुसारपूर्व, इंग्यारा अंग चऊदेपूर्व ए मूख २५ गुणे करी विराजमान (१२ उपांग जाएं ते) उद्यवाइ, राय पसेणी, जि वाजिगम, पन्नवणा, जंबूदीप पन्नती चंद्पन्नती, सुरज पन्नती, नीरयाविषया, कप्पविनंसीया, पुष्फिचुिलया वन्हि दिशा (४ मृख सूत्र) जत्तराध्ययन, दसवैका लिक, नदीसूत्र, अनुयोग द्वार (४ वेदमंय) दशाश्रु ्रश्नतंस्कंप, बहत्कल्प, व्यवहार, निशिय वत्तीसमी आ त्यक । आद्देइ अनेक अन्य के न्याय जाणनार नातनय निश्चय व्यवहार, चार प्रमाण, आदि स्वमर ाया अन्यमतका जाण, मनुष्य, देवता कोई पण जेरे वेवाद में ठखवाने समर्थ नहीं, जिन नहीं पिए जि तरीखा, केवली नहीं पण केवली सरीखा ॥ सर्वेया पढ़त इग्यारा खंग, करमांसुं करे जंग, पाग्वंभी क मान जंग, करण दुसियारी है। चवदा पूरव धार संकोमी वारंबार आपको खमाबुं बुं, मत्यएण बन्दा

बह्णहार, सचित का त्यागी, वेरागी, महायंणी, एकां ऋतुरागी, सोजागी ऐहवा श्री ऋांचारज महाराज ? व्यापकी ऋविनय व्यसातना (देविस वंधी) कीथी होय तो हाय जोकी मान मोकी क

नमस्कार करूं हुं १००० वार "तिखुत्तो" जावत र जवे सरणो हो जो।

इति तीमो पद समाप्तम्॥

(४) चोषो पद उपाध्यायजी पचीस गुणै क सहित ठे, ते पचीस गुण केहचा ठे? इगियारा खंग जणनहार श्री खाचारंगजी, स्वयमांगजी, साणां

त्रापुरा अर्था अवार्यम्बात , सुयग्कांगजी, वाणां जी, समवार्यागजी, जगवतीजी, इत्ताधर्मकथार

रुपासकदसांगजी, व्यन्तगमदमाजी, व्यनुत्तगेवाइर प्रकृतयाकरणजी, विपाकसूत्रजी। ए इग्यास व्यग पार्ट सम्पूर्ण जाणे, व्यने (१४ पूर्व) उत्पाद १ ्रं, बोर्यप्रवादपूर्व, व्यस्तिनास्तिप्रवादपू



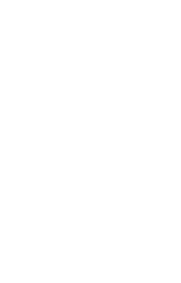


क्षितस्केष, बहुत्केडप, ब्यवहार, निशिय वत्तीसमी आ-न्वरंपक । ब्राद्देइ अनेक यन्य के न्याय जाणनार, सातनय निश्चय ब्यवहार, चार प्रमाण, आदि स्वमत तथा अन्यमतका जाण, मनुष्य, देवता कोई पण जेने विवाद में ठववाने समर्थ नहीं, जिन नहीं पिण जिन र्भरीसा. केवसी नहीं पण केवसी सरीवा ॥ सवैया॥ ्र्वहत इंग्यारा द्यंग, करमांसुं करे जंग, पार्वकी को मान जंग, करण हुसियारी है। चवदा पूरव धार,

बिक, नंदीसूत्र, अनुयोग द्वार (४ वेद्यंय) द्शाश्च-

86.

विद्याप्रवाद, पञ्चस्वाणेप्रवाद, प्राणप्रवाद, अवंध्यप्रवाद, िक्चिं।विशालपूर्व, सोकविन्द्रसारपूर्व, इंग्यारा स्रंग, विराजमान, (११ वर्गमं जाणे ते) जववाई, राय पसेणी, जि-रं वानिगम, पन्नवणा, जंबूदीप पन्नती चंदपन्नती, सुरज पन्नती, नीरयाविद्या, कप्पविनंसीया, पुष्फिचुितया, विन्हि दिशा (४ मूल स्त्र) ऊत्तराध्ययन, दसवैका-



प्राददेइने जघन्य तो दोय हजार कोक साधु साधवी, त्रुष्टा नव हजार क्रोम साधु साधवी, अढ़ाइ द्रीप ह्मरे खेत्र में जयवन्ता विचरे है, ते साधुजी केहवा है ? पांच महात्रत का पालणहार, पांच इन्डी का नीतणहार, च्यार कपायना टालणहार, नाव सचे, कर्ण सच्चे, जोग सच्चे, कमावन्त, वैराग्यवन्त, मनः समाधारिणया, वयः समाधारिणया, काय समाधार-षिया, नाण सम्पन्ना, दंसण सम्पन्ना, चारित्र सम्पन्ना, वेदेणी समा अहिया सनिया, मरणान्ति समा अ-हिया सनिया, एहवा सत्तावीश गुणे करी सहित, वारे नेदे तपका करणहार, सतरे नेदे संजमना पासणहार, तेत्तीस श्राशातनाका टालनहार, वयालीस दोप टाखीने छहार पाणीका खेवणहार, सेंताबीस दोप टालीने नोगणहार, वावन छणाचारके टा-सनहार, तेमीया आवे नहीं, नेतीया जीमे नहीं, सिचित्रका त्यागी. अचित्र का जांगी, वावीस पर ्रिसाके जीतणहार, अनेक खट्यिका धरणहार, 🔭



सूत्र हिडान्त ज्यारे मुख वहे, चवदे पूरव सारोए॥ निस कर साधुडीने वंद्या ॥ ए खाँकनी ॥ र ॥

ं वीतो ए ॥ निल्लः ॥ ४ ॥ द्याचारज तीने पदे, दीपे हं हुए ठत्तीक्षे ए । ठनाच्यायञ्जीने म्हारी बंद्र्या, हुप्त र जो जहितरा दोतो ए॥ नित्यट ॥ ए॥ द्वादर्सांगी ं सूत्र प्रते, खान क्रेसे खरू क्रमावे ए । ग्रस् प्रवीस करी शोजता, ज्यारी सेवा किया सुन्वपावे ए॥ निंद्य ॥६॥ गुउ सत्ताइन नाधना, बीचरे हे खबारो ए । च्याने हो जो महारी बंद्या. खट्टोचर सो वारो ए ॥ निल्रः ॥ ९ ॥ एकमो स्त्रात गृष कह्या. नवकर

निस करं सामुजीने वंदणा आणी हत्य टमेदो ए। सफ्छ करं पर नरतणो, मिट जावे कुन्त खेदो ए॥

निसमाशा बारे हुचे करी दीपता, पहुंचे पद जगदीसो र । देव बाराष्ट्रं पहवा, बीता रागने रीसोए ॥ नि-स्य ॥ ३ ॥ बार एए सिखा तहा, बतिशय हे इक-तीतो ए । दोव पदांता चेडा किया, ग्रुप हूळा पूरा

्र वाडीन पूरा ए । एकाब्रचिन समरीए. ब्रान्तुर हे





नमुं, श्री थादीश्वरजीस पायाए । शासन शुद्ध प्र^{त्र} र्चाय ने, मोद्दा नगर सिधाया ए ॥ नित्यः ॥ ए ।

प्रथम जिनेश्वर सुत नमुं, एकसो हुवा पूरा ए । इष नय मुक्ति सिधायीया, करणी कर हुवा शूरा ए 🛚 निरयः ॥ रः ॥ चीरासी गणधर हुव्या, लब्धि तण र्जनारो ए । सहस चीरासी शिष्य हुव्या, खीधो सं जम जारो ए ॥ नित्यण ॥ ११ ॥ तीन खाल शिप्यणी हुई, ज्यामे सहस चासीस शिवपुर पामीए । तिष्में हुई बाई मोटकी, ज्यारो तो नाम बाह्मी ए ॥ निस्य ॥ १२ ॥ कविल बाह्मण चिन्तवे, सोनी खेठं दीव मामाए । कोन बाहव मुं धापी नहीं, तृष्णारा यहा

मांग छै, बोले गय नरेबो ए। ममता पार्वी मुकी, े 😕 शिरना केशों ए ॥ नित्यव ॥ १४ ॥ पांचसे

तमामा ए ॥ नित्य० ॥ १३ ॥ जो हवे इच्छा चारी

a प्रतियोधीया. कथो जिनेश्वर एमो ए । कर्मसः

मुक्ति गया, पाम्या पदवी विमो ग् ॥ नित्यणी

क्षजो तुमे त्रूपो ए ॥ नित्य० ॥ १९॥ हेतु कारण कहा घणां, न्यारा न्यारा नेदो ए। जत्तर दिनो श्रच्छीतरे नहीं छाएयो मनमें खेदो ए ॥ निख्या। एडंड सुए राजी हुवा, धन धन छापरी वाणी ए । छाठेइ छाए ं उत्तम हुवा, आगे उत्तम निर्वाणी ए॥ नित्य०॥१९॥ । वीर करें गौतम जणी, सांजलजो तुमे साधोए। पांर ; इंडी पायके, सत करो प्रमादो ए ॥ नित्य० ॥ २० । बहुश्रूती साधा जणी, होइजो म्हारो नमस्कारो ए ज्यांरा गुण कह्या घणां. सोले उपमा श्रीकारो ए ॥नित्यः ॥ ११ ॥ यज्ञने पाने उठ्या गीचरी, वोख्या ब्राह्मए तमकी ए. देवना जीम आया पीर्व, वानी घणारं धमको ए ॥ नित्यव ॥ १३ ॥ कृत्या ब्राह्मण निष समे, जाएं ऋषं।सर रहा ए । विनति करं। प्रति खा

॥ १५ ॥ नमीराय हुआ मोटका, प्रत्येक वुद्ध श्रीकार्र ए । ठोमी घणी ऋद्धि साहेवी, एक सहस आठ नारी ए ॥ नित्यव ॥ १६ ॥ शकेन्छ तिहां आविया, कर्र ब्राह्मणनो रूपो ए । दश प्रश्न तिहां पुठीया, सांन जातरो कारण को नहीं, करणीरा फल सारो ए। ही

केशी मोटा मुनि, पहोता मुक्ति मकारो ए ॥ नित्य ॥ १५ ॥ चित्त छपदेश दियो खायने, ब्रह्मदत्त चकवर्त व्यागे ए। पहेला बंध पिल पिनगयो, पीर्ड कार्र कीसी सागे ए ॥ नित्यः ॥ २६ ॥ हाथी कादामें कः रह्यो, ज्यूं थे मुकने जाणो ए। चित्त उत्कृष्टी करणे थादरी, पहोता है निर्वाणो ए ॥ नित्य ॥ १९ इपुकार राजा हुळा, घर कमझावती नारो ए । प्र पुरोहित जसा जारजा, तेना दोय कुमारो ए॥ नित्य ।।२०॥ वर्ज ही खनुकमे निसम्बा, खीषो संजम नारं ए । फरम स्वपात्री मृक्ति गया, बत्तदमा श्राप्ययन वि स्तामे प ॥ निरय० ॥२७॥ मंत्रती व्याहिके नीमस्य

कार्या मृतपर बाणो ए । गद्नाखी गुरु देवने, मर्ग ही संकाणो ए ॥ नित्यव ॥ ३० ॥ स्वमन्यो छ ्रिस्वामी माहगे, हुं इण व्यवसर में चुको ए त करो हो महामुनि, हु खापरी बाणाग जूर्य



ग्ररु पासे खनिरामोए ॥ नित्य ॥ ३ए ॥ घर ठोमीने नीसरथा, एकत निर्मल अणगारोए। सिंह तणी पे वीचरता, धन व्यकायारा प्रतिपालोए ॥ नित्यण ॥ ४० ॥ खत्री राजरियी चर्चा करी, तारथा घणा न नारीए। कर्म खपाइ मुक्ते गया, ज्यांरी हुं वलीहारी⁹ ॥ नित्यण ॥ धर ॥ व्यनेक चकवर्ती नीसत्या ठोर्श

राज जंकारोए । चोसट सहेंस खंते**उरी, दोय** दोष घारंगणा खारोए ॥ नित्य**ः ॥ धर ॥ जरतेसरजी** श्रा ददे, दस चकवर्ती सिरदारोप । सुधो संजम पातने पहुंता मुक्त मकारोए ॥ नित्यः ॥ ४३ ॥ इण सरपिर

माही हुवा, व्याठ राम निरवाणोए । वस्तरह दीह व्यादरी, ब्रह्मक्षोके सुर जाणोए ॥ निस्प० ॥ ४४

करकंगुजी व्याद्दे, शुद्धी समकित पामीए। राय ह

ाइ हुवा मोटका, सोखह देशना स्वामीए॥ निवं ें । ४५ ॥ दसारणजड़, वीर बांदवा, किथी बुखसाइ ^{जा}

रीए। रथ मिणगाग्या वाजणा, साथे खीधो पां^{वर}



निवर समता खाषने, राग देय दोय जेदेयः॥ ति ॥ ५५ ॥ साघे खाषसाधे हरप सोग नहीं, इत्याँ घषा जारीए । कर्म खपाइ मुक्ते गया, ज्यारी हैं जिहारीए ॥ नित्यण॥५६॥ सेषिक रयवामी निसंद दिसा खनाची मुनिरायए। रूप देखीने इच्दन में प्रति सेषिक वायए ॥ निस्यण॥ ५४॥ घर सेनी

निसरया, वें क्युं खीयो संजम जारोए । देह चारी इमाल ठे, जोगबीए जले सुख जोगोए ॥ निर्देण ॥ ५७ ॥ बलता सुनिवर इस कहे, सांजल राजा बात

रक्ता करे जैतो तूं नहीं, तुंछे खाप खनायोप ॥सिं ॥ थए ॥ इण जुगमें कोइ केहनो नहां, जावबीर कर दोठोप । तिण कारण संज्ञम खीयो, उत्तर दी मीठोप ॥ निस्य० ॥ ६० ॥ संमन खठारे चोसठे, १ खोदी गांम चोमासोप । युज जेमखजीरा पाटवी, ऋषि रायचन्दजी जणी हुखामोण ॥ निस्य० ॥ ६१ ॥

।यचन्द्रज्ञ! जला हुखामाग् ॥ नित्य० ॥ ।३ ऽति रुषु माथु वन्द्रना समाप्तम ॥

- काजस्तगरा १ए दोप ।

गोंके उपर पग राखे र, कावा छाघी पाठी नोलावे २, उठंगण खेवे ३, मायो नमाय उनो रहे ्ध, दोनुं हाथ उंचा राखे **८**, घुंघटो काढे ६, पगरे . जपर पग राखे ७, वांको खामो रहे ७, साधुनी वरो-(वर रहे ए, गानीनी ओघणनी परे रहे र०, खनो विंको रहे ११, रजोहरण ऊंचो राखे १२, एक खासण न रहे १३, आंख एक ठाम न राखे १४, माघो इलावे र्रं, कुकुकार करें र६, कील चलाचे र७, व्रालस मोड़े ^{ति}रेण, सुन्य चित्त करे रए॥ F

इपे जगणीस दोप काउस्समामें बर्ज्या।

मो · 🗗 . .

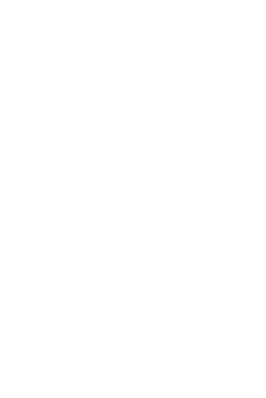
सं

वीस असमाधिया दोष ॥

द्वद्व करतो चाले तो १, विना पूंजे चाले तो २, पूंजे कहां पग धरे कहां तो ३. मर्यादासुं अधिका पाट पाटला शय्या जोगवे तो ४. गुप्तके. वर्गीके सामी

हर बोले तो ६, चहुश्रुतिजीकी घात चिंतवे तो ५, एवँ जियादि जीवांने शाता, रस, विजूपा निमित हर् तो ७, वार वार कोध करे तो ७, पीठ पूठे ग्रुणवर्त का अवग्रुणवाद योले तो ए, निश्चे कारी जापा वो तो ४०, नवो कलह करे तो ४४, क्तमाए हुवे का हकुं वार वार उधेके (फिर फिर उदीरे) तो ४४ अकाले सज्जाय करे तो ४३, सचित्त रजमुं सर श्रकाखे सज्जाय करे तो १३, सचित्त रजसुं खर^{ड़} होय विना पूंजे करें बेंठे चले खने छाहारादि से जाय तो १४, पहर रात्री छपरांत गाढे शब्दे घोले हैं १५, वारवार च्यार तीर्थमें कल्लह करे, गच्छ मांह जेद छराझ करे तो १६, रे तुं बोले तो १७, ठवक यके जीवांकुं छालमाधि छपजाबे तो १७, स्वेरेंद् छाहार लोगेब तो १०॥ खाहार जीगवे तो २०॥ 🚣 ्वीम बोखे करी जीव नीर्थंकर गोत्र कर्म बांधे।

ैरिहंतजीरा गुण माम करे तो जीव कर्मरी को**न** खपा



कर्मरी कर्रेष्ट्र खपाने चत्कृष्टी जानना खाने तो तीर्यक्ष गोत्र यांधे 🐫 । दोय वेखा च्यावसम्मकरतो यको बी कर्मरी कोक खपावे उत्कृष्टी जावना आवे तो ती वी गोत्र वांधे ११ । वत पचक्खाण चोखा पाखतो हुई जीव कर्मरी कोक खपावे, उस्तृष्टी जावना आवेडी तीर्थिकर गोत्रे बांघे रश । धर्मध्यान शुक्रध्यान (ध्या वतो थको जीव कर्मरी कोक खपावे, उरक्वष्टी जावनी खावे तो तीर्थंकर गोत्र वांधे १३। बारे जेदे तपस्य करतो यको जीव कर्मरी कोक खपावे, उस्क्रप्ती जीव ना आवे तो तीर्थकर गोत्र बांधे १४। सुपात्रने दान देवतो यको जीव कर्मरी कोम खपावे, उत्कर्षी नावन आवे तो तीर्थकर गोत्र बांधे १५। वैयावद्य थको जीव कर्मरी कोन खपाने, उत्कृष्टी जानना तो तीर्थंकर गोत्र वांधे १६। सर्व जीवोने सुख 🗸

े यको जीव कर्मरी कोम खपावे, उत्कृष्टी । स्त्रावे तो तीर्यकर गोत्र वांधे १७ । स्त्रपूर्वज्ञा^त े यको जीव कर्मरी कोम खपावे, उत्कृष्टी जावे ना अवि तो तीर्थकर गोत्र वांधे १७। सूत्रनी पक्ति करतो यको जीव कर्मरी कोन खपावे, उत्कृष्टी जाव-ना आवे तो तीर्थंकर गोत्र वांधे रेए। तीर्थंकरनो

इकवीस सवला दोष (सवल कर्म).

।मार्ग दीपावतो धको जीवकर्मरी कोन खपावे, उत्कृष्टी

जावना आदे तो तीर्धकर गोत्र बांधे २०॥

इस्तकर्म करे तो सबलो दोप १, मैधुन सेवे

तो १, रात्री जोजन जोगवे तो ३, आधाकर्मी आ-हार जोगवे तो ४, राजपिंन खाहार जोगवे तो ५,

ं उदेशिक र, कीय २, पामीचे ३, ञ्रतिजे ४, ञ्रणिसंहेय ः ५. अज्जोयरे ६, ए उद्गमनरा ठव दोप आहार नो-

गने तो ६, वारवार पचक्लाण खेने ठोने तो ७. ठन , महीना मांही नयो टोखो बदखे तो ७, एक मासमें , ३ नदीके पाणीरो खेप खगावे तो ए. एक मानमें ३

, माया स्थानक सेवे तो १०, सञ्झातरनो छाहार जो-

गवे तो ११, जाणपूरुने प्राणातिपात सेवे तो ११ जाणपुरु मृपावाद बोखे तो १३, जाणपुरु स्रदत्तादार

दोप जागे ११॥

क्षेवे तो रक्ष, सचित्रं छपरे ऊठे बैठे तो रंथ, सि^{व्ह} सनिग्ध माटी उपर करे पैठे हाले चाले तो १६, इन जाला सहित पाट पाटलाजोगवे तो १९. मुल १ 🕏 र खंध ३ त्वचा ४ शाखा ५ पखव (प्रवासां) ६ प्रः 9 फल o बीज ए हरा पत्र रव ए दश प्रकारनी हरी काय जोगवे तो १०, एक साखमें दस नदीरो क्षेप ह गावे तो १ए, एक वर्ष मध्ये दश माया स्थानक सें तो २०, सचित्र सेती हाथ पग खरमया होय जिस् हायसुं ब्याहार पाणी वेहरावे साधु सुव ता सवर

२१ श्रावकना इकवील गुण. श्रद्धां र. जशवंन २, सोम्य प्रकृति ३. खोद प्रिय ४. व्याकरो स्वताव नहीं ५. पापसे मरे ६, ॥ 🖏 वंत १. सळसक ०, सङ्गावंत ए, द्यावंत १९ े हैयस्य ११, गंबीर १२, स्पास्यदृष्टि १३, गुणसापी

9, वृद्धोंकी रीत चाले रेण, विनयवंत रेए, किया ण माने २७, परहितकारी २१ ॥ प्रकारान्तरं ११ श्रावकके इकवीस-ग्रुण. नवतत्वका स्वरूप जाणे १, धर्म करणीमें सहाय सहायता) वंठे नहीं २, धर्मधकी चखाया किसीकी को नहीं २, जिनधर्ममें शंकादि आणे नहीं ४, जे उत्ररो अर्घ ज्ञान धारे तिएरो निर्णय करनेमें प्रमाद हरे नहीं ५, श्रावकरा हान छोर हानरी मींजी ध-मु रंगायमान रहें ६, म्हारो खानखो खस्थिर ने, जेनधर्म सार हे इसी चिंतवणा करे ७, श्रावकजी क्षटिकरत जैसा निर्मला होच, हूम कपट राखे नहीं **ः, श्रावक घरका द्वार सवा प्रहर दिन चढे** तांई रान सार उधाका राग्वे ए. श्रावक एक मातमें ठव गेसा करे १०. श्रावक राजाके खंतेवर जंनार, शाह-हारकी दुकानमें जाने तो खप्रतीत कपजे ऐसे कार्य करे नहीं ११. जिया बन पचक्काण निर्मता पाले

४, धर्मकयी रूप, साची पक्ष करे रूद, ग्रुद्ध विचारी



त्र्याची हुने १७, त्राठ कर्मरा जाण हुने १७, ठती शि पोसेमें निज्ञा न क्षेत्रे १७, दृढधर्मी होने १०, छूघ पाण जैसो न्याय करे ११ ।

११ अध इकवीस बोख टोटो पर्कत्रा.

 १ प्रणने ग्रुणनेसे बाखसकरे तो ज्ञानसे टोः पने २ साम्र साधवी होयने स्नान करे तो सम्यक्त टोटो पने २ दोयबार द्युद्ध पट्ट व्यावद्यक न करे र वत पचकाणरो टोटो पने ४ व्याहार पाणीरो खोद्धा होंदे तो तपस्यारे। टोटो पंत ५ विना उपयोग, अर यणाह्यं चाडे तो जीव द्यारो टोटो पने ६ वन योव रुपरो सदकरे तो बाठी बारोड़ (निरांग) देर टोटो परे ६ बनानो दिनय न करे तो जिन आह टोटो पने व कोध क्षेत्र को नया मिल्यो रुधेरं तो हेत मिलापने टोटो पदे ए पर्वती -

धर्म ज्ञागरणा न कर तो क्रिन्तिने टोटो पने स्माया क्यटाई द्याबाडी हिनो ह

पर्ने ११ चिंता उचार 🚉 📉 🔧 इस्य स



त्रगर्वी हुवे १७, त्राठ कर्मरा जाण हुवे १०, उती शक्ति पोसेमें निंडा न खेवे १७, दृढभर्मी होवे १०, पूध पाणी

जैसो न्याय करे ११ । ११ त्राय इकवीस वोल टोटो पमनेरा.

१ जलने गुणनेरो आलसकरे तो ज्ञानरो टोटो पने १ साधु साधवी होयने स्नान करे तो सम्यक्तरो टोटो पने ३ दोयवार शुद्ध पट आवश्यक न करे तो

वत पचलाणरो टोटो परे ४ आहार पाणीरो लोलुपी होंने तो तपस्यारो टोटो परे ५ विना लपयोग, अज यणासुं चाले तो जीन द्यारो टोटो परे ६ धन योनन रुपरो मदकरे तो आठी आरोज्ञ (निरोग) देहरो

टोटो पने 9 बनानो विनय न करे तो जिन आज्ञानो टोटो पने 0 कोध क्रेश करे तथा मिट्यो कल्लह उधेरे तो हेन मिलापरो टोटो पने ए पर्वती रातरी धर्म जागरणा न करे तो धर्म ध्यानरो टोटो पने रे

माया कपटाई द्गावाजी करे तो जहा की तिंनो टोटो परे ११ चिंता उचाट सोग, नंकल्प विकल्प मनम राखे वापरिणाम राखे तो शीतखतापणा, सरखपणाको टोट _{वर}पने १५ स्त्रीरो खालची होय, स्त्री री अजिलापा वांच्ट हिकरे, राग रागणी सुखे तो शीकवत-व्रह्मचर्यरो टोट

क्षांतको टोटो पर्ने १४ किन, कुत्सितजान करो

चॅतो व्यक्त, बुद्धिको टोटो पने ११ साधु साधवी यार

: चपने १६ साधु साधवी श्रावक श्राविका च्यार तीय मांही मांही हेत मिखाप न राखेतो जैनमार्गरो टोट पढ़े १३ वर्त पश्चवलाएमें दोप लगावे, व्यालीवे नहीं

ुनिन्दे नहीं, प्रायधित्त खेवे नहीं, तपस्या करे नहीं मुसंबेपणा करे नहीं तो मोक्त मार्गनो टोटो पने श

्रेश्री छग्हिंनजी श नथा छग्हिंन जाप्या धर्मरा तथ नीर्यम व्यवर्णवाद बोले तो सत्य धर्म पामरोप

ं-्री परे १ए तपस्या, छ।चार, जावनाका चोर हो

.... मदुगुरुगे वचन नहीं माने नो छांची गतिरं

टोटो पर्ने २० साधु साधर्व। गुरु, गुरुणी नी ब्याङ्गा छ

षे नो छराधकपणारो टोटो पने २१ श्री जगवानरा पन उपगंत तकी उठायने कहे तो शुद्ध मार्गरो ोटो पर्के।

२१ पावन्तर पोपेरा दोप.

शोषाके निमित्त पोषेके पहर्त्न दिन हजामत ।
 फरावे, यस घुलावे, रंगावे और शरीरकी शुध्पा ।
 करे सो दोप ।

र पोपाके द्यमले दिन विषय सेवे सो दोप इ.च.जील होये इस प्रकार स्प्रियक द्याहार उतर े पारखेमें (धारखेमें) करे सो दोष

अ विषय विकार ६टे ऐसा सोद्य पुष्ट, सरस छाहार

्रतर्पारहेमें करे सो दोष।

प पोपाके प्रस्काचन उपकरण दसादर पुंजे प्रसिद्धेहैं नहीं माठी शेवे कोई माठी शेवे पुंजे की दोष। ६ उद्यागदिक हैं किया पश्कित किया है होंगी

६ उद्यागिदिव हामवा विश्वित्त विचादिन पर-है, प्रोमी जाग पुले पण जागा परते मार्त। सींग कींग्रे, काला गते पुले मार्त। ये न परत मी दोष ।



१४ शरीरका मैख जतारे या पुंजे विना खाज खुणे निष्ठा लेवे सो दोप।

रेथ विकथा या पर निंदा करे सो दोप। रे६ कछह या मइकरी करे सो दोप।

रष अन्तीको आदर देवे और आसनका आमंत्रण करे सो दोप।

१७ जापा सिमिति रखे विना चोले, खुले मुंढे चोले से। दोप।
१७ दो घनी व्यतीत होनेके पेश्तर स्त्रीके झासन पर

(जिस जगह स्त्री वैठी हो उस जगहपर) पुरूप चौर पुरूप के चासन पर स्त्री वैठे सो दोप। २० पुरूप स्त्री को चौर स्त्री पुरूप को विषय दृष्टि हे

२० पुरुष स्त्री को खोर स्त्री पुरुष को विषय दृष्टि है देखे सो दोष।

११ व्यपनी मालकीयती (व्यपना रक्त्याहुया) पोषा के उपकरण के निवाय व्यन्य चीजें अवतीकी आज्ञा सिये विना खेव या अवती (खुसे व्यादमी) के पास कोई जो चीज मंगवावे मो दोष।

आवकके २१ संक्ष १ ' श्रहप इच्छा '-थोक्ं) इच्छा-विषय तृष्णा 🕫

रूपादिकका विषय कमी करे, विषयमें असंत हा न होवे छुखं वृति रहे।

'२ 'श्रम्पारंत्र'-स्वकायका खारंच यडावे 'नहीं, ! नर्यः दंग सेवन करे नहीं, जितना आरंज पर 🧜 हो जतना घटानेका जद्यम करे।

३ ' खब्पपरिमही' धनकी तृष्णा चोकी, कुकर्म ई व्यापारकी इच्छा नहीं, जितना प्राप्त हुवा है ं जतनेही पर संतोष रक्षे, मर्यादा संकोचें। u 'धुरोल' ब्रह्मचर्यवंत, तथा खाचार गोचार प्री

नीय खखे। u 'सुष्टति' नत प्रत्याख्यान शुद्ध निरतीचार ची परिणामसे पाले।

, ६ 'धर्मिष्ट'-नित्यनियम प्रमाणे धर्म किया करे।

छ 'धर्म इत्ति'-मन बचन कायाके योग सदा ध

र्र्भामें प्रवृतता रहे।

o ' कल्प उपविहारी '-जो जो श्रावकके कल्प (श्रा-इ चार) है उसमें उम्र विहार करनेवाले अर्थात उ-ता पसर्ग उत्पन्न हुये जी स्थिर परिणाम रक्खे। ए 'महासंवेग विहारी '-संदा निवृत्ति (निदोंप) मा-🖔 र्गमें तल्लीन रहे। हैं ' उदासी ' संसारके कार्यमें सदा उदासीन वृत्ति युक्त रहे। र्लं १ 'वेराग्य वंत'-सदा आरंज परिग्रहसे निवर्तने व' की अजिलापा खले। । १ ' एकांत आर्च '-निष्कपटी-सरल-वाह्याच्यंतर एक ^{र्फ} सरीखे रहे।

३ 'सम्यग मार्गी'-सम्यक् ङ्वान दर्शन चरिता च-रित्ते में सदा प्रवर्ते। ४ 'सु साधु -धर्म मागम नित्व वृद्धि करने आतम

साधन करे, परिणाममे अवन सर्वधा वंध करदी sı ,

रे, फक्त संसार स्ववहार साधने इस्यमे हिंसा

खरय शिष्यादिनी खागल कहे पठी वका खागल करे

तो खाशातना । (१५) खशनादि सावीने प्रथम खत्य शिष्यादिने चताचे पत्री बड़ानें बंताचे ते आशातना। (१६) खशनादि वहोरी (वेहरी) लावीने प्रथम खंन्य शिष्यने आमंत्रण करे पत्नी वका ने आमंत्रण करे है श्चाशातना । (१७) वका साथे श्रयवा श्रन्य साध् साथे खन्नादि वहोरी खावी बमाने के बुद्ध साप्र पूछवा विना पोतानो जेना छपर प्रेम ठे तेखोने घोर् थोशुं वहेंची खाने ते खाशातना । (१०) वना सार्ध जीमतां त्यां सार्व सार्व शाक, पत्र, रस सहित मंनोंक **उतावलथी जमें (जीमे) तो आशातना।(१**९) वर्षान षोखाच्या वतां सांज्ञशीने मीन रहे ते खाशातना ं 🕩) वमाना वोखाव्या ठतां पोताना छासने रही ह ्रे, परन्तु काम वतलावसे तेवा जय थी बना पार

ज़ाय नहीं ते व्याशानना । (११) वमाना वोलाव्य यी व्यावे ने कहे के श्रं कहो हो? एवं मोटा सार्व छविनय ची फरे ते, छाझानना । (२२) यमा यहे हे ह्या कार्य तसे करो. तमीने लाच परें स्वारे हिन य यगाप्रति कहे के तमेज करो तमीने खान प्राप्ती ने छाज्ञातना । (१३) हिप्प बमा प्रत्ये फनोर, पर्दस्त नापा वापर ते छाञ्चानना। (१४) शिष्य पगाने,जेस का राष्ट्र वापरे तेया शब्दो तेयीज रीते पापरे ते घाशातना । (२५) वमा धर्म व्याख्यान घ्यापता होय त्यारे सजामां जाई बांडे के तमा कहां हो ने कयां हे ? एम कहे ते खाशातना । (१६) वका धर्म व्या-ख्या कहेतां शिष्य कहे के तमा जुली गया हो ते व्याशानना । (१९) वका धर्म व्याख्या व्यापतां शिष्य ते व्याख्यान सार्क् न जाएँ। खुदा न रहे ते व्याशातना। (१०) वमा धर्म व्याख्या छापतां सजामां जेद थाय तेम श्रवाज करी दोड़ी उठ के बखत थई गया है, आ-हागदि खेवा जवानुं ने वर्गग्ह. कही नंग करे ते छा-गानना । (१९) वका धम व्याख्या खापनां श्रोताखो-र्ग मनने नाखुई। उत्पन्न करे ने खाशातना । (३०)

श्चन्य शिप्यादिनी श्चागस कहे पत्री वका श्चागञ्च करे तो व्याशातना । (१५) व्यशनादि लावीने प्रथम व्यन शिष्यादिने यतावे पत्नी वडानें वतावे ते खाशातना। (१६) खशनादि वहोरी (वेहरी) लावीने प्रथम खन्य शिष्यने व्यामंत्रण करे पत्नी बका ने व्यामंत्रण करे ते श्चाशातना । (१७) वका साथे खथवा खन्य साधु साथे खन्नादि वहोरी लावी वकाने के वृद्ध साधूने पुत्रया विना पोतानो जेना उपर प्रेम ने तेस्रोने योई योहं वहेंची व्यावे ते व्यासातना । (१०) वसा साथै जीमतां त्यां सारुं सारुं शाक, पत्र, रस सहित संनोह, छतायखयी जमे (जीमे) नो खाशातना।(१ए) यमाना मोजाव्या वर्ता सांबसीने मीन ग्हे ने खाशातना। (२०) यंनाना योसाव्या हतां पोताना व्यासने रही हा कहै, परन्तु काम बनसावसे नेवा नय यी वसा पास जाय नहीं ते व्यासातना । (२१) वमाना चोलाव्या थी थावे ने कहे के शुंकहों जो? एवं मोटा साथे

क्रविनय पी कट्टे ते, खाशातना। (२२) वना कहे के आ फार्य तमे करो. तमोने खान यसे त्यारे फिन ध्य बनाप्रति कहे के तमेज करो तमीने खान घरो ते खारातना । (१३) शिष्य बना प्रश्ने कड़ीर, एर्जिस नापा नापरं ते खाशातना। (२४) शिष्य यमाने, जेम दक्त इंच्ड वापरे तेवा सब्दों तेवीज रीते वापरे ते चाहातना । (२५) वना धर्म च्यारवान चापता होय त्यारे सजामां जाई बांडे के तमी कही ही ते कयां हे ? एम कहे ते खाशातना । (१६) वका धर्म व्या-ख्या कहेतां शिष्य कहे के तमी जूजी नगया हो ते ब्राहातना । (१५) बना धर्म व्याख्या व्यापतां शिव्य ते व्याल्यान साहे न जायी खुश न रहे ते व्याशातना। (१०) बनाधर्म ब्याख्या छापदां सजामां जेद थाय तेम बिनाज करी बोडी उठे के बलत बई गयो है. खा-हागदि खेवा जवानं हे वर्गेन्ट्, कही चंग करे ते खा-गानना । (१९) इसा धर्म ब्याख्या खापनां श्रोता छो-गं मनने नाख्दा। उत्पन्न करे ने खाद्यानना । ३०)

व्यासातना । (१४) व्यसनादि बेहरी साबीने व्यन्य शिष्यादिनी व्यागत कहे पठी वमा व्यागत तो व्यासातना । (१४) व्यसनादि साबीने प्रयम व्यव शिष्यादिने बतावे पठी वडानें बतावे ते व्यासातना (१३) व्यसनादि बहारी (बहरी) साबीने प्रयस व्यस्

शिष्यने आमंत्रण करे पत्नी वमा ने आमंत्रण मुर्हे आशातना। (१७) वमा साथे अथवा अस्य साथ साथे अलादि बहोरी सावी बमाने के पूर्व साथे प्रवण विना पोतानो जेना उपर प्रेम वे तेओने थेएँ थोर्ज पहुँची आवे ते आशातना। (१०) विमासी

जीमतां त्यां सारुं सारुं शाक, प्रम, रस. सहित में नीहें छतायखयी जमें (जीमें) तो खाशातना। (१ए) बच्हीं बोखाव्या ठतां सांजबीने मोन रहे ते खाशातना। (१०) वकाना वोखाव्या ठतां पोताना खासने रही हैं , परन्तु काम वनखावसे नेवा जय थी वका पा जाय नहीं ने खाशानना। (११) वकाना वोखाव्य थी खावे ने कहें के शुं कहों ठों? एवं मोटा सांव



(शिष्य पोते व्याख्यान शरु करे ते आशातना। (३) धनानी शय्या-पथारीने पगे करी घते, हाथे की

श्चास्फासन करे ते आज्ञातना। (३१) वनानी श्^{रत} पंचारी उपर जजो रहे, घेसे, सूवे ते खाशाती (३३) वमाथी उच आसने के वरावर आसने वेस उत्ता रहेतुं. सूबुं वंगेरह करे ते आशातना। यह दीप टालकर बंदणा करणी ॥ ॥ श्रय ३६ वोल परम कल्याणका ॥ 🔧 र तपस्या करीने नीयाणी न करे तो जीव परम कट्याण होत्रे, किणनी पर तामली तापस परे । २ समकित निर्मल पाले नो जीवरो परम द्दोवे, किणनी परे श्रेणिक राजानी परे। ३ म कायानो योग शुज प्रवर्तावे नो जीवरो 🛚 कट्याण होते, किणनी परं गजसुकमासनी परे। उत्ती शक्ति कमा करे नो जीवरो परम कट्याण हो

किणनी परे परदेशी राजानी परे । ५ पांच महात्रत निर्मेखा पाते तो जीवरो परम कट्याण होवे, किणनी

परे गोतमस्वामीनी परे । ६ कावरपणो ठोके झरपणों श्चादरे तो जीवरो परम कल्याण होवे, किणनी परे सेवक राजकपिश्वरनी परे। छ पांच इंडियोने वश करे तो जीवरो परम कल्याण होवे, किल्नी परे हरिकेशी सुनिराजनी परे। ए माया कपटाई ठोमे तो जीवरी पर्म कटयाण होवे, किणनी परे मिल्रनायजीना पूर्वजवना वप मित्रनी परे। ए खरे धर्मनी आस्ता राखे तो जीवरो परम कल्याण होते, किणनी परे वर्ष नामे नटनी (वर्ण-नागका मंत्रीनी)परे। १० चर्चा वार्ता करीने सादहणा ्रञ्ज करेतो जीवरो परम कट्याण होवे. किणनी परे के-सीमुनि, गोतमस्वामीनी परे । ११ छुखी देखीने जगनके जीवोंपर करुणा करेतो जीवरो परम कछाण होते, किएनी परे संघकुमाररे पाठले हाघीरे अवनी परे। ११ खरे बचनरी छाशना राखे तो जीवरो परम क खाण होते, किएनी परे छाणंदजी कामदेव श्रावकर्नी परे। १३ श्रदत्तादान लागे तो जीवरो परम कड्याण है किणनी परे अंबक परिवाजककें सातसें 👑 १४ शुद्ध मने शील पाले तो जीवरो परम होवे, किणनी परे सुदर्शन शेवनो परे 🔀 👵 होमीने समता खादरे तो जीवरो परम कड्याण हो कियानी परे कपील बाह्मण (केवली कपील स्रित्स परे। १६ सुपात्रने दान देवे तो जीवरी परम होरे. (कणनी परे रेवतीजी गायापतपीत परे । १७ चलीवे चित्तने स्थिर करें वरी परम कड्याण होये, किणनी परे परे। रठ जरहृष्टो तप करे तो जीवरो परम होवे, किणनी परे धन्नाजी श्रणगारनी परे। वैंपावच करे तो जीवरी परम कल्पाण होवें, पर पंचकजी मनिनी पर । २० व्यनित्य जावन ती जीवरी परम कट्याण होते, किणनी परे 🦠 ीना परे। २१ उत्कृष्टी कमा करे तो .भ कस्याण होते. किणनी परे अर्जुनमाजीनी 🥇 · 22 जिन धर्मरी खाशना गुरु तो जीवरो परम कराउ

जनी परे। २७ राष्ट्र मित्र उपर सिरवा जाव राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे, किणनी परे उदाइ राजानी परे। २० व्यनचरी हेनु जाणीने द्या पासे तो जीवरो परम कल्याण होवे, किणनी परे धर्मक्वी व्यणगारती परे। २७ कष्ट पड्या शीसमें हट रहे तो जीवरो परम कल्याण होवे, किणनी परे चंदनवासा, तथा उनकी मातानी परे। ३० राग व्यापा हाय खोह न करे तो खात्मारो परम कल्याण होवे. किणनी परे व्यापा होवे खात्मारो परम कल्याण होवे. किणनी परे मंग नातानी परे। ३१ ब्याजवम सवर निपजाने तो खात्मारो परम कल्याण होवे. किणनी परे मंगनि राजानी परे।

तीर्घन शाता उपजाये को जीवने परम परमाण होये, किणानी पर तीजे देवलांकरे इंडरे पाठले जयनी परे। २४ उत्कृष्टो विनय करे तो जीवनो परम कहपाण होये, किणानी परे चाहुचलजीनी परे। २५ उत्कृष्टि धर्मनी दलाकी करे तो जीवनो परम कहपाण होये, किणानी परे छप्ण महाराजनी परे। २६ उत्कृष्टो छाजियह करे तो जीवनो परम कह्याण होये, किणानी परे टंटण मुनिरा- ३१ परिसह द्याया 'समजाव वर्ते तो खात्मीरे परम बखाण होवे, किणनी परे मेतार्यजीनी परे रेश असट जावसे दान देवे तो जीवका परम कंट्याएँ होते, किणनी परे सुवाहका विद्या जब शोमिक केपरी ३४ च्छायमान मनने रोके तो जीवका परम कस्याप होते, किणनी परे प्रसन्नचंद मुनिनी परे॥ ३५ बती गिर करके जी चेते तो जीवका परम कहवाण होते किणनी परे अरणिक मुनिनी परे॥ ३६ आपर

श्रामा धीरज राखे तो जीवरो परम कल्याण होते

३४ श्रमञ्जायरो संवेयो.

किणनी परे संधक मुनिनी परे ॥

तारी दुटे रातिदिशा, श्वकाले मेह गाजे, बीर क्मके व्यपार, श्रीर जुमी कंपा जारी है। बासचर्छ

. . व्याकारो व्यगनकाय, कालो घोली धंघ, श्री ्रीपान न्यारी है। हाक, मांम, खोही, राध, र्हक मसाण यसं, चंड, सूर्य घटण, श्रीर राज्य मृखुटा^{हु}

है। पानकमें मरधा पड़्या पंचेंड्री कक्षेत्रर, ए बी



परम कट्याण होने, किणनी परे मेतार्यजीनी प देश जसट जावसे दान देवे तो जीवका परम कर्ल होवे, किणनी परे सुवाहका विठक्षा जब शोमिकहेएँ ३४ चलायमान मनने रोके तो जीवका परम कर्प होते, किणनी परे प्रसन्नचंद मुनिनी परे॥ ३५ कं गिर करके जी चेते तो जीवका परम कल्याण हो किणनी परे व्यरणिक मुनिनी परे॥ ३६ व्याप श्चाया धीरज राखे तो जीवरो परम कल्याण हो किणनी परे खंधक मुनिनी परे॥ ३४ थ्यसङ्कायरो सर्वेयो. तारो दुटे गतिदिशा, व्यकाले मेह गाजे,वी करके खपार, खोर नुमी कंपा जारी है। बालवर्

्राचेन, व्याकाठो व्यानकाय, काली घोली घुंष, ब्रैं र्तुपान न्यारी है। हास, मांम, बोही, राघ, वैष् मसाज यस, चंफ, सूर्थ बहण, व्योर राज्य मृखुटाँ हैं। पानकमें मरबा बड्या पंचेंद्री कक्षेत्रर, ए बी



यहां तकको (१ प्रहर) व्यसन्काय । ७ 'नरकार्षे' कहता व्याकारामें मनुष्य पशु पिशाचादिक के क्लि

दिसं पहांतक व्यसज्जाय । व 'घुम्मीए' कहता कारी पूर्र पमे वहांतक असडकाय ए 'महिये' कहता भी भूवर (मेगरवा) पमे वहांतक छासन्काय । १० 'कापार् कहता व्याकाशमें भूखका गोटा (दोटा) बढ़ा हुन दिग्ये यहांतक व्यसन्काय। ११ 'मंस' कहता मांत र ष्टिमें व्यावे वहां तक व्यसन्काय। ११ 'सीणी' कहत रफ (खोही) दृष्टिमें खात्रे वहांतक खसउकाय। 👯 'थरी' कहता थरिय (हमी) दृष्टि में थाये पहांती द्यसञ्जाव । १४ 'टघार' कहता जिष्टा दृष्टिमें ^{खारे} बहाँतक व्यसःकाय । १५ 'सुसाव' कहता इमशानाँ बारी तरफ १००, १०० हाय व्यसकाय । १६ शा मरणे' कहता राजाके मृत्यकी इसरो राजा वेसे औ ू.. इमनाय ग्हे बहानक स्थमकताय । १७ 'संसबुग्य

बहुता सजाव्योका युक्त होते वहांतक व्यसक्ताय। हैं। 'चंद्यसमें' कहना चडमहण होय नो जधन्य ए डें रहुष्ट ११ प्रहर, खप्रास होनेसे ११ प्रहर, योना महण होनेसे कमी काल समझना। १७ 'सुरोवरागे' कहता सूर्य यहण होय तो ११ प्रहर। १० 'स्त्रां कहता पंचें द्रियका कलेवर निर्जीव देह पड़ा होवे तो चारे तरफ १०० १०० हाथ असन्जाय। ११ आश्विन सुदी पूर्णीमा असन्जाय। ११ कार्तिक विद्यातिपदा (प्रथमा, असन्जाय। १३ कार्तिक सुदी पूर्णिमा असन्जाय। ११ मृगशोर्ष विद्यातिपदा असन्जाय। १५ चेत्र सुदी पूर्णीमा असन्जाय। १६ वैसाल विद्यातिपदा असन्जाय। ११

प्रतिपदा असन्काय । १ए नाड सुदी पूर्णीमा अस क्काय । ३० आदिवन वदि प्रतिपदा, ये १० दिन और रात सम्पूर्ण असन्काय पालना । ३१ प्रनात । ३१ दे प्रहर (मध्यान) । ३३ शाम । ३४ मध्य रात्री । १ ४ वक्त शेपकी (ठेहजी) ३१-३१-३३-३४ वी, एकेव महर्त असन्काय । ये ३४ असन्काय टालकर मृह

जणना ॥ इति ॥

श्रापाढ सुद्रो पूर्णीमा श्रप्तकाय । २० श्रावण वि





(१७) साग विहं केण खीखोत्रीका पता हरा साग। (१७) माहुर विहं के॰ वेखरा फल 🕩 🕬 🕬 (१६) जीमण विहं के जो वस्तु जीमणेमे आने ह सकी विधि. गिन्ती। (२०) पाणी विहं के० पाणी।

(११) मुखनास विहं कें सुपारी, खोंग इसायची, व गेरह मुख साफ करनेकी वस्तु। (२२) वाहिन विहं (पन्नो) के॰ पगमे पेरणेकी जी

नस [चोज] पगरखी प्रमुख । (२३) याहण विहं के सवारी घोमा, गामी, इंट वगेरह ।

(१४) समण विहं के॰ सुंखेकी सेजा (इस्पा) पिखंग थादि ।

्रींथ) सचित्त विहं के॰ सचित्त वस्तु खाणे खाश्री। (१६) दच्य विहं के॰ पूर्व कही जीके सिवाय प्रसा

इच्य रहा सो ।



मृगका सींग चममा इत्यादिकका व्यापार श्र

वक न करे।

(9) सनववाणिउके के॰ लास नीझ, साजी, सीए सोहागा, मेनसीस इत्यादिकको व्यापार नक्षे

(0) रसवाणिउके के॰ रस, मदिरा, घी, मधु (सहत इत्यादिकको व्यापार आवक न करे।

(ए) विषवाणिउके के॰ विष (जहरका व्यक्तीम, मंखी), हरसास, गांजा) को व्यापार आवक न करे।

न करे।
(रिं) फैसवाणिडके के चंतर, केश प्रमुखको ब्याणा आवक न करे।
(११) जंतपित्वण्या कम्मे के ितस, सरसु, अससी

(११) जंतिपत्ताणया कम्मे के० तिस्त, सरसु, श्रास्ती घाणीमें पितायकर तेल निकलायकर वेचनेकी अ व्यापार करे नहीं तथा घाएया, कस्यांको व्या

व्यापार करे नहीं नथा घाएया, कर्र्याको व्या पार न करे। २) निसंघ्यण कस्मे केल्सोच्या संस्थानम्बर्या

(१२) निह्नं च्छा कम्मे केण्टोघमा, घोमा, आदि खती कराय कर वेचलेको ज्यापार न करे।

- (२३) दविग दावणया कम्मे के वनमें, खेतमें आग सगावे नहीं, खेतकी वाम फूंकावे नहीं।
- (१४) सरदह तलाव परिसोसणया कम्मे के० सरवर, कुएड, तलाव को पाणी सुकावे नहीं, एसा व्या-पार करे नहीं।
- (१५) असइ जल पोसल्या कम्मे के हिंसक जीव श्वान, विद्वी, तीतर, क्रुकमाने आपका आजी-वकाके वास्ते पाले नहीं तथा वैश्यादिकने न पोपे तथा उनको क्रुशील आलाचारको पइसो आप न लेवे, हिंसाकार्क पापकार्क काममें लोजरे वस पडकर ज्यापार नहीं करे।
 - (ण) आतमा त्रतमें श्रावकजी अनर्धाद्यमका त्याग करे।
 - (ए) नवमा वतमें श्रावकजी शुद्ध सामायिक करे — (समायिकको नियम राखे)।
 - (१०) दसमा व्रतमें देसावगासिक पापा करे, संवर करे. चवदं नियम चनारे।

ु॥ चडदे∗नियमके नामुणेऽ *५७३ ५७*

(१) सचित-याने कचा पाणी, कचा दाना, कबी हरी (सिलोत्री) वंगैरह संचित् (जीर्युक) श्चेनेक वस्तु समकंना जिसकी गिणतो तथा वजन साथ मर्थादा अपनी इंड्रा अनुसारको

(१) इंब्य-याने जितनी वस्तु खपने मुहमें बेनेमें छावे सो उनकी गिणती रखकर मयोदी करे। (३) विगय-याने हुध, दही, धृत, तेल, उर्फ (मीरे) की गिनती तथा वजन साथ मर्यादा करें।

(४) पन्नी—याने जुते, तक्षिये, मौजे, खनाड इत्यादिक

पैरमें पहरंनेकी मर्यादा करना याने गिणतीर्से रखकर जपरावेंतका [जससे ज्यादाका] त्यांग की संगटेकी जयणा (संगटेशे दोप नहीं) रे (५) तंम्बोल-याने खोंग, सुपारी, इसायची, पाने,

जायफल, जावंत्री वगेरे मुखवासकी मर्यादा करे। (६) वरथ-वस्त्र पहरने, ओडनेकी मर्यादा गिणतीं हैं

-) कुनुम-पाने पृत्त, व्यतर, तेल इत्यादिक जो संघनेमे छावे उसकी मर्यादा करे।
-) वाहन-याने गाडी, रघ, वन्धी, तांगा, एका, वेजी, हाची, घोना, पाजसी, म्याना,रेसगानी, टेक्सी (मोटर) रिखला, वाइसीकल, मोटर साइकज, कुर्गी, न्याव, वोट, हवाइ जहाज व-गैरह (तिरतो, फिरतो, चरतो उनतो) सव प्रकारकी सवारीकी मर्यादा करें।
- ए) सयण-याने गादी, तकिया, गसेचा, छप्परपि-खंग, मांचा, खुरसी, मकान वरेंगरे जो वेवनेके तथा सोनेके लिये काम आवे उसकी मर्यादा करे ।
- वितेषण-याने केसर, कुंकुं, चन्दन, तेल, पीठी, लेप,सावण,सुरमो वर्गेरह शरीरके विलेपन क-रनेकी मर्यादा करे।
- 🗥 दिसी-याने पूर्व. पश्चिम. दक्षिण. उत्तर. उंबी नीची यह ठव दिशोमें जालेकी मर्यादा करे।

(११) व्यवंत-याने कुरोख (स्त्री सेवन) की रात मर्यादा करे दिनका त्याग करें। (१३) नाहावण-याने स्नान, मंझन करनेकी मर्व करें। (१४) जत्तेसु-याने व्याहार, पाणी करनेकी मर्यादाकी

॥ वयकायके ध्यारम्बकी मर्यादा करें॥ (१) पृथ्वीकाय-याने मुरक, मही, खनी, गेरु, हिर्ह्म निमुक वगेरह सचित्र पृथ्वीकायके ध्यारम्बी

मर्योदा करे (२) द्यप्पकाय-याने सम्र जातके सचित (कडा पाणी पीने तथा वर्तनेकी मर्योदा करे तथा है सिंदिकी मर्यादा करे।

(३) नेष्ठकाय-याने व्यक्तिका व्यास्त चुक्षां, वहुँ चिगम (गेशनी) हुका, बीझी, चीझम, वुँ वंगरहर्का मर्यादा करें या त्याम करें। (४) बाउकाय-याने पत्तीन, पंत्रामे, कपकेते, वुँ ऐसे पना वंगरहर्म हुवा क्षेत्रको सर्योदा की

- (थ) वनस्पतिकाय—याने हरी, खिञोत्री, फूछ, फछ, पाडी, साग, तरकारी, टाझ, जन वगेरह सचित्त वनस्पतिकायकी मर्यादा करे या स्याग करे।
 - (६) त्रसकाय—याने वैन्डी, तेन्डी, चौरेन्डी, पञ्चेन्डी वगेरह हाखता चाजता प्राणीने जाणकर मारने-का पचक्ताण करे।

॥ तीन प्रकारके व्यापारकी नर्यादा ॥

- (१) घस्सी-पाने शल, तुरी, फटारी, चकु, दाल, तल्लवार, यन्ट्रक कतरणी (केंबी) वगेरह जा-तिका शल्लोकी मर्यादा करे गिणतीसे उपरापें-तका त्याग करे।
- (२) मन्सी-याने कल्लमः पांडन्टेन पेनः पेनसलः, का-गतः पत्रः त्वनः वही वर्षेग्दः जिल्लभेके सामानकी सर्यादा करेतः
 - (३ कम्मी-बाने करमाणीका क्राम क्षेत्र, बरावा, कुंत,बाबकी बॅगरह की मुर्बादा दा त्याग करे।

ये सब मिसकर २३ तेवीस घोल हुये इन व सोंकी मर्यादा श्रावक श्रांविकाश्चोंकी नित्य प्रति (मेशा) सुबह करना चाहिये, खोर पिठा शार्म याद करसेना चाहिये कमझागे सो निर्कास हां ऐसा करनेसे सब दिनमे राइ जितना पाप स्वा हैं, खाँर मेठ जितना पाप टस जाता है, ऐसी

हैं, नरक, तिर्वेच की गित टल जाती है छीर हैं ति प्राप्त होती हैं। (११) इंग्यारमे बतमें आवकजी प्रति पूर्ण पोपो हैं (१२) धारमा अतमें आवकजी सुजतो दान देवे प सुजता खाहार पाणीका क्षेणेवालाने खाहु^ड

र्यादा करनेसे महा फलकी (खानकी) प्राप्ति ही

वेरावे (देव) नहीं। शिक्षा का वीम बोख खिरुयने।

र. पर इच्य की श्रायोग्य इन्छा करना न चाहिए २. किसी जी प्राणी का वृश न चिनवना.

- ३. कोई जी असत्य वात सत्य तरीके आदरना नहीं.
- किसी त्री शक्स [आदमी] को दिख में रंज [पुःख]
 होवे ऐसा कट बचन कहना नहीं.
- थ. छपने पर इतवार [त्ररोसा] होने, सलाइ पुने तव कीसी को खोटी सलाइ देना नहीं.
- ६. पर निन्दा करनी नहीं.
- विना प्रयोजन गर्पा [गप्प्यां] मारकर समय फजुल गमाना नहीं.
- पंतर [चीना] दी हुई चीज क्षेजिस या श्रन्यायसे
 प्रदेश करणी नहीं.
 - ए. किसी जी जीव की हिंमा करणी नहा.
 - पगर्ड श्वी के साथ श्रयोग्य बरनाव से चलना नहीं पाने श्रयोग्य बरनाव रखणा नहीं.
- ... मनको स्थिर स्थना च लिए.
- . १२. पांचा इन्हिया को बन में राखा
- इर मुरन (प्रकार) से सत्य योखना चाहिए.

थे. व्यापरो इसरे व्यपराध कियो हुवे तो **व्यंत**करण्

माफी देखी, खीर खाप इसरेरी खपराघ की हुवे तो श्रंतःकरणसु माफी मांगणी. १५. दिन प्रति शक्तीश्रनुसार कुछ दान करनी.

१६, द्या का कोई अच्छा कार्य सब ऊपर करनी.

रण. देव गुरु धर्म की चक्ति करना खीर वर्नी

विनय करना. १०. मन यचन काया से शुद्धता रखनी. रए, ज्ञान सीखने में प्रत्येक दिन योकी पन टी

निकाल सेशी. २०. जगत के सत्र जीय का कल्याण हो ऐसी

नावना प्रति दिन नावणी. हिनशिका।

(१) देव व्यक्तिंत, गुरु निम्नंय क्यार केवसी प म्यो इया धर्म, यह नीनों धर्म के व्यवहारिक तार्व वादत धैर्य्यवान हुर्प सोच न करे।

(१ए) (प्रश्न) सूडला क्या? (ठत्तर) अपला किया हुवा उपकार को (आप किसी पर उपकार

ाक्या हुवा उदकार का (आप किसा पर उपकार 'किया होप तो उसको याद मत कर इसो जास की कोई निमित कारण सुं उपकार होंगे का था। (प्र^{क्र})

न्ब्रीर इड़ला क्या? (ठचर) झुन्द्र (कोई झुन्द्र देवे -तो इसी जाए के म्हारो पाप कमें को ठद्द हैं कोई - चव में में झुन्द्र दिया है, किसी का दोप नहीं, वीं-

. घव न न हुन्त ।इया हू, ।कत्ता का दाप नहा, वा॰ . घ्या कर्म घोष्यां हुट्ही) कटही (सम चाव हुं सहन कर)।

हुद्दा ।

सुत दिया सुन होत है. इन्त दिया सुन्त होय। अप हुए न और को. आपए हुए न कोय ॥१॥

्रे (१६) मीजो बोछे. ह्यीतिकारी बचन जिनय नम्रता रखे सम्यत रखे.पराया खबरूर नहीं जन देवे. सामखेरी सरबी खराये. याने सर



ज, जीवणो, मरणो, ए सब कर्म से प्राप्त होवे हैं, इस वावत धैर्य्यवान हुए सोच न करे।

(१५) (प्रश्न) जूलणा क्या ? (उत्तर) व्यपणा फिया हुवा उपकार को (त्र्याप किसी पर उपकार

किया होय तो उसको याद मत कर इसो जाण की? कोई निमित कारण सुं उपकार होणे का था। (प्रश्न) ख्रीर जुलणा क्या? (उत्तर) इंख (कोई इंख देवे तो इसी जाण के म्हारो पाप कर्म को उदय है कोई जब में में इंख दिया है, किसी का दोप नहीं, वां-ध्या कर्म जोग्यां बृटसी) कटसी (सम जाव सुं सहन कर)।

दुहा।

सुख दिया सुख होत हैं, पुःख दिया पुःख होय। आप हणे न और को. आपण हणे न कीय ॥१॥ (१६) मीठो बोले, (प्रीतिकारी वचन) विनय

(२) माठा वाल, (प्राप्तिकार) वचन) विनय करे, (नम्रता रखे) सम्पत रखे,पराया अवगुण नहीं वोले, दान देवे, सामलेरी मरजी अराधे, (याने सा-

मखेरी मरजी माफिकःचखे) सामखेरी व्यंग चे

निन्दा नहीं करना।

पराये कपर मत काख।

कार कर।

जाये, ए अमुख्य बशीकरण मंत्र है।

(१९) पाप की निन्दा करना, परंतु पापी व निंदा नहीं करना, स्वात्मा (ञ्रापरी श्रारमा)^ई निन्दा करना, परन्तु परात्मा (इसरेरे आत्मा)

(१०) "मेरा सो सद्या" इस इन को नो (स्याग कर) "सञ्चा सो मेरा" इस न्याय को स्वी

(१ए) व्यार्तध्यान, रूडध्यान, ठोक, परायेरा ग्र वगुण ढाक, स्वातमारा अवगुण काढ, आपरा अवगुण

> दृही. निज आत्म को दमन कर, परव्यातम को चीन । परमात्म का जजन कर. जो तं है परवीन ॥

(१०) सर्व जीवों से मित्रता, गुणाधिक पर प्र-मोदता, जुलिया पर करुणा और प्रृप्टों पर मध्यस्य-ता सो सङ्गाव हैं।

इति हितशिक्षा समाप्तन्॥

महानुजाव वंदना।

धन्य श्री ऋषजदेवजी, अनंत वल रा धणी, काया ने कांपती, धन वा पुरुषां ने वरती तप चौवि-हार कियो, हे जीव, ठमठरीरो उपवास तो तूंही चौ-विहार कर, घारे कायारी गरज सरसे, च्यार हजार साधुरे परिवार सुं दिका लीधी, दश हजार साधुरे परिवार सुं ठ दिनारे संघार सुं मुक्ति पहुंना वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होय जो ॥१॥

धन्य श्री महावीर स्वामी. अनंत वलरा धणी, काया ने कांपसी. धन जसम पुरुषां ने, वारे माम तेरे पक्ष चौविद्दार किया. ठ मानी चौविद्दार किया. पं-



लागी, मेघकुमारजी मन में रातरा चिंतवना करी, सदाइ तो हुं ब्यावतो जगवानरे समीपे जव ज-गवान मेघजी मेघजी कहकर वतलावता, आज कीणी मने मेघबो कहकर वतखायो नहीं, मैं कांइ जगवान रो खायो नहीं, पीयो नहीं, खीयो नहीं, दीयो नहीं. श्रोघो पातरा मुंहपत्ति देइने परनाते म्हारे घरे जासं. मेघकुमारजी जगवान रे समोसरण में खाया, जव जगवान मेथकुमारजी ने वतलावे, खावो मेघ, खावो मेघ, रात तो तुम्हे पुःखे पुःखे काही. एक रात्रि व महिना जीती काढी, जगवान पुरवले जवरो इतान्त बतायो. हाथीरे जब में सी सियेरी दया पाली, श्रेणिक राजारे रिक्षि पर बेटा थया. हे मेघकुमार ! निर्येचरे जब में इतनी बेद्ना मही. तिण्युं या बेदना तो की-तीक है. मेघकुमारजी मन में चित्रवता करीके ब्याज पीत दोय नेत्र की सार करसे. खीर शरीर की सक्षपा नहीं करें, इसी हासा करीने विजय विसाने गया. वांने म्हारी बंदणा नसम्बार होयजो ॥ ७ ॥

हायजोम मानमोम पूज्य जगवान समीप खाइने ^{जार} यान ने पूठधों कि खड़ो जगवान काड़ी खादि कुमारी कोणक श्रीर चेनाराजा री लकाई में गया है, जीला है हार्या, जगवान पीठी फुरमाइ (खट्टी फूमठी चंग्डेरी

देइने चंदनवालाने सोंपी, चंदनवालानी आज्ञा सेर्ने काली आर्या रलावली तप अंगीकार कर्यो, इनी सुकाली आर्या कनकावली तप अंगीकार किये तीजी महाकाखी खचुसिंच तप कियो, चौथी किरही ्रियार्या महासेन सिंघ तप कियो, पांचमी सुकिन्ही थ्यार्थाने सातमीस दसमी जिक्कनी परिमा तप कियो ववी महा किन्हा व्यायीने खपु सर्वतोगद्र त^प किया, सातमी बीर किन्हा रुक्त सर्वनोत्तद्र तर्प ^क रीने विचरी, व्यावमी सम किन्हा महोत्तर तप ^क रीने विचरी, नवमी पीछसेण किन्हा मुकावसी त^प

मालपरे कमलाइने हेवे पनीया) दसुंद कवराने चेमराज मार्या दसुंद राएयां सुणीने कह्यो, खहो जगयान म्हाने , संसाररे असीते पसीतेसुं काढो, दसुंइ राएयांने संज्ञ करीने विचरी, दसमी महासेण किन्हा आंविल चुक माण तप करीने विचरी, इसी इसी तपस्या करीने मुक्ति पहुंत्यां, वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होयजो ॥१३॥

॥ इति ॥

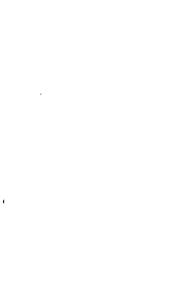
छ्रय समाधि मरण वालों की घट नावना लिख्यते ।

ै श्र छहे।! देखिए इस पुन्नत पर्याय का स्वरूप किसा विचित्र हैं, अनंत पुन्नत परमाणु इकट्ठा हो-किर यह शरीर वभा है, और देखते ही देखते वि-रिखाने खगा, देखिये! यह कैसी विचित्रता है।

रिता राजा, प्रस्ति । पर्व निता । प्रमाण है । पर्व चहो ! जिनेन्द्र प्रजु ! चापके वचन सत्य हिं कि छप्रुव खशासयंमि. यह शरीर छप्रुव (छस्थिर)

हैं अशास्त्रना हैं (अनित्य हैं), सो इतने दिन इस की पर्याय का पक्षटा होता था, उस का पूर्ण पणे झान म नहीं रखता था, अब इस देह की यह रचना देख

ं भं नहीं रखताथा. छवं इस इस का यह रचना इस ^इ आपके वाक्यों का पूर्ण विश्वास हुवा। इ



तो क्या, रहते खीर जाते मेरा स्वजाव तो एकसा ही है, खीर एकसा ही रहेगा, फिर शरीर के विनाश से चिन्ता का क्या कारण ।

६. हे जिनेन्छ! इतने दिन में जानता था कि यह शरीर मेरा हैं, परन्तु अब मुके सत्य जापण हुवा कि यह शरीर किसी का न हुवा खीर न होगा, जो मेरा होता तो मेरे हुक्म में क्यों नहीं चबता; यह प्रत्यक्ष रोग, जरा खीर मृत्यु खबस्या को क्यों प्राप्त होता है।

9. छरे जोखे जीव! इस दारीर को माता, पिता, पुत्र घनावे: जाई, जिगनी, जात बनावे: पुत्र. पुत्री, तात बनावे: जाई, जी जर्जार बनावे, तूं तरा जाणे, यह एक दारीर इनने का कैसे होवे? जो होवे तो कोई इसका बिनाश होते रख खेवे. इस खिये शरीर खाँर कुटुस्य कोई जी तेरा नहीं हैं. तूं सर्व से जिल्ला विदायमार प्रार्थ हैं।

ए. यह सम्पत नो जिसे इन्द्र जाज की माया,



में मेवा तरा है, वो जिधर हाघ माले, उधर मजाही (मेवाही) हाथ लगे, तैसे मेरे दोनुं हाथ में लक्ष है, अर्थात् जीता हूं तो व्रत नियम तप संजमादि शुज उपयोग की खाराधना करता हूं खोर मर गया तो स्वर्ग मोक् सुख का जोगता होऊंगा, विदेह क्रेत्र में विहरमान तीर्घेकर के, केवली जगवान के, मुनि मः हाराज के, महासतीयों के दर्शन करुंगा, देशना सुणुंगा, प्रश्नोंचर कर निःसंशय होउंगा, तत्ववेत्ता होकर राग द्रेय के इत्य करने समर्घ होउंगा, फिर मनुष्य जन्म को प्राप्त होकर दीका यहण कर, प्रष्कर तप कर घनघाति कर्म्म का नाश कर केवल ज्ञान प्राप्त कर

रश. जैसे किसी के पहले रहने का घर जूना (पुराना) पमने जैसा होता है, तब वह रहने को बहुन इन्य सर्व कर इसरा मकान बनाता है, खीर नेंद्रान होने पर तुरंत अति हर्ष और अति उत्सव है साज उस में प्रवेश करता है. तैसे ही है जीव ' नेंग यह

अद्य सुख पाउंगा ।

मिला ।

र्विप्त सुख देने वालो, वेकिय ही (इारोर) प्राष्ट होगी, तो व्यव इस व्यस्थि, मांस, रक्त, केस, व्यारि मझोन पदार्थों से जरी हुई क्एचनंग्रूर निकम्मी देर्र पर क्यों ममत्व करता है ? कुंपकी बटी के महु^ब

250

करके यसगई, शिथिस पमगई, जरा क्येर कांत्र ने तेरी सत्ता इरसी, क्येर तेने पहसी धर्म्म फियां की है, इस सिये तुके अवस्य देवादिक कत्तम गति में महा दिव्य मनोहर िन्तर रूप बनाने यासी नि

्र १३. जैसे कोई बेख (वाणिया) शीत, ताप कुपा, तुपा व्यने ह जुःख सहन कर माल का संगर्ह करता है, व्योग नाव व्याने की सह देखता है, वे

करता ६, आर्थान का राह दल्ता ६, ४ तेज्ञो होय तो माज येचकर नका करूं, चोर जब ता^व व्याता है तय व्यति कट में मंग्रह किये माज ^{द्रा}

किंचित ममन्य नहीं करता, खारशीधखात उपाउँन

करना है, निमें ही है जीव' नेने नी खारस्त खीर



पराधीनता इत्यादि वंदीखाना (कारामह) जैसा ^ब नेक इःख दिया, अब मृत्यु नामे मेरे परम मित्रकी मेरे ऊपर परम ऋपा हुई है, जिस से यह जेवला^{हे} से बना मेरे को स्वर्ग मोक स्थान देवेगा। १६. समाधि मरण विना स्वर्ग, मोक्ष देने ^ह इसरा छुनिया में कोई जी समर्थ नहीं है। १९. जैसे जोग जूमि के मनुष्य जुगक्षि^{ये के} इंटिंग्स सुख पुरने वाले कस्प युक्त होते हैं,

???

शुन जेती बांच्या को बैसे फल की प्राप्ति होती हैं तेसे व्यपनी इच्छा पूरनेवाला कल्पवृक्त समान गई मृत्यु प्राप्त हुवा है, श्रव इम की ठायां में बैठ की अजो अगुत इच्छा विषय कपाबादिक भारण करे।

कहर रुक्त का स्वजाव है कि उस के नीचे वैठ शुजी

तो नग्क नीर्यचादिक अञ्चनगित प्राप्त होगी और

सम, समवेग, त्याग, बन, नियम, सत्य, शीख, क्ष्मी

संतोप समाधि वाव का सेवन करोगे तो स्वर्ग सुर्व

के जोका हो, एक जब से मोक् प्राप सरीये।

रण, जरजरित छश्चि छपवित्रदेह से हमाक देव जैसा दिव्य रूप, मरण ही दे सकता हैं।

रण. जैंसे मुनिराजध्यनेक नय. उपनय, प्रत्यक्ष परोक्ष दृष्टान्तों से दारीर का स्वरूप पताकर ममल इर कराते हैं. तैसे यह मेरे घटन में रोग पदा हुव हैं: सो मेरे को प्रत्यक्ष प्रमाण से उपदेश करता हैं कि है पुरुष! तूं इस दारीर पर क्यों ममत्व करत हैं? यह देह तेरी नहीं हैं. यह तो मेरे पति (काख की जक्ष्य हैं।

२०. जहां तक इस शरीर में किसी प्रकार व्या न होय. वहां तक इस उपर से ममस्य न उतरे खी विशेष १ इस का पोषण कर पृष्ट करे युं पोषते ही जब रोग प्राप्त होता है खीर खनेक उपचार कर रोग नहीं मिटता है तब इस देह उपर से स्वज विक ही प्रेम कम हो जाता है. इस जिये मुनुस् जपकारी मेरे तो रोग ही हुवा है। १२. रे जीव! इस रोग को देख कर जो तूं प वराता होय, सद्मुच जो रोग तुर्फ खराब खगत होय, इस डुख से कटाखा खाता होय तो बाह्य खै

१२४ से जी ज्यादा उपदेशक, देह से ममत्व ठोकाने वार्जा

नहीं हैं, कदापि खोंपधी उपचार से एकदा रोग मिट गया तो क्या हुवा, मिटा रोग तो संख्याता असंख्याता काल में पीठा प्राप्त हो जाता हैं, इस खिये जिनेन्द्रकी हार्व रोग खोंर सर्व चिकिरसा के झाता महावेच की करमाई हुई समाधि मरण रूप महा खोंपधी का सेवन ु कि जिस से सर्व खाषि, ज्याषि, उपाषि की

पिथ्यों का सेवन ठोक, क्योंकि यह रोग कर्माधीन है, खोर खोपिथों में कुठ कर्म्मको हटाने की शकी

२२. जो वेदना का छठाव ज्यादा होय तो छाण नन में ज्यादा खुशी होय कि जैसे तीब ताप से सु र्था सीघ निर्मख होता है, तैसे इस तीब वेदना से,

तीश हो, श्रजरामर श्रजंत श्रक्तय श्रद्धात्राथ मोह

उख मिले।



महात्रत, इन्डिय दमनादि, खनेक जप तप संग करके प्राप्त करते हैं, वो सुख प्राप्त करने का यह मूह रूप अति उत्तम मोका (अवसर) आया है, सो अ जरा समनाव धारण कर जिस से स्वर्ग मोहा, सुर नोक्ता होवे । २७. रे जीव! तेने इतने दिन जो ज्ञानादिक का अप्यास किया है, सो इस समाधि मरण में स

परिणाम रखने के लिये हैं सो अब याद कर। थण. जिस वस्त्र को वायरते बहुत दिन हो जाता है, जिस से विशेष परिचय होता है, उस से स्वजा

से ही मोह कमी होता है, तैसे ही इस शरीर से जाए। इति थी २८ शृद्ध भावना समाप्तम ।

थ्यथः नावना सिम्ब्यते ।

(१) पत्नी नावना-समदृष्टी पुरुष आपके चेतन

ने खसंख्याना परदेशी जाले।

The second secon



ष्टि. रे तं ऋघोर पाप रा क्रणहार, रे तुं कुदृष्टि, ापिष्ट जीव! प्रायः तो घारे अनंतानुवंधियो कोध, रनंतानुवंधियो मान, अनंतानुवंधिया माया. अने ोनरी चोकनी, वापना घारे खपि नहीं, गुणुगणो गरे पडट्यो नहीं, धिरजगुण घारे आयो नहीं, तु-णारूपी दाह घारे मिटी नहीं, आकुझ व्याकुझता गरे मिटी नहीं, द्रियाववाला कल्लोल उठले, युं गरे कृष्णा रूपीया कल्लोल छठल रह्या ठे,तं तो किया हरे है सो सून्य मन सुं करे है, धीर्य गुणसुं करीश हो घारे खेले खागसी, झून्यपणे करी जो क्रिया, सो तो ठारपर खीपणे सरीखी है, रे चेतन! व्यनंतकाय, अनक्, शीखबृत, जरदो, नालखी, अमस नांग त-माखुरा सींस खेखेके जांड्या. रे चेतन, वापना धारो हते बुटणों होसी. हे चेनन नं पुजल रे वास्ते कित-ीएक आङ्गुझ व्याकुलनाई कर रह्यों हे. खोहो! म्हारे गरल पत्थर, म्हारं नवनिधान, म्हारं रसकुंषा, म्हारं रसायण, म्हारं चित्रावेस. म्हारं स्रमृत गुरका वा

री, चौथे खारे राजीव, तूं पंचमकालको जरत केन्नर की मलो, कितिएक बात, ए चेतन कर्म खजीब वस्तु, चेतन! तूं जीव वस्तु, रे चेतन! जीवसं जीवतो सर परचो करें, पिण अजीवसुं क्युं करे, पिण तूं निर्वेष कर्म महा सबस, रे चेतन! कर्म तो चलदे पूर्वप रियां ने जठाय पटक्या, इग्यारमें गुणठाणेरा जीव जर्क जायन केवलीजी; कमस प्रजाचार्यजी, महाविदेह र मानवियाने किगाय दिया, तुं पंचम कालरो जीव हि तिएक वात खाठ कर्मी एक सो खठावन प्रकृति प्र

किमकर जीत्यो जाय, मोह कर्म्म लारे लाग्यो, प्रव किमकर जीत्या जाय, संग खगे छाय हमारी विनती ! चारित्र री फोजां मांईं। रही, सदवोध सं याज्ञा मांहीं रही, सदागम सुं परचय राख . 🚜 घारणकर, तृष्णा रूपणी दाहने पूर्वी मार,

ज्यूं यारे व्यातमारी गरज सरे, धन वे साधु मुनिराज, पांचे सुमते सुमता, तीने गुत्ते गुप्ता, ठकायना पीहर,

्सात माहाजयना टाखणहार, व्याव मदना जीपक,









नहीं आज्ञा गुरुदेव की, अचल कीधी ठरमांहि। ञ्चापतणा ञ्चाधार है, यह परमाद्र नाय ॥ ३॥ केवल करुणा मुरत हो, दीन वन्धु दीनानाघ। पापी परम खनाघ हुं, यहो प्रजुजी हाघ ॥ ४॥ अनंत काल से आयमीयो, विना जान जगवान। सेव्या नहीं संत चरण को,मुक्युं नहीं ऋजिमान॥५॥ संत चरण अखर विना, साधन कियो अनेक। पारन उस से पामीयो, जग्यो न खंस विवेक ॥६॥ सव साधन वंधन जये, रह्या न कोइ छपाय। सतसाधन समज्यो नहीं, तब बंधन किया जाय॥॥॥ प्रज प्रज से खागी नहीं, पनयो न सतगुरु पाय । दिवा नहीं निज दोप तब, तिरु में कौन उपाय ॥०॥ अथमाधम अधिको अधिक, सक्ख जगतमें हुं। पर निश्चय खाया बनुं. साधन करने सुं ॥ ए ॥ पनी पनी तुज पद पंक जे. फिर फिर सांगु एह । सङ्गुरु सन्यस्वरूप तज्ञ. यह हडता करा देह ॥१०।

॥ अय वारह जावना ॥

॥ दोहा ॥

पहेखी अनित्य जावना;-राजा राणा ठत्रपति, हाथिन के असवार।

मरना सबको एक दिन, अवनी अपनी वार ॥१। इसरी अशरण जावना;-

दल घल देई देवता, मात पिता परिवार । मरती विरियां जीवको, कोई न राखन हार ॥१॥

तीसरी संसार जावना;-दाम विना निर्धन छःग्वी, तृप्णावश धनवान।

दाम विना निर्धन छुःग्वी, तृष्णावश धनवान। कहूँ न सुख संसारमें, सब जग देख्यो ठान ॥३॥ चीथी एकस्य जावनाः—

व्याप व्यकेदा व्यवनरे, मरे व्यकेदा होय । यों कवहूँ या जीवको, साथी मगा न कोय ॥॥ पांचमी पर पंख तावनाः—

जहां देह अपनी नहीं, नहां न अपना कोय। घर मंपति पर प्रकट ये, पर है परिजन सोय॥णी

देपे चाम चादर मड़ी, हाम पींजरा देह । तितर या सम जगतमें, ख्रौर नहीं घिन गेह ॥६॥

॥ सोरठा ॥

ं वद्गी अग्रुचि नावना:-

सातमी आश्रव जावना;-

गोह नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा। कर्म चोर चहुँ छोर, सब खुटे नहीं दि**शता ॥**॥॥ व्यावमी संवर जावना:-

तत गुरु देव जगाय, मोह नींद् जब उपरामे ।

तव कुठ वने उपाय, कर्म चोर छावत रुके ॥७॥

॥ दोहा ॥

नवमी निर्द्धरा जावनाः-

हान दीप नपनेख जर, घर शोधें जम होर। या विधि विन निकले नहीं. पैठे पूरव चोर ॥

पंच महात्रत संचरण. समिति पंच प्रकार ।

प्रवस पंच इन्डिय विजय, धार निर्जरा सार ॥ए॥

दसमी खोक संग्राण जावना:-चौदह राजु उतंग नज, सोक पुरुष संग्रान ।

तामें जीव व्यनादिते, जमत है विन ज्ञान 🕸

इग्यारमी योधवीज जावना:-धन तन कंचन राजसुख, सबहि सुखन कर जान

प्टर्न हे संसारमें, एक ययारय ज्ञान **॥**११॥ 🏿 यारमी धर्म जावना 🕾

जाचे मुरमह दूरा सुन्त, चितत चिन्ता रैन ! विन जाचे विन चिनये, धर्म सकल सुख देन!!

॥ दोहा ॥

व्यनित्य व्यक्षरण संसार हे, एकत्य परपंत्र जान ! यजुनि याश्रव संदग, निर्जग सोक क्यान ^{॥११}

बीध इसीन धर्म थे, बारह नावना जान। इनका तार जो सड़ा, क्यों न खह निर्याण ¹²⁸

: १ वःग्रः सःस्तः समान्न ॥















২–ন্যুত্ত:–

ज्*व*ंबचन मुख पर मत खाव िरा

··· साच वचन पर राखहु जाव 🎼 🔭

मालिक की खाझा विना कोय। / ट्री चीज गहें सो चोरी होय॥

ताते खाङा विन मत गहो। चोरी से नित मरते रही ॥

ध−कुशी*तः*---परदारा के नेह न खगो।

इससे तुम इर ही ते जगो॥

धन एहादि में मूर्जी हरी। श्मका द्यनि संबह मत करो ॥

॥ चार कपाय का मर्चिया खिरूपते॥ -

प्रयम क्याय बडा, परुवा हे जगत जीव,^{ह्या} केरी चोककी में, उमर गमाई है। क्रोप है ^{प्रा}

वीक, मान है बज्ज घंन, मुन्यों न मुड़त जाकी, ऐसी करन्राई है ॥ माया है वांस की जन, बोज है किरमची रंग, घोयों न धोवत जाकी, ऐसी ठिव ठाई

है। मरि जावे नरक घोर, ताकुं नहीं छोर छोर, ऐसो छुष्ट जीव जेने, समकित न पाई है ॥१॥ जासुं छागे चोकनी को, नाम है छप्रत्याख्यान, जामे जीव वर्ष एक, केरी स्थिति पाई है। कोध मान माया

खोन, जामे जीव रह्यों खोन, आदि केरी चोकनी हुं. अति इसकाई हैं॥ कोथ है ताखाव की लीक, मान दांत केरो यंज, माया मींहा सींग सम, प्वी

मान दांत केरो घंज, माया मींडा सींग सम, एवी इःख दाई है। खोज है मोरी केरो रंग, ताको नहीं होन जंग, मरीने तिर्देच होय. इती न खाई है ॥१॥ ब्रत्याक्यानी चोकमी म. बम्यो है चेनन राय. जीव

जिहां चार मास. केरी स्थिति पाई है। कोब है बाबु की खीक, मान बेंन केरो खंत. बिन्नी से कनु मि कानी बनखाई हैं॥ माया बेंब केरो मृत. समय हैं भी नहीं कृत, धर्म सेती राखे हित. श्रावक बीने पाफेड़

र्म करो तमे प्राणिया, धर्मधकी सुख होय ॥ र्म करंता जीवनें, पुलिया न दीना कीय ॥॥। 🕟 ीव दया पासी सरी, पासी ने नव काय ॥ स्ता घरनो प्राहुणो, मीठा जोजन खाय ॥५॥ ीव द्या पाली नहीं, पाली नहीं ठव काय ॥ र्ना परनो पाहुलो, जिम खाच्यो तिम जाय ॥६॥ ज पट्यों हे वजार में, रही। गरद सपटाय ॥ प्रत्य जापे कांकरी, चतुर सियो छठाय ॥॥॥ बीटा केर याजार में, खांबा पेम खजूर ॥ बटे तो चाखे प्रेम रस, पने तो चकनाचूर ॥ण॥ प सिन्ममण सांची फही, सर्मी ने हितकार ॥ र्धरेक द्या फरुला राखजो, नमे सांजहवानो सारा।ए॥ परें। सार्ग पीतरागनो, सुक्रम जेना चेद् ॥ मेंना पहुँन माथ को सन्हा गायी उसेर ॥१०॥ गिगारक विगती सन। विश्वय सम्बन्धा मन ॥ दिसामे रह हो बगुना बहुबाग पन बन र 1 दीप्रवास प्रवास १३ हर से १ 🟋 वैसा लीला कायशा जार पत्र से हुन







॥ द्रा पचक्वाण स्तवन लिख्यते ॥ (न्यालदेना देशी)

दश पचक्ताणे जीवकोजी, कांइ पांमे सुख अपार करतां एक नवकारसी जी, सौ वरस नरक निवार॥

तप समो नहिं जगतमें जी, सुख तणो दातार ॥न ।।।१॥: वीजुं पोरसी वर्ष सहसनो जी, कांई साढ पोरसी दश हजार पुरिमढ लक्ष एक वर्षनोजी, एकासणे दश

बक्तभार ॥ तo ॥ २ ॥ नीवी तोने कोन वरसनोजी, कांई दश कोम एकलगंण सो कोम एकलक दहेजी,

श्रांविल सहसकोक जांण ॥ त० ॥ ३ ॥ सहस दश कोन जपवासमेंजी, कांई ठठ तखो तपधार लक्त कोटो

वर्ष खपावहीजी, अठम कोटी दश खक्तटार ॥ तण ॥ ४ ॥ कोटाकोटी वर्षनोजी, कांई दशम जस्म करें

कर्म । मुनि राम कहे तपकी जियेजी, पामस्यो शिव शर्म (आश्रम)॥ त०॥ ए॥ इति॥

॥ चौबीस तीर्थकरोका स्तवन ॥

विनता नगरी. साजिराय राजा. मोरादेवी राष्टी



माता जनम्या श्रेयांस स्वामी ॥११॥ चंपापुर नगरी. वसुसेन राजा, जयादेवी राणी। जिल्लामाता जनम्या वासंपुच्य स्वामी ॥१२॥ कंपिखपुर नगरी, कृतीचार्ण राजा, श्यामादेवी राणी। जिल माता जनम्या वि-मखनाय स्वामी ॥१३॥ खजोच्यानगरी, सिंहसेन राजा, सुजसा देवो राणी। जिल माता जनम्या अलंतनाय स्वामी ॥१४॥ रह्नपुरी नगरी, जानुराजा, सुबता देवी राणी। जिल माता जनम्या धर्मनाथ स्वामी ॥१५॥ गजपुर नगरी विश्वसेन राजा, खचिरादेवी राणी। जिए माता जनम्या, शांतिनाघ स्वामी ॥ १६॥ इ-न्तिनापुर नगर हार राजा, श्रीदेवी राखी। जिख माता जनम्या कुंध्ं नाथ स्वामी॥१७॥ गजपुर नगर सुद्र्याण राजा. देवी रागी। जिल् माता जनस्या धरनाय न्वामी ॥ १०॥ महिला नगरी करराजा

प्रजावनी गर्लो । जिल् माना जनस्या, मर्ज्ञानाय

जिण माता जनम्या शीतलेनाथ स्वामी ॥ १०॥ सिं-इपुर नगरी विष्णुसेन राजा, विष्णु देवी राणी। जिण



जित संजय छिजनंदन, छिति छानंद करना ॥ सुमति प्रमा सुपार्थ चंडप्रज, दास रहुं घरणा ॥ घरण नित्य चंड मेरी जान घरण नित्य चंड ॥ उग्रं करे कमें का पंदा, तुम तजो जगनका धंदा, दीवा टोय नयन

स्रमि तो **उरणा रे ॥ दी**ठा० ॥ पांचपद० ॥ २ ॥ सु-विधि शीतल श्रेयांस चासुपृज्य, हृद्य मांहे धरणा॥ विमल अनंत धर्मनाय शांतिजी, दास रहं चरणा॥ जिनंद मोहे तारो, मेरी जान जिनंद मोहे तारो ॥ संसार खंगे मोहे खारो, वैराग्य खंगे मोहे प्यारो, में सदा दास चरणारो, नायजी अव कृपा करणा रे॥ नाथः ॥ पांच पदः ॥ ३ ॥ कुंचु व्यर मिह्न मुनिहु-वतजी, प्रज्ञ तारण तरणा ॥ निम नेम पार्श्व महा-वीरजी, पाप परा हरणा ॥ तरे जब प्राणी, मेरी जान तरे जब प्राणी ॥ मंसार समुद्र जाणी, सुणो सूत्र सिर्द्धांतकी बार्णी, पाप कर्ममें अब तो मरणारे ॥ पाप० ॥ पांचपद्०॥ ४ ॥ इन्याराजी गण्धर बीस विहरमान, वाद्यामुं मिट मरणा ॥ अनंत चांव संक्षिं नित नित



मत मुको विसार। विष हलाहल खादरयो जी, ईश्वर न तर्ज नार ॥ हो जिंग ॥ १६ ॥ उत्तम ग्रुयकारी होवे जी, स्वार्थ विना हे सुजाए। किसान सींचे सर-वर्ष्ट जी, मेह न मांगे माँए ॥ हो जिंग ॥ १९ ॥ तु-फने ग्रुं कहिये घणो जी, तुम सब वातां जो जांए। सुजने घायजो साहेवा जी, जबोजव घांरी छाए।।

हो जि॰ ॥ र० ॥ तुम उपकारी ग्रुणनिलो जी, तूं सेवग प्रतिपाल । तूं समरथ सुख ! पुरवा जी, करो म्हारी सार ॥ हो जि॰ ॥ रए ॥ नाजिराय कुल चंदलो जी, मरुदेवीनाजी नंद, कहे जिनहरल निवाज जो जी, दीजो परमानन्द ॥ हो जिनजी मुक पापी ने जी नार ॥ २० ॥ समाप्तम् ॥

॥ पांच गतिरो स्तवन ॥

आरंज करता रे जीव शंके नहीं, धन मिल तृष्णा अपार घात करे हे पंचेन्डी जीवरी, करे मद मांमनो आहार ॥ चार प्रकारे जीव जावे नरक में ॥१॥ माया कपट गुढ़ माया करे, वोले छुंगजी वेख कून ती कूना नावा करे, ए तिर्यञ्च गतिना सेनाखा ^प प्रकारे जीव जावे तिर्यञ्चम ॥ २ ॥ जिल्लिक परिव

सरल स्वतावयी, विनय तला गुण होय। द्या व तो दिखमें है घणी, मस्तर नहीं मन मांय चार प्र जीय जाये मनुष्यमें ॥ ३॥ सराग संजम सराग करे, श्रायकरा व्रत बार । बाख तपस्वी द्यकाम निः तिणमुं अदे मुग व्यवनार । चार प्रकारे जीव व · देयता ॥४॥ झान सुं जालेरे जीव व्यजीवने, समि श्रद्धादि सेंछ। संवर शेके नया कर्म व्यायता, त पूर्व कर्म खपाय ॥ चार प्रकार जीव जावे मीहमें ह ॥ इति ॥ ॥ श्री महाबीर स्वामीको तंद सिम्यने ॥ थ। महाबीर शःगन ३णी, जिनप्रित्यन स्यामे

प्रयाग चरण कमल नित्र चित्र धराम, प्रणामु झीरनार । स्थिति नरम्। चित्रः मात्रः खकाण् अयगेहरी वरण व्याङखो कुंवर पदे तपस्या परिमाणा ॥ चारित्र , तप प्रज्ञ ग्रण चणुंचे, ठदमस्य केवलनाण ॥ तिरय

गण्धर केवंखी जिनशासन परिमाण ॥ १ ॥ देवलोक द्समें चीस सागर, पूरण स्थित पाया ॥ कुंमञ्जार नगरी चोवीस, श्री जिनवर द्याया ॥ पिता सिद्धारय पुत्र, मात त्रसदादि नंदा ॥ ज्यांरी कूक्ते व्यवतस्था, स्वामी बोर जिखंदा ॥ ज्यांरे चरण लंठण ठे सिंघ-नोए, श्रवगेहणा कर सात ॥ तनु कंचन सम सोजती, ते प्रणमुं जगनाय ॥ २ ॥ सुमेरु गिरिवर इन्द्र चेः सन, मिल मोहोठव कीनो ॥ अनंतवली अरिहंत जाणी, नाम प्रजुनी दीनो ॥ घोहोत्तर वरसनी व्या-उखो, पाया सुखकारी ॥ नीस वरस प्रजु कुंवर पदे, रहा व्यक्तिप्रद्धारी ॥ ज्यांरी सान विना सुर गति गयाए. पिते खीना संजमतार ॥ तपम्या किनी नि-रमञ्जी, प्रजु सामी बारे अस्य मजर ॥ ३॥ नव ची-मामो नप कियास, प्रजुणक त्रमासी।। पाच दिन उदो धनिष्ठ, तह माम योमानी ॥ एक एक मानी



॥ एक घरा गुणसन सहेंस श्रावक, नीन सामधाः दिका॥ श्रथिक श्रानरे सहेंस, इम्पारे नणधरनी मासा॥

गोतमस्वामी वडा शिष्य, सती चन्द्रनवाला ॥ ज्यांरे केवछज्ञानी सात सोष, प्रज पहुंता निरायण ॥ शा-सन चरते स्वामीनो, एकवीस सहेंस पर्प प्रमाण ॥ ॥ ॥ पूरव तीनसो धार, तेरासो व्यवधिहानी ॥मन पर्यव पांचसो जाण, सातसो वे.वसनाणी ॥ वे छि.य खच्यिना धार, सातसो मुनिव्, कहि्यु ॥ बाद्ी प्यार सो जाए, के जिल्ल जिल्ल चरचा छिट्टिय ॥ एकाएक . चारित्र लीयो ए, प्रजु एकाएक निरवाण ॥ चोसठ वरस लग चालीयो. दर्शन केवल नाण ॥ ७ ॥ वारा नर वस दृपन, वृपन दस एक जिस हैवर॥ वारा हैवर महिष, महिष पांचसो एक गैवर ॥ पांचसो गजहरी एक. सहेम दोय हरी एक छाष्टापद्॥ दम सम अप्रापद एक वसदेव. दोय वसदेव एक बानुदंव दोय बासुदेव एक चकी जद् ॥ कोम् चको एक सुर कछोए, कोक मुर्ग एक इन्छ, इन्छ अ-



























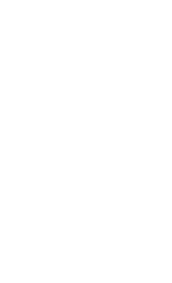


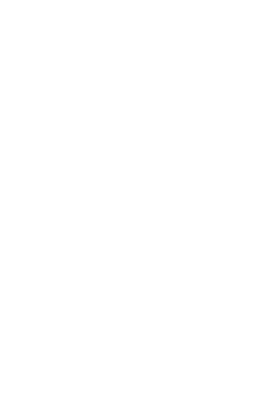




















्रक्र्यी बोल १ से ह ताइतथा बोल १७ १२ - १६ - २४ वी स्त्^{षी}ः

्ज रूपी

क्रिका स्वी से छ। बोस ए। १५-१५-१०

बोछ ल- ११-१३-१६-१ल २२- २३-२५ बोच्यरूषी.



पश्चीस बोलको थोकड़ो । य । चउदस् तेबीस् दस् नव प्रदु चउनी दय चउ तिबह दयुदी वि चव ॥३॥ बाल वया समगोवासयांगं महत्वया पर्यं व त मुणिंदस्त । एगोण्यदास् भंगः पञ्च गरि खेयव्या श्रास्तिं श्राणुकम्म भेया ॥ ४ ॥ मिच्छा - मिव्यान्य रग सङ्ग---गनि चार সাহু—মানি বাৰ श्राया-भारमा भार काय--छकाव 'द्राउयः अश्वं वं रेल इदिय-रिंदर पांच क्षेरला - हरण ए पञ्चय---ग्गंति छ दिट्टि-इरिनीम उम्हागा-च्यान बार नगु---वरीर शंच द्द्य---द्रम ए जीम-जेय कार ग्सि--गिन हो द्वयोग-गर्नम क्ल गिद्दस्यययाणि-^{ज्याच्य} द्वास-च्यं बन्ड विस्तास्त्रय—प्रशार द्वारा । शुक्रताच कार्यर सङ्ग संगा क्योतस र्रद्विपविषय ध्या किय चारिन -व्यक्ति दोष

Nin.



पचीस घोलको थोकड़ो।

च । चउदस् तेवीस् दस् नवः भट्ट चउर्व दयः चउ तिर्वहः दयं दो वि चेवे ॥ ३॥ गा वया समगोत्रासर्याणं महत्वया पर्धे य त मुणिंदस्त । एगोण्पद्मास् भंगः पद्य या

गोयच्या श्रास्ति अगुक्तम मेया ॥ १॥ राष्ट्र---गति चार मिच्छा-पियाल्य स

जाट्ट---मनि पांच तत्त्र-भरव गर्य

आया—मानमा भाउ काय--- छकाव दिराइयां अंडमं मंत्रीन इदिय--शन्त्रव वांच

सेस्सा-करण ए प्रमाय-गर्गाति छ दिट्टि—इपि गीन पांगा--शत दश उस्ताग्-धान बार निग्री---शरीर सोच

द्य्य-दगर् तीम् --जंब क्यरह र्गाम-लिम से द्वयोग-ज्ञान बाह गिहत्यवयाणि-^{अपन}

राम्य -- वर्ष वन्द विग्गाटवय-अरका (प द्वारा गुनदान बहरर

भट्ट संगा क्योजाक्य भारित -व्यक्ति दोव Piter.

र्राडयतिमय १५०० leve



पश्चीस बोजको धोकड़ा । च । चउदस् तेवीस् ,दस् ,नवः,श्रद्धं चउवी द्रयं चउ तिगिद्दं द्रयं दो वि ,चेव ॥ ३॥ बास वया समगोत्रीसर्यार्ग महत्वया पित्र व ता मुणिदस्स । एगोगापन्नास भूगः वद्य गरिषे रोपच्या श्रास्ति श्रागकमा भैया ॥ ४ ॥ स्ट्र- —गनि चार সাহ্ৰ—সানি গাঁধ कृ[य्----ष्टणय े दगुरुय- अरबंबन हर्दिय---धन्तिय वाश्व स्तरमा--व्या पञ्चय—गर्गति छ दिट्टि -इंदि तीन पांगा—मन दन माग् —वरीर वांच द्र्य--- इम र्ड सारा ---अव क्यार ग्राचि--गीन हो गिर्स्यवयागि-^{क्रम्ब} दुवयोग - स्थान बाल र, इस वीगगाद्ययः अराजनस्य स्वरंग्य बहरूर र्दाद्वपांचमय एका ५०० पारिन -व्यक्ति देव Ma

१ पेहलेबोले गति च्यार क्लिक्टी स्वाचा २ हुजे बोले जात:पांच १० किं विकास १९ **२ तीजे घोले काय छवता है है है है है** थ चोथे बोले इन्द्रिय पांच 1 ही है कि एक तर प पांचमें वोले पर्याय (पर्याप्ति) छव । 🚎 🚎 ६ इंडे बोले प्राण-दश । ी विकास 🔗 **७ सातमें बोले शरीर पांच ।** ं हिन्दी रू े ब्राटमें वोले योग (जोग) पन्नगृह । 👵 🥫 ६ नवमें बोले उपयोग बारह 🗓 📑 १० दशमें वोले कर्म आठ। ११ इन्यारमें बोले गुणठाणा १४ (गुणस्थान चवदे)। १२ वारमें वोले पांच इन्द्रियांकी नेवीस विपय। ' १३ नेरमें बोले मिध्यात्व दश और पनरह. कुल पर्चास ।

११ चउदमें वाले नव नत्वको जासपसो । (छोटी नवतत्वका ११५ वोल. वड़ी नव-

(पद्मीस बोलको थोकड़ी) तत्वका भेदानभेद्रध्यां)ीर होते ही १५ पन्नरहमें वोले आत्मां आठन होते हैं १६ सोलमें वोले दंडक^{म्}त्रोवीस र्मिंग होते। १७ सतरमें बोले लेरेया छव 😉 जिल्ली १८ अठारमें घोले हिए तीन । विद्रां विकी

ŷ

१९ उगर्गाशमें बोले व्यक्ति च्यार 🕮 🔊 २० वीशमें वोले पट् ('छवं) हर्व्यका तील ं २१ एकवीशमें बोले वाशि दोय-जीवना श्रजीय राशि । जाह हैंगई मिहा है २२ याबीशमें बोले श्रायकरा बार्रह वर्ते 🏋 🖰 न्दिश तेबीशमें बोले पाँच महात्रन सांधुनीका। २४ चोवीशमें बोले गुणपचास भागांको जाणप

२५ पचीशमें घोले चारित्र पांच (पांच प्रकार) ॥ विस्तार सहित ॥ ? पहिने वाले गति थे. गति किसको कहते हैं। गति नामा नामकर्मकं उदयसे जीवकी पर्या विशेषको गति कहते हैं । गतिके कितने ं भेदहें १ च्यार हैं: नरकगति, तियुचगति, हैं मनुष्यगति, देवगति । जन हैं हुई कहा री दुने वोले जाति भं, जाति किसको कहते हैं १ ः अव्यभिचारी सदशतासे एक रूप करनेवाले ्विशेषको जाति कहते हैं। अर्थात वहः सदश ं घर्मवाले पदाधों को क्षी. महस्स करता है। जातिके कितने भेंद है ? पांच हैं: पकेंद्रिय, वेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चउरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय। र तीजे बोले काय रह काय किसको कहते हैं ? ंत्रसः स्थावर नाम कर्मके उदयसे स्थात्माके ं प्रदेशं प्रचयको काय कहते हैं। तकायके ं कितने भद हैं ? इव हें -गोन्न-एप्वीकाय, ं अपकाय, तेउकाय: वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय । नाम-इन्द्रीथावरकाय, वंवीधावर-काय सिमितिधावर काय. पयावचधावर काय. जंघम काय ।

तत्वका भेदानभेद घर्गा भी महामान

१५ पन्नरहमें वोले ब्रात्मां ब्राठन निर्मे हैं

१६ सोलमें बोले दंडकाचीवीस गिंग होते हैं १७ सतरमें बोले लेखा छुव हि गिंग शहर

१७ सतरम बाल संस्था छुन १३ टार्म धार ४ १= श्रदारमें बोले हिंछ सीन । हिंदि मिटांग ४ १६ उगर्गाशमें बोले ब्यान ह्यार कि

१९ उगणीशमें वोले व्यान च्यार विष्य हैं। २० वीशमें वोले पट (श्वतं) इंडर्वका तील भेद २१ पकवीशमें वोले चाशि होचं कीव गरि

स्तिवाराम याल त्यारा व्हाव-जावतात स्रजीव राशि । । हण्ड हो हे मेंग्रा ह र स्वावीरामें वोले आवकरा बारह कर्ते ।

रिश् तेवीशमें वोले यांच महावृत साँधुनीका

) २४ चोबीशमें बोले गुणपचास भागाको जाएएए २५ पचीशमें बोले चारित्र पांच (पांच प्रकारक)

॥ विस्तार सहित ॥ ्रा

पहिले वोने गित थ. गित किसको कहते हैं!
 गित नामा नामकर्मके उदयसे जीवकी पर्याग

कार है सम्ब**तेडकाय** महाहा है हम ें अप्तिः भालको अगनिः वोजलीकी अप्रिः विसरी अप्रि उल्कापात आदर्देडने सात जात जात है. एक अग्निरे चीएक (पतंग) ें में असंख्यात जीव ओभगवंत फरमाया है. िएक अज़ापतकी नेसराय असंख्यातः **अप्र**-े जापत है, तेउकायरो वर्ग सफेद है, ख-भाव उप्ण (गरम) है। संठाण सुइके भारे माफक है, सुइरी तरह अग्निरी भाल नीचेसे मोटी उपरसे पतली, उसका कुल तीन ें लीख कीड़ है।

वाउ काय

उडणीया वाय. मंडणीया वाय. घण वाय. तण वाय. पृथ्व वाय. पश्चिम वाय आह देहने तीन जाल जान हैं. एक फउंकमांहे (फुंकमें) अहंख्याता जीव श्री भगवान फरमाया है. एक प्रजापतकी नेसगय असंख्याता अप्रजा-

पञ्चास जीलको थीकड़ी।

निननी जिन्नी पृथ्वी कीय-नीन जिन्नी निमादी, हींगली हहताल भोडल,भाठी, हींगी क आद देइने सात लाल जात हैं, ऐक क्रिये हैं असंस्थाता जीवे श्रीभगवंत फेरमाया है एवी

्रिं असंस्थाता जीवे शीभगवंत फेरमाया हैं एवं होकायरो वर्षा पीलोहि स्वभाव कठोर हैं, संतर एप्रमुद्दकी दालरे आकार हैं, एंखीकायका हैंगे । इश्शालाल कोड़ हैं हैंदिएकं एरंजायतकी तैसार स्वारतकी साम

। हर्शनासा कोइः हैतेष्कं परंजापतकी नैसर म् असेष्याता अपरंजापत हैं भिनने हमीत म् इतिमान अपरंजाय स्टर्शन स्ट्रीनं स्ट्रीनं म् इतिमान अपरंजाय स्ट्रीनं स्ट्रीनं

्षिरसाद-रापाणी, झासरा-पाणी, गंडारा पाणी समुद्ररा-पाणी धवररा-पाणी, कुवा वावड़ीं। पाणी, झाद देड्डे सान लाख जात है, पर पाणीगी बुंद्रमें झमंत्र्याना जीव श्रीमार्ग परमाया है. एक पर्यासकी नेश्राय झसंत्र्यार अपन्जापन है. श्रपकायरा वर्ण लाल है, है भाव दीला है. मंद्राण पाणीके पपोट मार्ग है. उनका कुन ७ लाख कोड़ है। क्षण हैं गण**तेउकाय**---गणुक भें तर ें अप्नि, भारतों " अगंति, वोजलीकी विश्वप्रि: वितरी अप्रि उल्कापात आददेइने सात लाख जात है. एक अग्निरे चीएक (पतंग) ेमें असंस्यात जीव श्रोभगवंत फरमाया है. िएक प्रजीपतकी नेसराय असंख्यात अप-े जापत हैं, तेडकायरी वर्ण सफेद हैं, ख-भाव उप्ण (गरम) हैं। संठाण सुइके भारे माफक है, सुइरी तरह अग्निरी भाल नीचेले मोटी उपरसे पतली, उसका कुल तीन ें लीव कोड़ है। वाउ काय उड़ाणीया वाय. मंहाणीया वाय. घर्य वाय. नग बाच परव बाच पर्धम बाच धाढ रेहने र्मान लाग्य जान हैं. एवं पाउव माहे पंचानें। धर्मस्याना जीव धी भगवान फरमावा है एषा प्रजापनकी नेपनाच धमन्याना बद्धजा

पर्यास बोलको धोकडो ।

े वा, मकोड़ा, कानखुत्ता आद देइने दोप िजाल जात है, उसका कुल = लाल कोई है। ३ चौरेन्द्रिय-एक काया, दुजा मुख, तीजो नार

ेचोधी आंख ये च्यार इन्द्रीयां 'होने उसकी चौरेन्द्रिय कहिये जैसे-माली डांस, मच्डा-भमराः टीडी, पतंच्या, (पतंगीहा) कतारी भार

देइने दोय साल जान है। उसका हुत .^{एह} नेव लाख कोड़ है। ४ पंचे न्द्री-एक काय, दूजो मुख, तीजी नाँक

चोधी घांख, पांचमो कान ये पांच इन्द्रियां होंचे उसको पद्मं न्द्री कहिये। ं , देवकाय एक महत्त्तेमें एक जीव उत्पृष्टा ं कितना भव करे ? पृथ्वीकाय, अप्पकाय-ते उकाय वाउकाय एक महत्तमें उत्पृष्टी १२८२४ भव करे बादर वनस्पतिकाय एक

महर्त्तमें उत्कृष्टा ३२००० भवकरे मुद्रम वनस्पतिकाय एक मुहर्त्तमें उत्कृष्टा

िह्ये ४३६ भवकरे और एक एए । मीन वेन्द्रिय एक मुहूर्त्तमें उत्कृष्टा देव भव करे ृतिन्द्रो एक मुहुत्तेमें व्याहरू हुन " एचोरेन्द्री पर. ए तन कु ए !! · असंत्री पश्चे न्द्रिय एक मुहत्ते**में** २४ ''' '' सिम्बीकि । ए एक्स एक एक एक ए र्थ चौथे बोले इन्द्रिय ५ इन्द्रिय किसको कहते हैं ? ि श्रीत्माके लिङ्गको (चिन्हक) इन्द्रिय कहते हैं। िइन्द्रियके कितने भेद हैं ? पांच हें-शोतेन्द्रिय चनुइन्द्रिय, घाणइन्द्रिय, रसइन्द्रिय, स्पर्श-ं इन्द्रिय (फरसर्डान्द्रय) इनके नाम —गोचरी. श्रगोचरी, दुमोही, चरपरो, श्रचरपरी । ५ पांचमें वाल पर्याय हव पर्याय किसको कहने हैं १ गुएके विकारको पर्याय कहते हैं। पर्यायके किनने भेड हैं ? छत्र है आहार पर्याय. शरोर पर्याय. इन्द्रिय पर्याय. र्वासी-श्वास पर्यायः भाषा पर्याय (वचनपर्याय) मन



्रियेथ्वेद्द्र भवकरे तीन एक एक एक । एक वेन्द्रिय एक मुहर्त्तमें उत्कृष्टा देन भव करे ृतेन्द्रो एक सहत्तमें क्षा १६० छ। ाचीरेन्द्री प्राप्त गोला प्राप्त एक गर् ि असन्नी देखे न्द्रियं एक सुहू संमें २४ ^{गाउन ए} िसंबी व प्रज्ञाना संस्थान पर्याप्त रे चीपे बोते इन्द्रिय ५ इन्द्रिय किसकी कहते हैं ? चात्माके लिहको (चिन्हक) इन्द्रिय कहते हैं। े इन्द्रियके कितने भेद हैं १ पाँच हैं—श्रोतेन्द्रिय चजुङन्द्रियः प्राणङन्द्रियः स्तङ्ग्द्रियः स्पर्श-इन्ट्रिय (फरमहन्द्रिय इनके नाम --गोचरी. अगोचरी, दुमोही, चरपरो, अचरपरी। ५ पांचमें केने पर्याय तब पर्याय किमको बहते हैं ? गुएके विकारको पर्याय कहते हैं। पर्यापके किनने भेड हैं " इब हैं आहार पर्यायः हारोर पर्यायः इन्द्रिय पर्यायः स्वासी-र्वास पर्यायः भाषा पर्याय वचनपर्याय सन



चिक्रिय शरीर किसको कहते हैं १ जो छोटे. ें वहे. एक, अनेक आदि नांना प्रकारके श्री-ारको करे. देव और नार्राक्योंके शतिरको विकिय शरीर कहते हैं: अथवा सड़े नहीं, पड़े नहीं. विनास पामे नहीं. विगड़े नहीं, मरनेके ं बाद कपूरकी तरह विखर जाय उसको बैक्य-ं शरीर कहने हैं। े बाहारिक शरीर किमको कहते हैं। इंट्री े गुणस्यानवतीं मुनिके तत्वीमें कोई श्रहा े होनेपर केवली या श्रुत केवलीके निकट जानेके तिये मन्तक्षमें हो एक हाथका पुतला निक-लता है. (कोई लब्धि धारी मुनिगज अप्र-माद करीने ज्ञान भग्या प्रमाद करीने ज्ञान विमरजन हो गया कोई दिस्त्रसण्यतुर पुरुष आयने प्रश्न पुलयो उस बखन सुनिराजको उपयोग कान्या नहीं जब सापरे श्रीर मांयम् एक हाथने पनली निक्र ल्यो उस पुनलेका ÷8 &

गर्भारक,गर्भ स्थोदारिकमिश्रीहरू श्वीक्रियेक १२

मिश्र, १६ में मंत्रमणि प्राप्त उप प्राप्ति -धोनवर्मे बोले उपयोगः १२--पार्चः होनः तीन गीं: अज्ञोन, देवार देर्शनः १ (मंतिज्ञान, दे : श्रुत: ाज्ञानः र अवधिज्ञानः । अनः । पर्यवंशीनः प ण्यं केवलज्ञान, इलमतिश्रज्ञान, ७० श्रुतश्रं^{ज्ञान,} ा= विभंगज्ञान :(कृष्णविश्वान); धः वर्षुःदाः ाः संग्री,२० अचनु द्वरसण्यः ११ , अव्यिक्ताः ं म्सर्ग्य १२ केवल दरसंग् । 🐤 मान्यस '१० दसमें वोलें कर्म बाठ, :--१ ज्ञानावर्णीय,१ दर्शनावर्णीय, इं वेदनीय. 😕 मोहतीय ाश्रायु, ६ नाम, ७. गोत्र,ः= अंतराय । विकास ा किसको कहते हैं १८६ के रागा है पादिक र परिगामोंके निमित्तते के स्मीण वर्गणा हुए . पुरुगलस्कंघ जीवके साथ वंधको प्राप्त हो^{ते}

ग्णान्वेकियक मिथ्र, १६३ आहारक, १४ जाहारक

हैं, उनका कर्म कहते हैं।





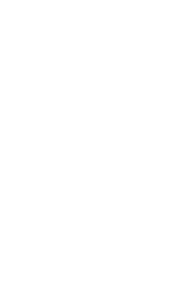
















ः २२ अविनय मिष्यात्व-जिनेश्वरः तथाः ग्रहका ाः वंचन उत्थापे, ग्रुण्डन्तः,ज्ञानवन्तः,तपस्तीः वैरागी इत्यादि उत्तम पुरुषोंसे कृतवीपूर्णो करे. छिद्र देखता रहे. निन्दादि अविनय म**ें करें सो सिंखोल**ों मार्ग हाराहर ह ा २३ आशोतना मिर्यात्व : गुरुकी :३३ आशोर ^{हर}े तनाका काम करें सो मिल्याल का उपान्न ें २४ झंकिया मिच्याल-जैसे प्रतिक्रमणादिक ें किया न माने सो मिन्यार्ट्य पार कार्यार ेश्रिकतान मिथ्यालं जैसे सर्व असरवता विवेक न होनेसे संसारिक कार्य कम्मोंका षंपन रूप जैसाका तेंसा रहनेसे और सत्य ज्ञानका अभावसे अञ्चानको धापे सो निप्यात्व। जैसे पशुवध को धर्म

> १४ चवर्मे धीले नवतत्वकी जास पर्णा । नवतत्वका नाम १ जीवनत्व.२ धाजीव

समके।





सो माईवाजींस प्रकृतिमें से शर्स होने 💝

शातावेदनीयंकीःएकः आयुप्पकी

वर्ग पुरान प्रकास हमार प्राप्त प्रमान

नाम तहार प्रमाणसाल (चेपू किसे है पापतत्व किसकों किहिने ग्रिमाप योपन

दिखीं, मोगवतां हो दिखीं, अधुम) योगसे द्वन्ते रामानद्वे, पाषका मानः मेको ऋरे, इसको प्रायनस्य क्रहिये हराप 🕬 मकर परिविद्या एक छाउँ होई हात निनिर्दात्रमानिपात-स्टूत बायाके नर्क दिना हते हता वाला है र्ष मृपायाद - ब्राह्मय (कंट्र) योगे । ३ बटचाटान -शर्णाट्यी वस्नु सेहे (

> < मेथ्न हरूम (कुर्जाप्त) संत्री । ६ परिचार - इरम् (चन्) शब्द, समन्त्र



























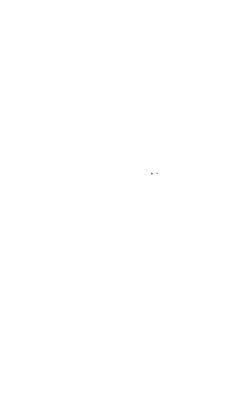




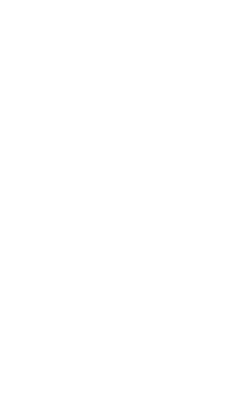






































प्यास बोलका बोकड़ा , ८६ [सेडियाडैन क्रयान

को अधर्म द्रव्य कहते हैं । हुन् कार्य कर है। और अधर्म खएडरूप हैं किंवा अखएडरूप हैं। और इनकी स्थिति कहां हैं १ । अधर्म द्रव्य एक

्डनकी स्थिति कहाँ है ? । अध्यमे द्रव्य पै अखंड द्रव्य है और वह समस्त तोकाकी शर्में ज्याति है।

पर्विक्षीकाश द्रव्य किसकी कहते हैं हैं हैं जो जीवादिक पांच द्रव्योंकी ठहरीके कि जगह दें। अ कारण प्रकृती प्रवृत्ति कि

आकाशके कितने संदे हैं कि पोर एक्तीर हिमानाश्चित्रक ही अखरड देवर हैं। हिन्हीं

िधाकाश कहां पर है-१ को दे कहा। ही िधाकाश सर्व ब्यापी है। व्यापार सर्व इन्कालड़व्य किसको कहते हैं १५

जी जीवादिय इच्योंके परिशासनमें सहकारी हो. उसको कालद्रव्य कहते हैं। जैसे हुँ हारके चाकके घमने के लिये लोहे की कीली

म्हारके चाकके घृमने के लिये लोहे की कीली जनालद्रव्यके कितने मेद हैं १



Fē



[सेठियाजैन प्रत्यातर पश्चीस गोलकर गोकहर] ारातद्रग्यारा दारका नाम--१ प्रखामी, २ जीव, ३ मुत्ता (मृर्ति), ४ सपएसा (सबं प्रदेशी),५ एगा (एक), ६ खित्ते (चीत्र), ७ क्रिया,

णिज्यं (नित्य), ह का<u>रण, १०</u> इपर पनेसा (सब गति)

माएहां। मुत्ता कहेता एक पुद्रल वाकी पांच द्रव्य अमृतिक हैं।

(४) सपएसे कहेता पांच द्रव्य तो सप्रदेशी है। और एक काल द्रव्य अप्रदेशी है।

(५) एगे कहंता धर्मास्त, अधर्मास्ति

भाकाशारित ये तीन द्रव्य तो एक एक है, और जीव, पुरुगल, काल ये तीन द्रव्य अनेक हैं याने भनन्ता है।

्ं(६) वित्तं कहेता आकाशास्तिकाय तो वैशी है, वाकी पांच इत्य अनुत्री है।

्(७) क्रिया कहेता निश्चयमें इव ही द्रव्य सिक्रेय (याने क्रिया करके सिहत) है. अपनी अपनी क्रिया करे, इववहारमें जीव और पुद्रगल क्रिय हैं (क्रिया करें) च्यार द्रव्य अक्रिय है।

्र (क्र) पिछ्वं कहेता निश्चयमें छव ही द्रव्य नित्य, व्यवहारमें जीव और पुद्रगल दोय द्रव्य

श्रीनत्यःवाकी च्यारं द्रह्य नित्यं ।

(६) कारण कहेता जीवके पांच ही द्रव्य कारण

हैं. जीव पांचों के अकारण हैं (जीव द्रव्य अकारण, वाकी पांच द्रव्य कारण) वा पांच द्रव्य अकारण, एक जीव द्रव्य कारण भी संभवे हैं।



उसको थलचर कहिये इनका च्यार भेदः ेश एक खुरा-घोड़ा, गंधा खन्नर इत्यादिकी २ दांय खुरा—उंट, गाय, भैंस, वलद, वकरा

ः हरणः ससीयाः इत्यादिक । 🐇 🙃 🕬 न्हे गएडीपद (गएडी : पया)-हाथी, गेंडा

इत्यादिक। ह क्ष्रिकार ं ४-श्वान पद ('सगुपया) (जो पंजे नख़वाला

्होते) जैसे-नाघ, कृता, वीली, शियाल. ्जरल, रींछ, बंदर, सिंह, चीता, इत्यादि इं-

नका कुल १० लाख कोड है। उन्हें उन्हें

ः उरंपरि केने कहीये १ जो पेटसे चाले उसको उरपरि सर्प कहिजे. जैसे--सर्प. अजगर, स्थ-शालीयां—(दाय घड़ीमें ४= कोस (गेउ) लांबी हुने, चक्रवर्तीकी राजधानी नोचं. अधवा नगरके खाल हैठं उपजे. उसको भस्म नामा दाह हुवे तो ४= गउ को माटी खायजावे. जमीन धोधी

होनाय, चकवतीं की संन्या थोथी जमीन में













पमीस बोलका घोकड़ा] १०२ [सेडिवाजेर क्लाक छप्पन अन्तरद्वीपके मनुष्य, छप्पन अन्तर

द्वीपमें हैं। अब खप्पन अन्तर द्वीप कहते हैं-जम्बृद्वीपके भरत चेत्र की मर्यादाको करण्हार चुल हिमवंत नामे पर्वत है, पीजो सुवर्णमय सो जोजन को ऊँचो, पश्चीस जाजन को जमीन में उंडो, एक हजार वावन जोजन, वारह कंता^{को} पहीलो (चवड़ो) है, २४६३२ जोजन लंग्वो है इसको यांह ५३५० जोजन और पनरह कलार्श है, इसको जीवा २४६३२ जीजन पुगुकता की है इसकी धनुष्य पीठीका २५२३० जोजन औ च्यार कलाकी है, उसके पूर्व पश्चिमके छेड़े दाप दोय डाढा निकली हुई हैं, एक एक डाढा चोरी सीसे बोरासीसे जोजन भार्की लम्बी है, ^{एक} एक डाढा उपर सान सान अन्तरद्वीप हैं, वे किस तरहस हैं ? जम्बुद्धीपकी जगतीसे ३०० जाजन जावे तव ३०० जाजनको सम्बो चाड़ी पहेलां अन्तरद्वाप आवे १. वहांसे ४०० जोजन जा



, .



पश्चीस बीलका धीकड़ा] १०६ [सेठियाजंन क्रवांल

देवताके १६५ (एकसो अठाग्वें) भेद १० भुवनपति, १५ परमाधामी, १६ वाण्यन्तर

१० तिर्यक्जुं भिका, १० ज्योतिया, ३ कित्

विषी, १२ देवलोक, ६ नव लोकांतिक, ६ नवर्षे वेयक, ५ अनुत्तर विमाण से ६६ जातिका पर्याप्ता अपर्याप्ता ये १६८ भेद हए।

१॰ भुवनपति (इनका नाम सांलमाः धांतरी जाएना) १५ परमाधामीका नाम—१ श्रम्बे, २ श्रम्याते ३ शाम (भे). ४ सवले, ५ स्द्र, ६ महास्ट, ७

काल,= महाकाल, ह अमिपन्न, १० धनुपपर्त

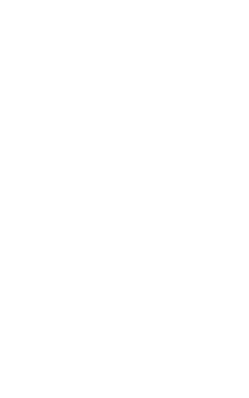
वरं. १४ महाघाषे ।

११ कुम्म, १२ बाल्, १३ वेयरसी, १४ सर

१६ यागच्यन्तरका नाम १ पिशाच, २ मूर्व-

३ मन. ४ गनम, ४ किझर, ६ किंपुरु^प, ७

महारम, = मन्धर्व, : ग्रामपन्नी, १० पणि





े ५ पांच अनुत्तर विमाणका नाम--

१ विजय. २ विजयंत. ३ जयंत. ४ छप-जित. सर्वार्ध सिद्ध ।

्यजीव राशिका ५६० भेद् ॥

रम्मा धन्नागाला. तिच तिच भेषा तहेव छाहाय र रएचउ सुविद्दे विने काले यभाव गुणे ॥१॥ म्जीव घरुपीका ३० घोर घजोवरुपीका ५३० रे कुल ५६० भेद ।

धजीव धरुपोका ३० भेद-

- 🔾) धर्मास्त्रकायका खंध, देश, प्रदेश ये तीन ।
- 🗦) घषमांग्तिकाय का खंध, देश, प्रदेश ।
- 😘) घाकाशारितकाच का खद, देश, प्रदेश ।
- ि । कालहरूववा गर भद ।

प प्रमापनकात का याच भेदन दाच

२ द्यप्र, ३ काल. ४ आवः ५ ६०० ।



. ر ×ردځ ं १=४ स्फर्श=—खरखरो, सुंवालो; भारो, ^{हल}को; शीत, उप्ण; चीकणो, लुखा, एक एक का भेद २३×==१=४।

विशेष विश्तार से ५३० भेद रूपीका ॥

पांच वर्ण, दोय गन्ध, पांच रस, घाठ स्पर्श पांच संठाण ये पद्मीस बोलमें जितने जितने योल पाव वो गिननेसे सर्व मिल कर ५३० भेद होते हैं। पांच वर्ण १ कालों, २ नीलों, २ गतों, १ पीलों, ५ घोलों, एक एक वर्णमें वीस वीस भेद पांच टाच गन्ध, पांच रस, घाठ स्पर्श पांच संठाण, ये वास पना सा

टीय गन्ध । भुतन्ध । दुन्ध एक एक गध्में नैर्दाम नेदास वाज वाद वाद दर्श, पाद पयीम बालका योकज्ञा 📗 ११२ [शेठिपारीन क्रणा

रस, श्राठ स्फर्श, पांच संठाण, ये तेवीस दु ई यांबीस जाणना।

पांच रस—१ तीखो २ कड़वा ३ कपाव ४ खाटो, मीठो, एक एक रसमें बीस बीस भे लाप, पांच वर्ण. दोच गंध. आठ सम्ब्री पांच संठाण ये बीस पंचा सो। आठ सम्ब्री—१ खादरो. २ सुंवालो, १ इस

को, ४ मारी, ५ टंढो, ६ उतो, ७ हुलो, व चोपड्यो, एक एक स्पर्शमें तेवीस तेवीसे भेद लापे, पांच वर्ण, दोच ग्रन्थ, पांच रस, हुर्ग स्फर्श, पांच संठाण ये तेवीस झट्टा एक सी चोरासी: जहां व्यवस्थानी पूछा हो तो खरदी और मुंतालो ये दोच वर्जणा: इसी तरह हुल काकी पुटा होच तो: हुलका और भारीये दोचे

काका पुत्रा हाथ तो: हजका खोर भारी ये दोष वज्ञाता: इसी तरह ठंढाकी पुत्रा होत जब ठंढी स्मीर उनी ये दोय बजगा: इसी तरह चीकण का पुत्रा होत जब चीकाण स्मोर लुखो ये दोष र्नणाः इस माफिक जिस बोलकी पुछा होय वो ग उसका प्रतिपच् ये दोय वर्ज्यणा ।

इति जीवराशि अजीवराशि का भेटे





२६ वोलकी मर्यादा करे उनका नाम-१ उन्निणया विहं-शरीरपद्मणेका ग्रंगोद्या।

२ दंतणविहं-दांतण ।

३ फल विहं-वृज्ञका फल।

४ श्रमंगरा विहं-शरीर पर चोपड़नेकी या लेप करनेकी वस्तु तेल प्रमुख।

५ उवदृरा विहं-मर्दन करनेकी वस्तु पीटी प्रमुख। ६ मंज्करा विहं-सान करनेका पाणी प्रमुख।

७ वत्थ विहं-चस्त्र, कपड़ा।

विलेवण विहं-चन्दनादिक।

६ पुष्फ विहं-फुल।

१० घाभरण विहं-गहणा. दागीना ।

११ घुप विहं-धुप । १२ पेज विहं-उकाली दमा वगेरह पीरंगकी वस्तु ।

९२ भन १४६-उकाला देवा वगरह पासाका चस्तु । १२ भन्यवरा चिह्नं-संग्वही घटाम. पिस्ता वगरह

मेवो । १४ उद्ग्ण विद्वं-चावल [माल] ।



पन्दरह कर्मादान का नाम ।

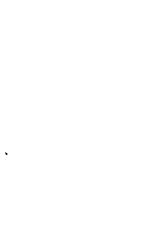
१ ई गाल कम्मे—कोयला कराय के बेचने का
्व्यापार करे नहीं, पजाबा भट्टीका कर्म क्रावे नहीं।

२ वर्ण कम्मे—वनका भाड़। (वृत्त) कटार्ण का ठेका लेने देशोका व्यापारका त्याग करे।

करे।
३ साड़ी कम्मे—गाड़ा, गाड़ी, एका, चरखा, पींजरा वगेरह वनवाकर वेचेंगों के व्यापार का त्याग करे।
४ भाड़ी कम्मे—गाड्यां, एका, साइकल, मो-

का त्याग करें।

४ भाड़ी कम्मे—गाड्यां, एका, साइकल, मी-टर टेक्सी, ऊँट. बेल बगेरह भाड़े फेरे नहीं तथा घर, हाट हवेली च्यापार के निमित्त भाड़ा कमाणें के बास्ते तथा बेचणें के बा-स्ते बणावे नहीं: लोहे की. पत्थरकी, लुर ध्यादि की लान खोदावे नहीं।



पाणीमें पिलायकर, तेल निकलायकर, वे-चनेका व्यापार करे नहीं। तथा घाएयां, कल्यांको व्यापार स करे।

कल्यांको ज्यापार न करे।
निल्लं च्छ्रण कस्में टोघड़ा घोड़ा आदि
ससी कराय कर वेचिएको ज्यापार न करे।
दविगा दावएयाकमो वनमें, खेतमें आग
सगावे नहीं, खेत की वाड फूँकावे नहीं।
सरदह तलाव परिसोसएया कम्मे सरवर

सरदह तताव पारसासण्या कम्म सरवर कुरह, तलाव को पाणी सुकावे नहीं, ऐसा व्याणा को नहीं।

च्यापार करे नहीं।

श्रसइ जए पोसएया कम्मे—हिंसक जीव श्वान, विल्ली, नीनर, कुकड़ाने श्वापका श्वा-जीविकाके वाम्ने पाले नहीं, नथा वेश्याटिक

ने न पोप. तथा उनको कुशील ध्यसाचार को पहमो द्याप न लेवे, हिमाकारक पाप कारक के माथ लोभरे वन पड़कर ज्याजको

व्यापार नहीं करे।

ं (मीठे) की गिनती तथा वजन साथ म-्रयादा करें। का विकास साथ म

पादाकर । अ श्र पन्नी—याने जुते, तिलये, मौजे, खड़ाउ इ-त्यादिक पेरमें पहरने की मर्यादा करना याने गिणती से रखकर उपरायेंतका त्याग करे, संगटेकी जयणा संगटेरो दोप नहीं। श्र तम्बोल—याने लोंग, खुपारी, इलायची,

ंपान, जायफंलं, जावंत्री वगेरह मुखवासकी मर्यादा करे। ६ वत्थ—बस्त पहरने, श्रोडने की मर्यादा

६ वत्थ--वस्त्र पहरन, आडन का मयादा गिराती से करे।

७ कुसुम- याने फूल, अतर, तेल इत्यादिक जो स्पनेमें आवे उसकी मर्यादा करे।

न्द वाहन--याने गाड़ी. रथ. वर्ग्धाः तांगा. एका, वेली, हाथी, घोड़ा. पालखी. म्याना.

रेलगाड़ी, टक्सी (मोटर) रिखसा. चाइ-

सीकल, मोटर साइकल. डुंगी, न्याव. वोट.

पच्चीस बोळका योकड़ा] १२२ [सेठीपार्जन-मन्य हवाइजहाज विगेरह निरंती. फिरती, व

जो वेठनेके तथा सोनेके लिये काम मार्र

१० विलेपण-याने केसर, कंकम, चन्दन, तैल, पीठी, लेप, सावरा, धुरमी बगेरे शरीरके विलेपन करनेकी मर्यादा करे। ११ दिशी-याने पूर्व, पश्चिम, द्विण, उत्तर उंची, नीची यह छव दिशीमें जाएकी

१२ श्रवंभ-साने कुर्शाल (श्री सेवन)की रातकी मर्यादा करे दिनका त्याग करे। १३ नाहायण-ऱ्याने मान, मेडजन करनेकी ^म

करे।

. छप्परिपलंग, मांचा, खुरसी, मकान कौरे

उसकी मर्यादा करे।

मर्यादा करे।

र्यादा करे।

(E) सयस-याने गादी, तकिया, गरेवा,

लती सब प्रकार की सवारी की मर्यादा







१ प्राणाविपात-विरम्ण वतः। दूसरे जीव को अपने समान जानकर उस

। क्रमा,धामाद्वा । ,१२१६

रचा करनी, उसे दुःख न देना-मारना नहीं, ब्यवहार से प्राणातिपात-त्रिरमण प्रधात सावत है। अपनी आत्मा कर्म के वश होते दु:खी होती है ऐसा जानकर उसे कर्म बन्धन छोड़ाना और थाल्म-गुणों की रचा कर उन वृद्धि करनी यह निश्चिय से प्राणानिपातिराम

२ मृत्राधाद-विरम्भे वर्ग

यत कहा जाता है।

भसत्य-जृठ वचन न घोलना यह, व्यवहाँ से मुपाबाद-विरमण वत है। कोई भी पौर निक चीज को अपनी कहनी, जीव को अर्जी

या भनीय की जाव कहना, सिद्धांती की मृह

यथं करना यह सब निश्चय-मुपाबाद हैं, 👫 मवा का त्याग को निश्चयमुपाबाद-विरमण 🏴









भारता ही जिन गुणों का कर्ता और भोका है ऐसे स्वरूपानुपारागी परिणाम को निश्चय से भोगोपभोग-परिमाण त्रत कहते हैं।

द्ध भन्धेदराह-विरम्या वत ।

्र विना ही प्रयोजन के अपने को पाप-कार्यों में जगाना -हिंसादि करना-अनर्थदराड है। जैसे कोई आदमी हाथ में छुड़ी लेकर सैर करने को वगीचा में जाता है, चलते चलते अपनी लड़की को घुमाता हुआ वृज को पत्ती को विना ही प्रयोजन तोड़ता है, जिससे पत्ती के जोवों को तों दुःख यावत् मरण्होता है और इससे उस आदमी का कुछ भी काम नहीं निकलता। ऐसे च्यर्थ पापो' को छोड़ना ब्यवहार अनर्थदराड-वि रमण वत है। जीव मिथ्यात्व, अविरति, कपाय. योग श्रादि सं शुभाशुभ कमों का वन्ध करना हैं जो कि सुख़ दुःव का कारण होता है, उन



११ पीरप मत ।

चार या आठ प्रहर तक सब सावद्य कर्मों का त्याग कर समता परिणाम से स्वाध्याय में पर्वत्ति करना ब्यवहार पोपध और अपने आत्मा को ज्ञान-ध्यान से पुष्ट करना निश्चय पौपध वत कहलाता है।

१२ द्यतिथिसंविभाग वत।

पौपध के पारने के संमाति के समय या सर्वदा साघु को या साधर्मिकभाई को यथाशक्ति मोजनादि दान देना व्यवहार से अतिथिसंवि-भाग वत है। स्वजीव को. शिष्य को या एहस्य को ज्ञान देना पढ़ाना. सिद्धांतों का श्रवण करना और कराना निश्चय से अतिथिसंविभाग वत है।

ये बारह व्रत कहे गये। जो जीव इन व्रतों को समकित के साथ निश्चय और व्यवहार से पत्र देस बोलका धोकहा] -१३६ ं [सेडियाजेन-मन्द्र

पारण करे, उस जीवको पंचम गुणस्थानक व अधिकारी या देशिवरति आवृक्त कहते हैं। दे अर्थात् अर्थ, स्तः विरति साम् देश-विरति अर्थ है। सर्व प्रकार के स्वाग को सर्व-विर्त कहते हैं। यह सर्व-विरति सामु को होती है

निवास है। यह सब-निवास साधु की होता व साधु के पांच महावतों में इन बारह वर्ती समावे हा हो जाता है। व्यवहार और निव्य से पूर्वोक्त वर्तोका पालन करना और ज्ञान ध्या रेवर सथा निर्जरा में आत्म-परिणाम को स्थि

फरना ही निश्चय-चारित्र है। इस निश्चय-चारि त्रके दो मार्ग है—१ उत्सर्ग २ अपवाद। उक्त

तीचण परिणाम का रहना उत्सर्ग मार्ग है औं उस उत्सर्ग को मजबून करने के लिये जो का णों या निमित्तों की सबना की जाय वह अप बाद-मार्ग है। कहा है कि:— "मंघरणिम्म असुद्ध दृष्ट्यवि गियहन-देतपाण हिं आउर-दिट्ट नेणं, नं चवहियं असंघरणे॥" ्य अर्घात अब तक साधक-भावको वाधा न पहुँचे तब तक निपेध का सेवन न करना चा-हिपे और साधक-परिणाम न रह सकता हो तब निपेध का आचरण करे। आंत्मा-गुण की हदता के जिये जो किया जाय वह अपवाद मागं है।

तेवीसमें वोले साधुजीका पांच महात्रत १ पहेला महात्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा

प्रकारे जीव की हिंसा करे नहीं, करावे नहीं करतांने भलो जाएं नहीं; मन वचन काया करी; तीन करण, तीन जोगसे। र दूसरा महानतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे भूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलतांने भलो जाएं नहीं; मन, वचन काया करी

तीन करण तीन जोगसे । ३ तीसरा महात्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं करावे नहीं. करता ने

तीन करण तीन जोगसे।

४ चोथा महात्रत में साधुजी महाराज सर्वण

प्रकारे मेथुन सेवे नहीं; सेवावे नहीं; सेवती

ने भलो जाएँ। नहीं; सन वचन कार्या केरी; तीन करणः तीन जोगसे। ५ पाँचवां महावतमें साधुजी महाराज सर्वेश प्रकारे परिमह राखे नहीं रखाने नहीं; राह-ताने भलो जागे नहीं; मन वचन काया करी; तीन करण, तीन जीगसे। चोवीसमें वोले भांगा ४६ को जाग पगो; ः 대학 12 12 12 12 22 22 23 31 12 11 HIVI 朝 李李李李李李

भलो जाएँ नहीं ; मन वचन कांग की

भागों ह बाँ १८ वाँ २९ वाँ ३० वाँ रहे वाँ औ माँ ४५ माँ ४८ माँ ४६ माँ तक।

११ आंक एक इम्यारह को-आंगा उपजे ^{त्र}

एक करण एक जोग सुं कहेणा-१ करूं नहीं मनसा, २ कर्नुं नहीं वायसा, ३ कर्नुं नहीं कायसा

१ कराउं नहीं मनसा, ५ कराउं नहीं वायसा, ६ कराउं नहीं कायसा, ७ अर्गुमोटुं नहीं मनसा, इस्तुमोटुं नहीं वायसा, ६ अर्गुमोटुं नहीं कायसा ।

१२ श्रांक एक पारहको-भांगा उपजे नवः एक करण दोय जोग सें कहणा-१ करूं नहीं मनसा श्रांयसा,२ करुं नहीं मनसा कायसा, ३ करुं नहीं वायसा कायसा, १ कराउं नहीं मनसा वायसा, ५ कराउं नहीं मनसा कायसा,६ कराउं नहीं वायमा कायमा, ७ धरणमोदं नहीं मनमा

पायमा, द्र क्रागृमोद्ं नहीं मनमा वायमा. ह झ-णुमोद्ं नहीं वायमा वायमा । १३ व्यांक एवः नेरह वा-आगा उपजे नीन एक पत्रण नीन जीग से कहेगा- ह कर्नु नहीं मनसा पायमा कायमा. इ वटाउ नहीं सनमा

.,

सारपाजन-प्रस्तात्व] ्रभुर् (पद्योश पोलका पाकहा नहीं मनसा फायसा, ६ करुं नहीं अणमोदुं

नहीं यायसा कायसा, ७ कराउं नहीं श्रगुमोद्धं नहीं मनसा वायसा, = कराउं नहीं अण्मोद्दं नहीं मनसा कायसाः ६ कराउं नहीं ध्यणमोद् नहीं वायसा कायसा। २३ श्रांक एक तेवीस की-भांगा उपजे तीन, दोय करण तीन जोगसे कहेणा-१ करुं नहीं कराउं नहीं मनसा वायसा कायसा, २ करूं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा कायसा. ३ कराउं नहीं अणुमोद्धं नहीं मनसा वायसा कायसा । ३१ श्रांक एक एकतीस को-भांगा . उपजे तीन; तीन करण एक जोगसे कहेगा-१ करूं नहीं कराउ नहीं अणुमोदु नहीं मनसा,र करूं नहीं

कराउं नहीं अणुमादं नहीं वायसा, ३ करूं नहीं कराउं नहीं अणमाद् नहीं कायसा। ३२ श्रांक एक वर्त्तास को-भांगा उपजे तीन.



(भेद) होती हैं: जिस में प्रत्याख्यान करने वाले की नव सेरी वन्ध होजाती है। ७२ खुली

न्हती हैं इस का वोध यन्त्र से कीजिये।

3	गर, मही मनसा	~	•	•	•	•	•	·	, 0	िंद
	करू नहीं व्यस्त	1.	1.	Į.	Γ	1		T		: ;
	2	1	1	•	•	•	•	. ه	٠,	₹,,
	कर नहीं कायसा	•	•	~	٠	٠	•	-	•	Ъ,
	कराऊ मही मनसा	٠	۰	1 -	-	1.	•	•		
	कराऊ महीं घवसा	٠	•		•	-	1.	-0	10	.0
	कराङ मही कायसा	٠			•	•	1-	•	1 .	<u>:</u>
	मनुमार् मदी मनसा	1.	1.	1.	T	Ť	1	ij	,.[
		İ	7	- 1	•	•	•	~	•	
í.		•	•	•		•	•	•	=	
÷	महामोद्द मदी कापता	·	•	•	٠	•	·		F .1	1.50
٠,										

أستسفطة موسته

े प्रत्येक र साई में एक सेनी वाच होती है. बाद संतियें कुली नाती हैं और सर्व=१ सेनियें मैं नरती रक जाती हैं. ७६ लुली साती हैं. बर कि जो नर संतियें रक जाती हैं वे यह हैं!---

रे। पूर्वद्वाद्या द्वा प्रशापना द्वा ेर । दर्भागुको ७२ जैसैकिन्स । ३ । ४ । ४ । है। छ। हा हा १०१०। १२ । १२। १४। देश १६ । १७ । १८ । १८ । २० । ० । २२ । ^{रहे । २७ । २४ । २६ । २७ । २⊏ । २६ । ३० ।} भ इत्राह्य । इष्राह्य । इद्याह्य । इ⊂ा કૈરી શ્રુરા હવા છેવા છેવા છેવા છેવા १५।४८।४६।४०।०।४२।४३। ४८। ^{४४,१५}६।४७।५≈।४६।६०।०। ६२। ^{िह} । हर । हर । हल । इ**द । इह । ७० ।** १।७२।७३।७४।७४।७६।७७।७=। ⁵⁶¹⊏ां। इस प्रकार ५२ सरा खर्ला रहती है। ६- नव सक जाती है। एप्ट १८४ के यंत्र में देखी यह एकादश अहः का विवसा किया गया।

सेठियाजैन-प्रत्यालय] १४६ [पद्योस दोल्या के १२ अङ्क के भारतों की ६ सेरी होती अपितु सर्व सेरीयें दश्हें, उन में शंभह की सेरी, उनमें २ स्की ख़ुली ७, सर्व भाहीं की है रुकी १= खुली ६३। -रुकी सेरी यह हैं यथा-१।२।१°। १ २०। २१। ३१। ३२। ४०। ४२। ५०। ४ दश । दर । ७० । ७२ । ८० । ८१ । एवं ी शेप ६३ खुली वे यह हैं ००। ३।४। दाणा=18101११।०।१३।११ १६। १७। १८। ००। २२। २३^{| १} २५।२६।२७।२≈।२६ ।३०।००१३ देश । देश । देद । दे⊘ । द्≔ । देह । ० । ४ । ०। ४५ । ५४ । ५४ । ५४ । ५४ । ५४ । ५४ ००। सद । सर् । प्रशास्त्र । प्रहास्त । यह प्रहाइ०।००।इ३।इ४।इ५।इ५।इ६ इटाइहाना ७३। न १५१ ७४। ७४

७६। ५७। ७≂। ५० ।००। यह सर्व ६३ हुई

				१४९)			
.	۰	a	•	0	0	•	~	~-
	•			•	0	~	۰	~-
0 1	•		0	0		~	-	·
0		-	<u> </u>	~	~~	1 °	•	°
0	0	, 0	-	0		0	0	i °
0	0	0	1	1~	10	10	0	•
	 	 	1.	1.	10	10	0	1 .
2	1 .	+-	-	1.	1.	10	0	•
*	1	10	+.	10	-	0	To	۰
क्षुत्र नहीं सनस्त प्रथम	\.		ملاية الإرام المراجعة المراجعة		म राह, कर्ष स्थावन क्रायन		मन्साम् सन्। प्रमुख्य	सन्तराहे अन्त स्वयंत्रा सायंत्रा

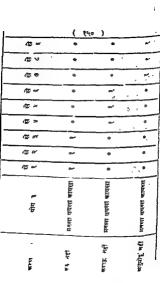


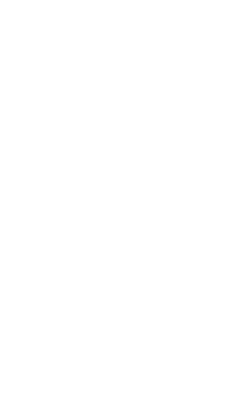
तो स्क जाती है १= ख़ुली रहती हैं और एक भाह्ने में तीन सेरीयें स्कती है ६ ख़ुली रहती हैं जैसे कि

१। २। ३। १३। १४। १५। २५। २६। २०। यसं ६ राजी। युक्ती सेटी १८ हैं जैसेकि— ०। ०। ०। ४। ५। ६। ०। ८। ६। १०। ११। ११। ०। ९। ०। ३६। १८। १८। २०। २०. १.२२। २३। २४। ०।

ा । । १६ । १६ । १६ । २६ । २१ . १.२२ । २३। २४। १८। ०।

यह सर्वे १८ सेरी खुली रहती हैं इस प्रकार त्रयोदश्वें अङ्क का विवर्ण पूर्ण हुआ और यह तर्व विवर्ण यन्त्र से देखिये।





ग्योस योलका योकड़ा]` १५२' [सेठियातैन प्रम्यान बुली सेरीये ६३ यह हैं--•।२।३।०।५।६।७।८।१।१०। ।।१३।३३

वा १५। १६ । १७। १८। १६ । २०। व । । २२ ! २३ । । १५ । रहे। २७।०। २६ । इ०। इंट विंदी इक्षा । ११

र्द । इंगा वा ब्रह्म सका सरी सरी, सर्ग प्राप्ता स्

381 • 1 સાથે 1 એ દા લાગુ દુલસ્ટ્રાલ ફાર્ટ્ડ લાધુ 1 ^{સફ} 1

90 1 0 1 0 2 1 0 2 1 0 8 1 0 4 1 0 2 1 0 3 1 0 1 0 1 0 1 0 1

પરાદાગાગાદ્વાદ્વા દ્વાદ્વાદ્દિ દ્વાગાદિ

एवं ६३ । यह सर्व विवर्ण यन्त्र से देखिये

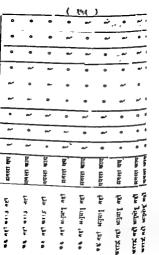
•	•	*		4.5	~	•	* **
•	*		•	•	:	*	• ~
-	•	•	•	•	-	•	* ·
c	•	•	•	•		•	• •
	•	•	-			•	0 0
मुक्तरा	444	4,17,17	מאננו	utituti	# that is a	ग्रजस्य	मृत्युरात भ्रह्मायुरात
कार सन्ति कराइ सन्ति	कर समा कराई सभी	केंद्र संगी कराइ, अधी	क्षा लाग ल्यांस्त्र मार्थ	gjibe Missern: , ubo a de	gin keeren , in been beter beter	this thirten ben bien	करा ६ मही ब्यामान भी करा ६ वही थामानु भन्नी



िरिक्तिकानात्व । १७५ | प्रतीय दीवमा कीम हा ्रिक्षा भाग प्रमुख्य १६ । १६। १५ छिला ५९ । ५६ । ५५ । र्राया । इप १ कर । इस १ हर । एक १ पूर्व । प्रमा अर्थ । १२०१ एक १ देव १ देव १ देव १ देव १ देव १ पर १ उप १ प्र

१ । ८१ । इस प्रकार कह हा हो हो हो दे करें है और प्रक सुनी र्दिदं निप्त विक्तितानुस्तार है। Cleibie: e. E. Siciliei fficiel क्षेत्र रहे । १७ १६८। १६ १०१०१ २६ १० १०१ ६५। 134 1010151 53 135 135 100 100 100 167 131 teletin to the said in teatologi. રિમિલ્: પ્રમુપ્રફારા રામધા (પ્રાપ્યાલક રહા ફેર)

10152152152155 0.561610101101011 े । ६५ । ६६ । ६ ० । ६६ । ०० है वर्ष ४५ खुटी सेरियें हैं और मका पिवर्ण दन्त्र से देली-

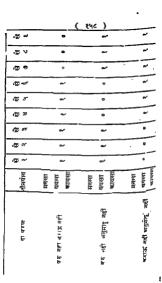


इस प्रकार २२ वें अङ्कका विवर्ण पूर्ण हुआ। ६-अङ्क एक २३ का दो करण २ योग से कहना चाहिए। करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वयसा कायसा १. करुं नहीं अनुमोटूं नहीं मनसा वयसा कायसा २, कराऊं नहीं अनुमोटूं

नहीं मनसा वयसा कायसा ३
२३ वें अङ्क के ३ भाक्ते हैं सेरीयें नव [६]
हैं। सर्व सेरीयें २७ हैं एक भाक्ते की सेरीयें
६ हैं उन में ६ रुकी हैं ३ खुली हैं, सर्व भाक्तें
की १= सेरीयें रुकी हैं. ६ खुली हैं।
एकी हुई सेरीयें १= यह हैं१ | २ | ३ | ४ | ४ | ६ | १० | ११ | १२ |

१।२।३।४।५।६।१०।११।१२। १६।१७।१=।२२।२३।२४।२५।२६। २७।एवं१=॥ ऑग खुर्ला सेंगियं ह यह हैं-०।०। ८।०।०।०। ७।=।ह। ०।०।०।१३।१४।१५।०।०।

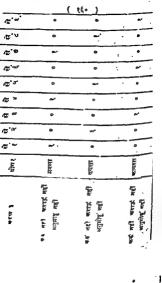
१६।२०। २६।०।०।०।०।०।०। एवं ६ सेरिये खली हैं। देखा यन्त्रमें पण प्रकारमें।



इस प्रकार २३ वें श्लंक का विवया पूर्ण हुआ। ७-- घङ एक ३१ का भाहें-३। तीन करण एक योग से कहना। करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोर् नहीं मनसा १, करूं नहीं कराऊ नहीं अनुमोर नहीं वयसा २. करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोर्ं नहीं कायसा ३। एवं ३॥ २१ वें अद्ध के ३ भद्ग हैं सर्व सेरीयें २७ हैं एक भह की ६ सेरीयें हैं उन्हों में रुकी हुई सेरी २ हैं. खुली सेरीयें ६ हैं. सर्व भक्तों की रुकी

हुई सेरीयें ६ हैं। खुली सरीयें १= हैं। अपितु रुकी हुई सेरीचें नव ध यह हैं। यथा-१।४।७।११।१४।१७।२१ ।२४। २७। एवं १ ॥ खुर्ना संरी १८ यह हैं

०।२।३।०।५।६।०।=।६।१०। १२।१२।०।१५।१६।०।१≡।१६। २०।०।२२।२३।८/०२५ ।२६।०। एवं १८ खुनी संरोधे हैं॥ देखों यन्त्र में पूर्ण विस्तार से



सप्रकार २१ वें अङ्क का विवर्ण पूर्ण हो गया है।

— अङ्क १।३२ का भाक्ने-३। तीन करण

रो २ योग से कहना चहिए। करूं नहीं

रार यान स कहना चाहर । करू नहां मता वयसा १, महां अनुमोद्ं नहीं मनसा वयसा १, महां कराऊं नहीं अनुमोद्ं नहीं मनसा क्षयसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोद्ं नहीं स्वसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोद्ं नहीं स्वसा ३। एवं ३॥

३२ वे अङ्क के तीन भड़ हैं सेरीयें २७ हैं यपितु एक भांगेकी सेरीयें नव हैं उनमें ६ क्की हुई हैं सर्व भड़ों की १८ क्की है ६ खुली हैं यतः क्की हुई १८ सेरीयें यह हैं—

१।२।४।५।७।≔।१०।१२।१२। १५।१६।१⊏।२०।२१ २३।२४।२६। २७। एवं१⊏॥ बुक्तां सेर्गयः यह हैं-

००। २। ००। ६। ००। ६। ०। ११। ००। १४। ०। १५। ०। ११।०० २२। ००। २४। ००। यह नव सरीय खुली हैं। इसका यस्त्र में किसार संदेखा।



मेटियाज्ञेन-प्रत्यालय] १६० [पर्धाप बोलका बोकड़ा

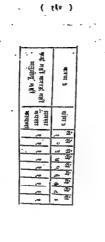
इस प्रकार ३२ वें छाडू का विवर्ण पूर्ण हुआ। ६--- घड्ड ३३ का भट्ग-१। तीन करण नीन योग से कहना चाहिए। करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदं नहीं मनसा वयसा कायसा।

एवं १॥ ३३ वें अङ्क का भङ्ग एक ही है सेरीये व

हैं: सब ही रुकी हुई हैं: खुली कोइ भी नहीं है. जैसे कि--

१।२।३।४।५।६।८।=।६। इन्हीं में ख़ली सेरी कोई भी नहीं है

देखो यन्त्र में











							t	_	
	nth	HIM	214	रित्रम	पयाय	lalts .	-	J. Commission	· / r
चारित्रय	िन्यंश	नियेश द्यारिश्रय श्रम		प्रकृता स्त	म् स्टब्स्	आड	नपुरम	l ke	
मन्द्रती निर्मे _। श विशेशित्र्य	नर्यसभी	मनदी निर्मे निर्मेशको निर्मेश यनेसेस्सि १३३ सिर्म	18.	मध्योपी		114	Top a pre of Fine subsidian a	1 .	
and .	पद्मी निगीय _{नि} गीन पेरीन्त्रिय	वशस्त्रिय		\$, E	E	तीवीक		(१६६)
बन्तर्थ। एकुच्चिम् तनुष	मनुव	\$		*	ज्यार पुरी कन्दी गाही (काहरी)	दम्प्रत भी उभ्यान मी मी क्षाम मेरे	· · · · ·	3 4, ~	1.
गिक्षी (गागंत्र) मनुष्य	मजैवा	मनुष्य पश्च निस्य त्रम	त्रस	重	E	संस	मोनींगी गुरुत, द्वी, नव् वह	, नम् मह	

यच्यीस बोळका चोकड़ा] १७० त्र्यथ पच्चीस क्रियाका नाम तथा भावार्थ । १ काइया कियाका २ भेदं-१ अणुवस्य काऱ्य पापसे नहीं निवर्तने से जागे। २ हुप काइया-इन्द्रियोंके इष्ट भनिष्ट विषय नहीं नियर्तने से लागे। या अजनन

प्रवनीये घणा कालसे काया वीसगयारि पाछत्ता ग्ह्या हुवा कायाका पुहस्त उम किया लागे।

२ श्रद्धिगरणीया (श्रधिकरण्) क्रियाका भेद-१ मंजाजनाहिगरिएयान्यह मू हथियार कमि कृदाना इत्यादि संपर्ह[ा]

उनकी क्रिया नागे । २ निथ्वत्तमाहि ^र गिया-शस्त्र हथियार बगेरा नया बनावे ह

मरम्मत करावे उनकी किया सागे।

 पार्टामया क्रियाका दा भेद -• तात्र पार्शमया-तीत्रपर इं.प. कर्म





भाया बत्तियाका दो भेद--

१ आय भाव वंकणया-अपनी , आत्माके वास्ते ठगाई करे व अपनी आत्मा का **कोटा भाव छिपावे खोटा आचरण आचारे** खोटा लेख लिखे ।

रसाव वंकणया-परायाके वास्ते ठगाई करे, करावे, खोटा आचरण करे तथा करावे, खोटा खेख जिखे तथा जिखाने। मिथ्या दुंसण वत्तियाका दो भेद-

१ उणा इरित मिथ्याटंसण-श्रोद्धा, श्रिधका सर्हे तथा पुरुषे उसकी किया लागे।

२ तवाइरित मिध्यादंसण-विपरीत सर्दहे तथा परुपे उसकी किया लागे। दिद्विया कियाका दो भेद-

१ जीव दिट्टिया-घोड़ा, हाधा, वगेरहने देख-कर नरावे या विसराव तो क्रिया लागे।

२ अजीव दिट्टिया-चित्रामादि आभूपण देख-



मंतो विश्ववाह्य । १८५ [पद्मीत शेटका धोकड़ मंतो विश्ववाह्या-जीव अजीव का समुदाय इक्टा करना उसकी किया लागे। अपना भेला पदार्थ देखकर लोगों आगे प्रशंसा

करे याने पोमावतो फिरे तथा अपनी वस्तुने दुसरो सगवे तो राजी हुवे तथा विसराव तो विगजो हुवे तथा नाटक, मेला, तमासा, मनुष्यको फांसी 'देता (चोर भारता) देखे उसकी क्रिया लागे। १५ संहित्यिया क्रियाका दो भेद—

कड़ कर हुए। (मारे) उसकी किया लागे।

 श्रजीव साहित्यया—तलवार, यन्दुक, धादि पकड़ कर हुएँ (मारे) उनकी किया मागे।
 श्रिकेमित्यया किया उनका दो भेद
 श्रिकेमित्यया कीव में कीव मांवनेम जैस वनस्पतिमें (मा) अरे प्रथा गृह चला



६ अणाभोग वत्तियाका दो भेद-

१ अणाउत्त आयणता-असीवधान पर्ण से बलादिक ने प्रहण करें वि पहिरे उसकी किया लागे।

२ अर्णाउत्तपम्मज्ञर्णता-उपयोग विनां पा-त्रादिक पुँजे उसकी कियो लागे। उपयोग विना शुन्य पर्णे तथा अज्ञानतासे लागे। २० अर्णवकेल विनियाका दो भेदे—

१ श्रायशरीरश्रणवकं खबत्तियां-खुँदके श्र-गिरसे पाप लागे वैसा,काम करे श्रपपात करे उसकी किया लागे।

२ पर श्रारेर शियांवंकेंखंबत्तियों-टूंसेंग्रंकी श्रं-रीरसे पाप लागे वेंसा कम करे परपान करें उसकी किया लागे। इहलीक व परलोक्से विरुद्ध काम करें। इह लोकर्मे निंदा हुवे परलोक विगाड़े बना काम करें। . .

तामदाणीसे खींच्या उन कुमी का भेद च्यार तरह से करे-१ प्रकृति पुरो,-२ स्थिति पर्गे, ३ अनुभाग पर्गे, ४ प्रदेश पर्गे, हप्टान्त जैसे-मेदाको 'ञालोय कर लोधो वणायो जब तो प्रयोग किया जागे और पीई जो-धाने लेकर पेठो. निमकी. खाजा इत्यादिक नाना प्रकार पर्वे बर्णाया ज्व सामुदाणा .. किया लागे । ... (पहेलेके समय भेद करे तब अनुन्तर किया, ू दूजे समय तीज समय भेद करे तब पर्पर

्रम् किया) । प्राप्त के विश्वास ने पहेले समय में लागे दजे समय वेदे तीजे समय निभरे। ७

रित वद्यांस क्षिया समाप्तम्

 ⁽नोट)—इरियावहिया किया गुभ वाका वाकोस किया राभ वराम होना हो है





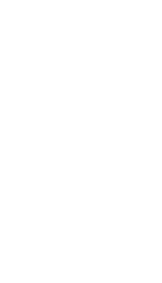














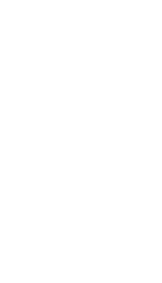




(· १२) स्त्रीने पिण शंका उपजे कुमील बचवानी राम है ते मणी गुरस्वरे चरे साधु बेसवो दृश्यको वरजे । विज जरा परामध्यो हुवे तपने रोगी प तीनो ने बेसबी कल्पे । साझ सूत्र दशर्वेकाति इ सप्त यन छहा नाथा ५७,५८,५१,६० में छै' इत्यादि सुत्रमें बली हे

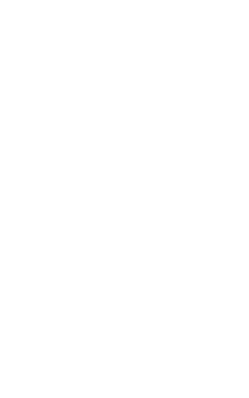
साधुने गुहस्वरा घरने विपे वेसको वरज्यो। तेमणी साध् साध्यीने मृहस्थरे घरने विये बसने धर्मकथा बार्चा धरवा तर बोल शिकायका नहीं । बच्चाक प्रमुख देना नहीं । विस्तार है मही हुंडीमें छै ते जोय छेणो 🔋 इति १३ बील 😘 अथ १४ वोल :--साधुने गृहस्वरे घर मध्ये जायने माळीया प्रमुखरे विये कार्य मदी थेई उतरे हैं तहनी उत्तर-साधुने औ रहेती हुये है वर्गार्थ रहेथो म : कस्ये । साधूने पुरुष रहेता हुये ते उपाध्य रहेव कल्पे। साध्यति पुरुष रहेता हुवे ते उपाध्य रहेवी न हले माध्यीने स्त्री रहती हुवे ने उपाध्य रहेवो करने। साम धून पेर् करा उद्देशे पहेले'। तथा लाधूने गृहस्थरा घरने मध्य मा करेंने ग्हेंगा न कन्ये। न्या साध्यीने गृहस्थना घरने म^{ास} ा मार्ग नहीं रहवा करें। साथ सूत्र चेत्रकरव उद्देशे पहेंसे ! करा। छे । ते भणी साधुने गृहस्थरा घर मध्ये सुगाया रहे हुये ने घरमें मालियादिक में बहेजो नहीं। वेर्द घरमें पिण प **छे, रहवारी धाए करेछे दोष ध्रद्ध नहीं। वेर्ड मालिया प्रमुख** रदेये पिक्र छं रहेवारी थाप विक करेंग्रे ॥ इति 📳 बीत 🛚 🕻







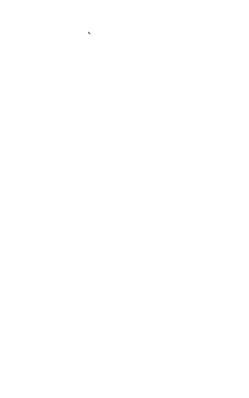












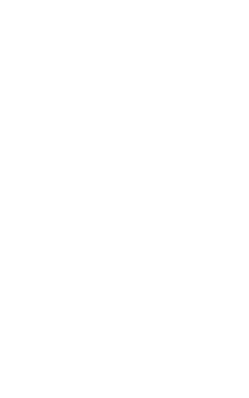








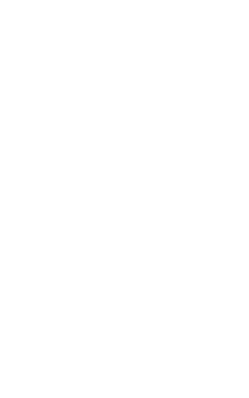
















गाम नगरमें घणी हुये तेहनो मजयातर टारुणोनहीं। 'तेहने हो तो गोवरो किम जाये वाणा कोस छे निष्मुहुं तेहनो घरमायतर किम गायोजे। वेई बाजा तो सुलावण हुये नेहनी होये, सज्वतर घणी परगाम घणा कोल छै ते गाम प्रमुख जाउँ रहे छै तेहनो बा सज्यातर घाये छैं। साधु रहे से गाम नगरमें सरगतर हरी किम कहिये। जाता होयं ते विचार जोयो हु दि ५० शील।

अथ ४१ वोल.—

दाधमें लाठी प्रमुख तथा मोधा प्रजगीरी डांडी बादि अ दीठ एकसु' मधिक राखनी नहीं। तथा रङ्ग स्याही डोरा म्सु-धरो घणो सञ्ची करणी वहीं, कई करे छै तेहनी उत्तर-ध्या-हारसूत्र उद्देशे आठमें। साठ वरसरा धियरने इग्यारे उगा-रण ओर साधुसु' अधिक रासना कहाां। तिणमें हाधने छड़ो रा-खनी कही बुद्रारी अपेक्षा, रोगी, गिलामी, गोडा प्रमुख दुःखे जर् मोर साधु पिण दाधमें छड़ी राखनी तथा प्रमाण गिणतीष्ठ उपथि अधिक राखे तो चौमासी इंड अधे, साल सूत्र-निर्सीय उद्देशे १६ में। अध फेद्छडी भोचा प्रमुखरी डांडी ग्रणी सारी भधिकी राख मेले 🗈 तथा स्थाही, हींगलु, हरताल प्रमुख रा तथा डोरा सून मेंण प्रमुख दश पद्मारह शरम् अधिक रास्ती दीसं हो । काई पूछी जद कहें ए खालसेका है तथा राजरा छे. रम क्हेना हिसं छ । साजुने पछेवडी प्रमुख सीवाने डीरा, ^{हिस} वानं स्यादी प्रमुख, पात्रा रंगवानं होगलु प्रमुख राखणा ते रीत











(४०) हार पापे॥१॥आगम व्यवहार न हुवे तो सूत्र व्यवहार मापे॥॥ सूत्र व्यवहार न हुवे तो आजा व्यवहार मापे॥ १॥ आजा व्यवहार हार न हुवे तो भारणा व्यवहार थापे॥ ४॥ भारणा व्यवहार न हुवे तो केहारेड चळ्यो आवे ते जीत व्यवहार यापे॥४॥

स पांच ध्यवहार अवसांकरो यक्तें अञ्चण निर्धार्थ आक्रातो मा-राप्तक हुये साख भूच-ध्यवहार उद्देशे दसमें। हिवडा आग्न-ध्यवहार तो नहीं छे नुच व्यवहार प्रवर्ष छे ते अगी सूत्रमें मा-धूने कार्य करवाण हाएं है ते कार्यकरधा। विचार नुमा कार्य करवा धरस्या ते करणा नहीं। होर्स स्त्रूमें साजूने कार्य करवा परमा ते करवाली थाय करें छे, जोन व्यवहार से नाम होने छे पिन सूत्रमें थरज्यों तेहनो जीत ध्यवहार धार्याजे नहीं। होई वर्षपराई

संवती आये पीछी स्वसं जाव जावे. य योल लाधुने सेवर्ग नहीं मा जाये तो तो वोल छाड़ देखों। दिवा मनदी देक रावजी नदी। जीत बयबहार तो आप आपरा मतमें सामलारे छैं। वर्ष नदी। जीत बयबहार तो आप आपरा मतमें सामलारे छैं। वितायकने देवे दिवा सामे नहीं त्यारी साधु-पक्षों किम जाये। दिवा सूच पर-क्या ते योल जीत स्ववहार में सापीजे नहीं ॥ इति ४६ बोल।! मञ्जूक वोलनी सार, हुंबो कीभी चूंचहां, सृचि चतु-भूत उदार, आगम साम देहे करी। १ ॥ अजाया प्रथमें कोय दिवद बयन गायों हुंबे।

मिच्छमि दुङ्ड माथ, अनत सिद्धारी सालसुं ॥ २ ॥ ॥ इति मध्यम्ब बोलसा हडी समासम् ॥

